— or my [illegible]

the [illegible] over the lone body of a seaman

for the 1st time, when two heart meet, love leaves it stronghold

(body) The weaker of the two (out man & love) u

man is singled out to suffer (lose) what it once had

u, love, you (who) feel sorry for the short life which the

worldly things possess, why you choose the weakest one

(man) for your cradle home & bier, from the very

start of the life to its end

the possessions of thy prey (man) will rock ([illegible])

thee as the birds of the sky are rocked by the wind Sweet

reason will laugh at your folly as the rise of the

bright sun on a cold day [illegible] to

seems to laugh at the cold

Every beam of thy house (body) will break thy

Thy big strong home will leave thee naked to be laughed at

by the people as an eagle is left without

shelter in the autumn when leaves fall & cold winter comes in

1

श्रीगणेशाय नमः।

अथ

रसमोदक हजारा.

प्रथमोल्लासः १.

दोहा।

मन भज तनय महेशको, नेक न रहै कलेश।
ध्यान करे फल होत है, सुक्ख बुद्धिबल वेश॥१॥
शिवसुत षोडश नामके, बलप्रताप सुखपाइ।
रसमोदक शुभ ग्रंथको, विरच्यो सरस बनाइ॥२॥

कवित्त।

हरन सुदुःखहूके दलन दरिद्रहूके,
करन जु सुक्खहूके देनहारे ज्ञानके।
पापनके जेते जे समूह भवसागरके,
तेते सब छूटिजात नेक धरे ध्यानके॥

भनत स्कंद ऋद्धि सिद्धि अरु संपदाहूके,
विनश्रम पावहीसो कीन्हें गुणगानके ।
शत्रुदल गंजन सु भंजन कलेशहूके,
ऐसे पदपद्म शिव करुणानिधानके ॥ ३ ॥

दोहा।

हरत दुःख दारिद्रको, तुरत गरीबनिवाज ।
अष्टसिद्धि नवनिद्धिवश, होहि सकलशुभकाज ४

कवित्त।

भूषण अनेक साजे सिंहपै सवार राजै,
शोभा यो अनूप छाजै अर्द्धचंद्र भालिका ।
दुष्टमुखभंजनी महेशमनरंजनी है,
श्यामतनुमंजनी सुजनप्रतिपालिका ॥
भनत स्कंद धरैध्यान सो विशाल काये,
सोहै मुडमालिका करै सो जमजालिका ।
हरत कलेश सुख भरत हमेश वेश,
करत सुबुद्धि स्वच्छ नित्य प्रतिपालिका॥५॥

दोहा।

जगदंबा अब कृपाकरु, पूत निकंबा जान ।
हे अंबा तेरी शरण, दास आपनो मान ॥ ६ ॥

सोरठा।

शिवसुत प्रथम गणेश, द्विती शिवाशिव भज चरण।
तृतिय सुकवि उपदेश, वंदि रचौं यह ग्रंथको॥७॥
कृपा शारदा कीन, हिये शारदा अति बढ़ी ।
जिमि जल चाहत मीन, सुमति शारदाको चह्यो ८

दोहा।

प्रथम कहत शृंगार रस, नव रसमें कविराव ।
होत नायका नायकहि, आलंबन रस भाव ॥ ९ ॥
ताते प्रथमहि नायिका, नायक बहुरि बनाय।
भाव हाव जे तरुणके, ते पीछे कहगाय॥ १० ॥
उर उपजत लखि जाहिको, रस शृंगारको भाव ।
ताहीको कहि नायिका, वर्णत जे कविराव ॥११॥

नायिकाको उदाहरण–कवित्त।

कीरति किशोरी छबि वरणी न जात मोपै,
कोटि मेनकाकी गति होत मतवारे है।
अंग अंग शोभितही लोभित निरखि होत,
प्रगट प्रदीप्तमान उपमा न टारे हैं॥
भनै असकद रच्यो वदन विरंचि जबै,
आभा जो न रही तासु करन मंझारे है।
दीन्ह्यों जो निचोय धोय एकठौर चंद्र भयो,
छिरकेते बूंद भये तौन नभतारे है॥ १२॥

दोहा।

भौर मयूर चकोर शुक, करकच आनन बिब।
लखि अनद हिय सरसते,कंज मेघ शशि बिंब १३
तनिभाँति सो वरणिये, प्रथमहि सुकिया नारि।
परकीया पुनि दूसरी,गणिका तृतिय निहारि १४

सुकियालक्षण–दोहा।

पूरण पतिकी प्रीति मन, दिन दिन अति सरसाहि।

लज्जा शील पतिव्रता, सुकिया कहिये ताहि १५॥

यथा–कवित्त ।

कंचन वरण नैन खंजन अधरबिंब,
पंकज कपोल कंठ राजतकपोत है ।
सास दिवरानी औ जिठानी मनमानी वेश,
सुनिमृदुवानी झरै सुमन सुगोत है ॥
भनत स्कंद पिय आनँद अनंद भरी,
सौत सतसंग रंग रंगन उदोत है ।
ऊनीहू न होति होति दूनी द्युति आननकी,
सहज सुभाय बढ़ै जगमग जोत है ॥ १६ ॥

दोहा ।

सास सराहत रीतिकुल, ननँद सराहत चैन ।
पीय सराहत प्रीति मन, सौत सराहत वैन ॥१७॥
तीनभाँति सुकिया कही, मुग्धा मध्या जान ।
पुनि प्रौढ़ा परवीन कहि, सकल केलि सुखदान१८

मुग्धालक्षण–दोहा।

जाके तनुमे होत है, यौवन उमँग नवीन।
ताको मुग्धा कहत है, जे कवि रसिक प्रवीन १९

यथा–कवित्त।

होनलागी वंदन विलोकै द्युति चंद मंद,
मृदु मुसक्यानको कपोलनपै ढार है।
सुखद सुबैन कोकिलान मान खंडनको,
नैन नये खंजनकी उपमा निसार है॥
भनत स्कंद कछू अंकुर उरोजनसो,
अंचल उचाइ दिन दिन अनुसारहै।
देखतही अधिक अनंद नंदनंदनके,
सौतनके शाल बाल अति सुकुमार है॥ २०॥

दोहा।

वार दियो मन लालने, लखि नवरूप रसाल।
दिनप्रति दूनी द्युति बढै, सौतिनके हियशाल२१॥

पुनः कवित्त ।

सुख सरसातदेखे कंचन वरणगात,
लाल मन मोहिरही खेलत अलीनमे ।
मृदु मुसक्यानकी कपोलनमें गाड देखि,
मन गड़जात कौन ऐंचत बलीनमें ॥
भनत स्कंद स्वच्छ आनन विमल बाल,
पेखे सम चंद्र प्रभा रहत मलीनमें ।
गोरे गोरे गातन उरोज छबि दूनी बढै,
उपमा न पाई जात कमलकलीनमें ॥ २२ ॥

दोहा ।

ता मुग्धाके कहतहै, कवि द्वै भेद विचारि ।
प्रथम कही अज्ञात पुनि, ज्ञात यौवनानारि ॥२३॥

अज्ञात लक्षण-दोहा ।

निज तरुणाई को जिहै, आगम जानि न जाइ ।
ताहि कहत अज्ञातहै, जे सुजान कविराइ॥२४॥

यथा-कवित्त ।

रहस रच्यो वृंदावन गोपी ग्वाल आये वन,

राधिकारमणसह राधिका सुहायेहैं ।
मंज मंज कुंजनमें जाइछिपे चारों ओर,
देखे जो जहाँई तहाँ कौतुक दिखाये है ॥
भनत स्कंद भई तृषावंत प्यारी अति,
नीर तट जाइ दुवे कर पर शाये है ॥
अंजलि भरत छोड अंजलि भरत देख,
पीवत न मीन मृग खंजन रमाये हैं ॥ २८ ॥

दोहा ।

रहसकेलि श्रम तृषावर, यमुनातटपै जाइ ।
अंजलि भरिछोडत भरत,पियत न मन अकुलाइ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

खेलन नवेली संग लाग गई कुंजनमें,
लखिकैनँदलाल ख्याल दीन्होंहै मचाइकै ।
दौरि दुरि हेली सब सघन लतान बीच,
आप चले ढूँढ़नको प्रेम सरसाइकै ॥
भनत स्कंद मिस छुवन सुधाइ गहि,

लेत भरि अंक नेह नूतन लगाइके ।
रसवश चातुरी न जानै कछु बाल लाल,
अधिक अनंद होत मन सुखपाइके ॥२७॥

दोहा ।

छुवत छिपावत जोरसों, मोहि लगावत अंग
ऐसो खेल न खेलिहौं, लाल तिहारे संग ॥ २८॥

बरवै ।

अब नहिं कुंजन जैहौ पियके संग।
आइ अचानक मोसन मिलवत अंग ॥ २९ ॥

दोहा ।

करिमंजन ठाढ़ी कहै, कालिंदीके तीर ।
मो कटिभार सु आज यह, सह्यो परत नहिं वीर ३०

ज्ञातलक्षण–दोहा ।

चढ़त जासुके तरुणई, जानत जो वरनार ।
ज्ञातयौवना कहतहै, विमलबुद्धि आगार ॥ ३१ ॥

यथा-कवित्त ।

लोचन विमल नवीन दलपंकजसे,
होनलागे सरस रसीले सुखचैनसों ।
गोल गोल गहव गुलाबी है कपोलदुवो,
बोल अति रसकी निसासी लगे देनेसों ॥
भनत अस्कंद जोर यौवन जनायो ताहि,
वरषन लाग्यो अति प्रेमसुधा वैनसो ।
गजगति चलत नवेली निज छाँह देखि,
भेट होत मनमें अचानकही मैनसों ॥ ३२ ॥

दोहा ।

चलत नवेली छाँह लखि, सखियन डीठि बचाइ ।
मनमतंग जबते कियो, मैन महावत आइ ॥ ३३ ॥

पुनःकवित्त ।

रूपगुण सरस नवेली अलवेली सुन,
नेकहूँ न मानै वलि सुवश हुलासमें ।

द्वारपर आवै छिन छिनपै कहोंलौ कहौ,
सीखत न सीख नये गुणन विकाशमें ॥
भनत स्कंद देखि अधिक ढिठाई यह,
मोहि कहिआई तोहि लगत निराशमे ॥
दिन दश बीशहीमें छूटि लरिकाई गई,
तिमिर नशात जैसे रविकेप्रकाशमें ॥३४॥

दोहा।

रहत अकेली सुमनवश, छाँइ विलोकत बाल।
ताछबि देखै चोपसों, पगे रहत नँदलाल ॥३५॥

पुनः यथा–सवैया।

नित दूनी बढ़ै द्युति आननकी,औ विचार करै रतिकी छतियाँ। कछु कामकलानके कौतुकसों, रसके चसकेकी सुनै बतियाँ ॥ असकंद प्रतीति न प्रीतमकी, सखियानके संगरहै रतियाँ । कर कंजसों आरसी लै मिसकै, मन मौजसो बैठिलखै छतियां ॥ ३६ ॥

दोहा ।

नवल बाल छवि नवल सुख,नवल काम छबिचोप ।
नवल तरुणई तनु चढ़त, लखत आलसी ओप३७

पुनःयथा-सवैया ।

दृग अंजन दे रुचि सों रचि अंग, उमंग मनोज कछू दरशात । सुनै मृदुवैन अलीगणसे, मनसो करमोद किये सकुचात ॥ भनै असकंद उरोजन कंज, कलीसम चारु कहे सुसकात । लिये कर आरसी आनन ओप, शशी दिन रैन विलोकत जात ॥ ३८ ॥

दोहा ।

करि मंजन सौरभ सहित, लहि केसरमुखचंद ।
बैठ आदरस भवन रुचि, तनु द्युति निरखि अनंद॥

पुनर्यथा-सवैया ।

अंग अंग उदित अनूप अधिकान लागे, पागे

प्रेम बैन सुधा बुंदन झरतहै । उरज उँचाइनपै चाह चित चौप चारु, कचुकी कसत हिय शंकहि करत है ॥ भनत स्कद रसप्रीतिहि सयान सीख, प्रगट दुराउ कामरीति न डरतहै।बैठि निज मंदिर विलोकि मुख कंज दीठि, सखिन बचाइ मन आनँद भरतहै ॥ ४० ॥

दोहा ।

अंजन दै खंजन निरखि, उरज कोक शिशुदेष ।
करदल पंकज परसकरि, सखिन छिपाइ निमेष॥

नवोढालक्षण–दोहा ।

लाज धरै उरमें डरै, रति नचहै सुकुमारि ।
ता मुग्धाको कहत है, सुकवि नवोढा नारि॥४२॥

सवैया ।

शुभ नूतन रूप विशाल बन्यो, लखिकै मुख चंद मलीन परै। मृग खंजन देखत नैनन

को, सुनि बैनन कोकिल धीर धरै ॥ असकंद भनै निशि होत जबै, तबही अतिही उर बीच डरै । ननदीन सखीनके संग परै, पियके हियकी न प्रतीति करै ॥ ४३ ॥

दोहा ।

नेह सखिनके सगमे, अधिक लगावति बाल ।
नेक प्रतीति न लालकी, सौत हियेमें शाल॥४४॥

पुनः सवैया ।

कर मंजन भौनमें ठाढ़ी भई, नवबाल विशाल सुछैल छरी । सजि अबर भूषण अंग सबै, छतिया अँगिया बिच एक परी ॥ असकंद भनै भयो आइबो त्यों, पटओट छिपी डर लाज भरी । मनौ पंकजकी लखिकै पियको, मुखचंद कलीसी लपेटधरी ॥ ४५ ॥

दोहा ।

सुनि आगम पियको तिया, डरी खरी लजिआइ

बाह छुवत निज सखिनके, लगी धाइ उर धाइ४६

पुनर्यथा--कवित्त ।

बाल नव सरस विशाल छवि छाई अति,
श्याम हित चाहिकै लगाई यों सरोदनी ।
बातन लगाइ चली कुंजन लिवाइ लियो,
बीच मग जाइ किये सुरत विनोदनी ॥
भनत स्कंद देख मन वश ताके भयो,
भुजभर लीन्हीं जान मनकी प्रमोदनी ।
अंक इमि त्रासमान ज्यों लखि प्रकाशमान,
भासकर आसमान रहत कुमोदनी ॥ ४७ ॥

दोहा ।

लखी लाल सूने भवन, गही अचानक आइ ।
झझक छुटी कपत परी, धरक न हिये समाइ ४८

सवैया ।

निकुंजमें खेलनको गई दौर, हँसै विहरै वही केलितरंग । तहाँ लखि कोकिल कीर कपोत, रहे

थकि और अनेक विहंग । भनै असकंद समौ लहि श्याम, दुरे निकरे कर प्रेम उमंग। विलोकतही डरलाजभरी, सुकँपी छिपी जाइ सखीनके संग ॥ ४९ ॥

दोहा।

खेलत सँग सखियानके,अति मन प्रफुलित गात ।
लखत लाल उर बालडर, धरकन हिये समात५०

विश्रब्धनवोढा लक्षण ।

कछू कछू उरमे धरै, प्रीतम प्रीति प्रतीति ।
डरै नवोढा रतिविषे, सो विश्रब्धकी रीति ॥५१॥

यथा--कवित्त ।

चंपक वरण रूप रतिकी हरन प्यारी,
वारी मत देख कह्यो कछुना सरोदनी ।
कंचन महल जड़ी मन अनमोल ताते,
प्रीतम बुलायो गई रतिकी विनोदनी ॥

भनत स्कंद अति छबि छकि आतुरसों,
कर गहि लीन्ह्यो चाहि मनकी प्रमोदनी ।
देखि मुख लाजभरी अति सकुचात ऐसे,
लखिके लजात जैसे रविको कुमोदनी ॥ ९२ ॥

दोहा ।

ज्यों मर्कट रवि अंत लखि, रहत लता सों जाय ।
त्यों ब्रज बाल विलोकिनिशि,कछुमनमाहि सकाय

पुनर्यथा–कवित्त ।

नव ब्रजनारि रूप रति अनुहार भली,
नितप्रति आवे करि बतियाँ सुनाय जाय ।
नैन सैन करिके मनोज भरी चातुरी सों,
रसहूको चाहै डर वसहू भगाय जाय ॥
भनत स्कंद उठी छतियाँ नुकीली तासो,
चोप चसकीली चारु चौगुणी चढ़ाय जाय ।
पिय रति चाहै तब अति सकुचाय रहे,
छाँह परे जैसे लाजवतिहू लजाय जाय ॥९४॥

दोहा ।

चख जोरत पिय चोपसो, लाज करति सुकुमार ।
ज्यों कुमोदनी रवि लखै, करै न तनु विस्तार ९९

पुनर्यथा--कवित्त ।

मृदुल कपोल लागे विहसन मंद मंद,
आनँदकी कंद शोभा सुरत समीरहै ।
अंबुज अमल दल विमल सुहाये नैन,
सरस सुवैन जाके वसत अमीरहै ॥
भनतस्कंदशुभ आनन छटाकी छूट,
निपट कलानिधिकी कौमुदी कमीरहै ।
मैन हिय वास बढ़ी रतिकी हुलास ताते,
प्रीतमके आस पास रमक रमीरहै ॥ ९६ ॥

दोहा ।

आवै नितप्रति प्रेमसों, डरवशजाय भगाय ।
पिय रति चाहै प्रीतिसों, तबही अति सकुचाय९७॥

यथा–सवैया ।

रहै आठहु याम सुकाम यही, निजधाम सखीनके संगपरै । बतियाँ जु कहै कोउ आवनकी, छतियाँ लखि डीठि बचाइ डरै ॥ असकंद ह्वैजात जु भेट कहूँ, अतिप्रेम बढ़ा हिय शंक करै । पिय चाहत प्यारी न अंक भरै, घनके वश दामिनि ज्यों न परै ॥ ५८ ॥

दोहा ।

चसकीली वह चोपसों, रसहित आवत धाय ।
परवश परत न जानकै, डरवश जातभगाय॥५९॥

यथा–सवैया ।

साहसकै रसके वशमें गई, देखन आनन पीकर साजहि । लाल निहाल भये अवलोकि, लई भरि अंक विशाल विराजहि ॥ त्यो असकंदभनै करते छुटिजाइ छिपी धरिकै उर लाजहि । भामिनी

ढूँढ़े न पावत है हरि, चाँदनीमें मिलिकै दुर भाजहि ॥ ६० ॥

दोहा ।

रस चाहति हिय डरति कछु, रहत सखिनकेसंग ।
होत अचानक भेंट जो, नेक न छ्वावत अंग ॥६१॥

मध्यालक्षण–दोहा ।

लाज काम सम जासुके, मनमें दोई होइ ।
मध्या तासों कहत है, कवि कोविद सबकोइ ॥६२॥

यथा–कवित्त ।

आई सजि अंगन उमंग केलि मन्दिरलौं,
सुंदर सुजान लखि मोहन निहारिवो ।
ताही समै सहित सकोचवश लोचनके,
समुद सरोजसे निचोहै छवि धारिवो ॥
भनत अस्कंद परयंकपै पियारो तहाँ,
अंकभरि लेत ह्वै निशंक सुखसारिवो ।

सरस सुधासे प्रेम मधुर विलासैवैन,
वार वार मंजुमुख नाहीको उचारिवो ॥ ६३ ॥

दोहा ।

सुघर सुघर सुघरी घरी, धरी न धरकहि मैन ।
भरी लाज मन दल कमल, पियके देखत नैन६४

यथा-सवैया ।

परयंकपै पौढे दुहूं सजि अंग, प्रसंग अनंग हियेमें चहै । तजि नूपुरदूपुर पाँइनके चित चाइन चाप प्रमोदलहै ॥ असकंद भनै पिय चाहत अंक, तहीं अनखाइ सकोच सहै । मन मोहन सुंदर केलि करै, छतियाँके लगै बतियाँ न कहै ॥ ६५ ॥

दोहा ।

छवि लखि मूरति श्याम वह, आनँदउरनसमात ।
सखि भरि आवत प्रेम उर, कहत वनै नहि बात६६

पुनः–दोहा ।

जो सोवत पिय मुखहि की, होत विलोकन हान ।
जो न नींदवश होइतौ, गहन चहत पिय पान६७

प्रौढा लक्षण ।

पतिहीके रसलीन मन, केलि कलनकी खान ।
प्रौढा तासों कहतहै, जे कवि बुद्धि निधान॥६८॥

यथा–कवित्त ।

सुरति रची यों विपरीति प्राण प्रीतमसों,
विज्जुल छटासी करै श्यामघन नीचै है ।
झुकिझुकि वारवार मिलि मुख चूमि चूमि,
अधिक अनंद भरी सुख तनु सींचै है ॥
भनत स्कंद त्यों अनंग की उमंगनमें,
धरत न धीर परी कंचुकी दरींचै है ।
वेंदा लगि मोतिनकी टूटि लर छूटि भई,
मानो मुख चंद्रकी प्रकाशित मरीचै है ॥६९॥

पुनर्दोहा ।

पगी सुरति विपरीतिमें, प्यारी हितहि लगाइ ।
पिय जब मुख चूमन चहै, तबै रहै शिरनाइ ७०॥

पुनर्यथा-सवैया ।

रंग भरे हितसो मिलिकै, परयंकपै पौढे दुवो सुख पाई । होनलगी रतिकी विपरीति, अनंगने आपनी रीति जनाई ॥ त्यों असकंद चह्यो पियने मुख चूमन लाज करी शिरनाई । आननपै लट आनपरी शुभ चंद्रने मानौ दरार-सी खाई ॥ ७१ ॥

दोहा ।

छूटिपरी मोतिन लरी, बेंदाके चहुँ ओर ।
मनौ चन्द्रमुख ने करी, प्रगट मरीचै जोर ॥७२॥

प्रौढाभेद-दोहा ।

रतिमे जाकी प्रीति अति, रतिप्रीता कहि सोइ ।
आनँद आनँद मोहिता, प्रौढा भेद सु दोइ ॥७३॥

रतिप्रीता–यथा सवैया ।

भली जो बनी वह माधुरी कुंज, घने द्रुमपुंज मवीसी मवास । पियासँग केलि कियो निशिमें मन दै रतिमें अति कीन्हें हुलास ॥ भनै असकंद परी चकचौंध उदै सुध आइ भई है निरास । लख्यो मुखचंद्र चकोरिनहै, लखि कंज प्रकाश विसारे विलास ॥ ७४ ॥

दोहा ।

पगी रही रतिरंगमें, निशिभर प्रीतम संग ।
लखे कंज मुकुलित जबै, भई पीयरे रंग ॥ ७५ ॥

पुनः–दोहा ।

लखि रवि पीरे पहुफटे, ह्वै उदास ब्रजबाल ।
कहत न कछु चुपचाप ह्वै, रही देख मुखलाल७६

आनंदात्संमोहा–कवित्त ।

प्रातसमै प्यारी उठि प्रीतमके संगते सु,
आई रतिरंग तेरी सुखको निवाहिकै ।

युग्मश्रुतिभूषण कपोलनपै दीप्तवान,
द्वैरवि फँसेहै मनौ पंकज सराहिकै ॥
भनत अस्कंद केश छुटके छबीलीके सु,
मानौ अलि पुंज पुंज छाये है सलाहिकै ।
शुभ मुख तापै तिल दौर सुधाहेत मनौ,
चूमत पिपीलिकाहै चंद्रबिंब चाहिकै ॥७७॥

दोहा ।

रति करि प्रीतम सँग उठी, आनँद वश तिय भोर।
बिहँसत सुधि न शृँगारकी, छुटे कंचुकी छोर ७८

पुनर्यथा–सवैया ।

पगी रतिरंग लगी पियसंग, अनंग उमंग जगी सब रैन । छुटे कुच कंचुकीके छराछोर, चुरी करकी करकी सुध हैन ॥ भनै असकंद खुली अलकै, विथुरे कच त्यो बलि अंजन नैन॥ हिये हुलसी मन मोद भरी सु, कहै इमि प्यारी सखीनसों बैन ॥ ७९ ॥

दोहा ।

जो सखि तुम मोहित कही, भई सही वह बात ।
मुक्तमाल विगलित लखी, आनँद उर न समात ८०

पुनर्यथा--सवैया ।

लई भरिअक निशंक निहारि, पिया परयंकपै
प्रेम वढ़ाई । रची विपरीति तची रति अंग, उमंग
मनोज करी सरसाइ । भनै असकंद अनंदमें वीर,
रही न हमै सुध प्रीतसमाइ । हरा कुच कचुकी
केशलौ छूट, छरा गहि गोद रही सकुचाइ ॥८१॥

दोहा ।

रची सुरति विपरीतिअलि,भरि भुजपियनिजअंक।
छकित छवीली छवि सरस,बैठीसमुद निशंक८२॥
मान समैमे होतहै, मध्या प्रौढा दोइ ।
धीरा वहुरि अधीर गण, धीराधीरा सोइ ॥ ८३ ॥
चतुराईके वचन कहि, कोप गोप कर सोइ ।
मध्याधीरा कहतहै, जे प्रवीन कविलोइ ॥ ८४ ॥

मध्या धीराको उदाहरण।

यथा–सवैया।

अनूप बनी बलि रूप रसाल, प्रमोद भरी मुख राजत चंद। मयूर कपोत सु कोकिल कीर, चकोर रहे छकि प्रेम अनंद॥ भनै असकंद तहाँ गये श्याम, पगे सुखकोक कलानके छंद। विलोकत नैन किये अरविंद, रही चुप लाज मनोजके फंद॥ ८५॥

दोहा।

ललित लाल लोचन निरखि,मनु पाटल द्युति ऐन।
पलन परत कल बिन लखे, यह छवि मूरति मैन॥

पुनर्यथा–सवैया।

साजि शृंगार विचार खड़ी, निज भौनमें कंचनसी लसै डाली। प्रेम समेत परी रसमें, हितसों

तहाँ आय गये वनमाली । देखतही असकंद भनै
इमि, वैन कहे दृगमें करि लाली ॥ आज छकी
छवि मै इनकी,यहमूरतिमाधुरी मोहन आली८७

दोहा ।

आये छवि छाये छटनि, पगे प्रेम बड़ भाग।
मोहित रति पति सम दृगन,वरपावत अनुराग८८

यथा–कवित्त ।

सरस रसीली सब गुणन उजागरसी,
बैठी तहाँ अमित प्रकाश उजियारीको ।
चंचरीक चारों ओर मोदित मदंध ताके,
तनुकी सुगंध मान खंडित निवारीको ।
भनत अस्कंद तहाँ आये नदनद प्यारे,
अंग अंग रूप दरशात उरधारीको ॥
विनगुणमाल लाल उरमें विशाल देखि,
पंकज समान भयो चंद्रमुख प्यारीको॥ ८९॥

बरवै ।

ललन ललित लखि लोचन यह सुखदैन ॥
मोचन विरह बिथा भल मूरत मैन ॥ ९० ॥

मध्याअधीरालक्षण-दोहा ।

कहै कठोर वचन प्रगट, पियसो कोप जनाइ ॥
मध्या कहत अधीर तिय, तासो सुकवि बनाय९१

उदाहरण-कवित्त ।

कौन हित मानिकर ह्यांलगि पधारे आइ,
कठिन कठोर चित्त काविधि इतै ढरचो ।
रूप गुणआगर अनूप रस सागर हौ,
परतिय चाहि मोहि आनंद हिये भरचो ॥
भनत स्कंद कोक कलन प्रवीन प्यारे,
वह क्यो सहैगी यो बिछोह दिनको परचो ।
मोहि समझावत रिझावत मिलैगौ कहा,
रैन जित जागे उत जाव इत का धरचो॥९२॥

दोहा।

आये वनवानिक भले, छाये छवि अनुराग।
पाये सुख तित जाहु किन,भाये रति निशि जाग९३

पुनर्यथा–सवैया।

बैठी हती निज मंदिरमे, रतिके अनुहार नये रस पागी। वैन कछू अनखाय कहे, लखिके तिय दूसरेके अनुरागी॥ आये कहा किहि कारणको, असकंद भनै तुमतो बड़भागी। रोंकै नकोऊ तुम्हे हितसों, जित रैन जगे तितहीं मत लागी॥ ९४॥

दोहा।

रैन जगे रसमें पगे, परतिय संग सुजान।
तुमसे प्रीतम पाइकै,किहिविधि कीजत मान॥९५॥

पुनः-दोहा।

तुम्हे वसी करकै वसी, भली उरवसी आन।
क्यो न मनायो मानहै,जोकर जानत मान॥९६॥

मध्याधीराधीरा लक्षण–दोहा ।

रूखे कहिके वचन कछु, रोइ सुरोप जनाइ ।
मध्याधीराधीर तिय, ताहि कहत कविराइ ॥९७॥

यथा उदाहरण–सवैया ।

गये घर श्याम विलोकत बाल, कहे इमिबैन कछूक विनिंद । भनै असकंद नयो रस चाखि, बसे कित रैन मलिदमंदिद॥ अहो धन भाग कहा कहिये सु, मिले तुमसे पति मोहि गुविद । गिरे चखसो अँसुवानके बुंद, मनो मकरंद झरै अरविंद ॥ ९८ ॥

दोहा ।

सहित स्वेद सीकर सुमुख, निरखन किय हिय चैन।
वचन रचन भरि वारि दुहुँ,कहि वलि वारिज नैन॥

पुनसवैया ।

आये घरे नँदनदन ज्यों, अस्कद भनै लखिकै

व्रजबाल है । नैनन नीर भर्यो करिरोष,कहै इ
वैन कियो उरशाल है ॥ क्यों सहों एतो विछो
घनो, उत जाव हमै विधनै लिख्यो भाल है
प्राणपियारो मिलै तुमको, अति छैलछबीलो कै
सो निहाल है ॥ १०० ॥

दोहा ।

पिय लखि वारिजनैन भरि, बोली वचन रिसाइ ।
तुमसे पति जाको मिलैं, ताको सुख सरसाइ१०१॥

प्रौढाधीरा लक्षण–दोहा ।

रतिते रहै उदास अति, प्रगट न कोप दिखाइ ।
प्रौढाधीरा नायिका, ताहि कहत कविराइ॥१०२॥

उदाहरण–सवैया ।

पिया परयंकपै पौढ़ि रहे पिय प्यारी विलो-
किकै मूधे सुभाइ । जुही वर मालती हार शृंगा-
रके, हारदये उरमें पहिराइ ॥ भनै असकंद गहे

करके द्युति, क्षीण भई मनमे रिसछाइ । मनौ बिन नीर गुलाबके फूल, तिहूंपर ग्रीपम आतप पाइ ॥ १०३ ॥

दोहा ।

लखि आगम आनँदभरी, खरी प्रेम परवीन ।
छुवत छरा छरकत छटनि, आनन बिरी लईन १०४

यथा—कवित्त ।

छैल ब्रजचंद्र आये मिलन छबीली काज,
रजनी बिताये नेह अधिक लगाये मन ।
प्रफुलित गात भये देखि शुभरूप अति,
कंज कर लीन्हो गहै मैनहू बढ़ाये पन ।
भनत स्कंद अंक भरत सु बोली बैन,
सकुच दुराये कुच छीजिये न मेरो तन ॥
औसर व्यतीत भये सुन नँदनंद प्यारे,
भरन न देत नीर बारिधि बलाहकन॥१०५॥

दोहा ।

पति हित प्रेम अनूप लहि, हरषित सहज सुभाव।
हाव भाव अनुभावको, अनुचित लखत न चाव॥

प्रौढा अधीरा लक्षण–दोहा ।

डर दैकै तिय पीयको, फूलमार जो देइ ।
प्रौढा कहत अधीर यह, कविकोविद मत सेइ ॥

उदाहरण–सवैया ।

गह्यो कर यूथ सहेलिन बीच, लिआइ विलोकत सो अँग अंग। बताइ कछू सखियान सुनाइ रिसाय कहै तजौ यौन कुसंग॥ भनै असकंद प्रसन्न भरे,परनारिन सों विरच्यो रसरंग। सुधारत मालतीकी छरी सों, पियके हिय होत मनोज उमंग ॥ १०८ ॥

दोहा ।

मृदुलकंज कर मालती, लै लचकीली डार ।
हनत हेर हँसि श्याम तनु, किय परतियको प्यार॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

जाइके लिवाइ आइ रास केलि मंदिरते,
करिकर रोप यों सुनावै बैन आलीको ।
कीजियो न ऐसो काम प्रीतम हमारे तुम,
लीजो उर लाइ फेर सौत प्रीति पालीको॥
भनत असकंद तूतौ छैल व्रजनारिनको,
गैल जाइ रोकै गाय गाय राग तालीको ।
करि दृग लाल रोष रस व्रजबाल खड़ी,
फूलनकी माल लये मारै वनमालीको॥११०॥

दोहा ।

कहत सुनाइ सखीनको, अब न लीजिये नाम ।
मारदेत वनमाल लै,त्यों हरपत मन श्याम१११॥

प्रौढा धीराधीरा लक्षण–दोहा ।

ह्वै उदास रतिते रहै, पियपै भय दरशाइ ।
प्रौढा धीराधीर तिय, कहत सुजन रसगाइ११२॥

तथा–सवैया ।

कछु नैन उनींदे झुकी पलकै अलकै बिथुरीं रस चाखि नयो । इहि भाँति छके मदश्याम गये, लखि वाम अनूप प्रमोद ठयो ॥ असकंद भनै भरि अंक लयो, मनसो नवप्रेम मनोज दयो। मनभावतीको मुखचंद्र भलो, रिसके वशमें अरविंद भयो ॥ ११३ ॥

दोहा ।

परसत परम सुजानके, तनु छिन छरक रिसाइ ।
तेह तरेरे त्योरकरि, बैठी भौंह चढाइ ॥ ११४ ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

बनी अलि रूपकी रास घनी, रतिकी द्युति कोटिन वारई देत । गये तहँ श्याम चल्यो मन चोप बढ्यो,अति प्रेम करै हियहेत। भनै असकंद विलोकि रही, कछु भौंह चढ़ावत मान समेत ॥

गहे करके मुखरोष चल्यो रग चद मनौ अर-
विंदको लेत ॥ ११५ ॥

दोहा ।

गये श्याम शोभा निरखि, बोली कछू न बैन ।
गहे कंज करवालनै, करे तरेरे नैन ॥ ११६ ॥

ज्येष्ठाकनिष्ठालक्षण–दोहा ।

ज्येष्ठ कनिष्ठा कहत है, जहँ द्वै व्याही नार ।
जेठी प्यारी कविकहै,लहुरी घट निरधार॥११७॥

यथा–कवित्त ।

बैठी व्रजबाल दुवो साज निज मंदिरमे,
आये नँदनंद तहाँ अमित अनंद सों ।
चंदन प्रसूनहार हिय पहिराये देख,
दरपन दिखाइ एक रूप कर फंदसों ॥
भनत स्कंद दूजी नजर बचाइवेश,
विमल कपोल दुवो परसत छंद सो ॥
भरभर भौरनके डर वर कंज मानो,

सरवर छोड़ मिल्यो पगपरचंद सों ॥ ११८ ॥

दोहा ।

एक पीतपट ओट करि, एक अंकभरिऐन ।
मुखपर फेरत कंज कर, दूजीके उर चैन ॥११९॥

परकीयाभेद–दोहा ।

ऊढ़ अनूढ़ा भेद द्वै, कहत सुकवि अभिराम ।
चाहै जो परपुरुषको, परकीया वह वाम॥१२०॥
करै प्रीति परपुरुषसो, व्याही औरै जाइ ।
ऊढ़ा तासों कहतहै,रसिक सुजन कहिगाइ१२१॥

यथा ।

बाल तनु नूतन विशाल छवि छाई अति,
शोभा अनूप मनौ विधि रति गढ़ी रहै ।
अमल कपोलनको मृदु मुसक्यान देखि,
मुनि मन मोहिजात लालसा बढ़ी रहै ॥
भनत स्कंद नेह लगन लगाई मैन,
ताते निजमंदिरके द्वारही खड़ी रहै ।

कल छिन एकहू न परति विलोके विन,
मोहनकी प्रीति नई चितमें चढ़ी रहै ॥१२२॥

दोहा।

लगी रहैं चहुँओरते, चुगल चवाई नार ।
नेहलगेकी वात यह, कीजै कहा विचार ॥१२३॥

पुनर्यथा–सवैया ।

न जो बैठिये संग सखीनकेतौ कहै, का करै बैठी अकेली जुदै । फँसी नेहके जालमे कैसी भई, सो कहा कहिये अपनो मनुदै ॥ असकंदभनै यह प्रीतिकी रीति, हियेमे लगी छुटै कैसे मुँदै । मति साँवरे रंग रँगी सो कहै, चकही कव चाहत चंद उदै ॥ १२४ ॥

दोहा ।

नई लगन नँदलालकी, चढ़ी हियेमें ऐन ।
खड़ी रहै निज द्वारपै, विन देखे नहिं चैन ॥१२५॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

सघन लतान बृंदावन बीच आयो कान्ह,
ताहि लखिवेको करी इन चतुराईये ।
मैन भरे अधिक रसीले ऐन चैन देखि,
सरस सुशील भये तजिकै रुखाईये ॥
भनत स्कंद समै भूलत न येरी वह,
सहठ सुजान मान लहट लगाईये ।
शशिमुख वाको ताको सरस अमी पी छके,
अंचलके ओट हग चंचल चवाईये१२६॥

बरवै ।

सखि विचार यह मनमे कहिये कौन ।
आवे जो इह मगमें रहिये मौन ॥ १२७ ॥

पुनः–सवैया ।

गइ वा दिन खेलन कुंजमें फाग, बदी यह बात वहाँकी रहै । तहँ आइगयो रँगमें सरबोर, विशाल बनी वह झाँकी रहै ॥ असकंद भनै

लखिके सबरी, गहिबेको चलीं हम ताकी रहै ।
तबते कछु नैक न चैन परै, मति मेरी भटू
छवि छाकी रहै ॥ १२८ ॥

दोहा ।

बढ़ी प्रीति उर श्याम तनु, घटत घटाये नाहि ।
देखनके मिस एक कर, चढ़त अटारी माहि १२९

पुनः—दोहा ।

मेरे मनमे चढ़ि गयो, वह रँग रूप रसाल ।
कहौ सखी कैसे छुटै, विना मिले नँदलाल १३०॥

अनूढालक्षण—दोहा ।

अनव्याही अनुरागनी, और पुरुष सो तौन ।
कहत अनूढा ताहिसों, कवि पडित मति भौन ॥

यथा—कवित्त ।

पूजन गिरीश गई बाल नई मंदिरमें,
मोद लहि अमित प्रमोद उर ठानै है ।
दोनों कर मलयागिरि चंदन विशाल लैके,

अक्षत परश शीश सरस सुहानै है ॥
श्याम श्याम सुमन चढ़ाइ मन मानै सबै,
भनत अस्कंद वेशकौतुक दिखानै है ।
चंद्र जान उदित सुपंकज मुदित जान,
केश निशि मान मानौ भौंर भहरानैहै १३२

दोहा ।

लगी प्रीति पूरण हिये, लखि लोचन अभिराम ।
मिलै मोहि विधि विनव वह,ब्रजजीवन घनश्याम॥

परकीयाभेद–दोहा ।

गुप्तविदग्धा लक्षिता, कुलटा मुदिता सोइ ।
अनुसैना युत भेद छै, ये परकीया जोइ॥१३३॥

भूतगुप्ता लक्षण–दोहा ।

सुरत करै कर गोवही, गुप्ता भूत वखान ॥
कहत ग्रंथमत देखिकै, जेकवि सुमति निधान॥

यथा–सवैया ।

एक दिना तनु साजि प्रसूनन,हेतु गईवनतूसुन

लेरी।सो चहुँ ओर विलोकि चकोर,समौ लहि साँझ दशौ दिशि घेरी ॥ त्यो असकंद छटा घनश्याम, निहारि डरी करि लाज घनेरी। भागत केतकी कंटक लागि फटी रँग चौपरी चूनर मेरी॥१३५॥

दोहा।

अब न जाब पनिया भरन, चाहै सास रिसाइ।
चतुर चवाइन चौगुनी, देती दोष लगाइ ॥१३६॥

पुनः–सवैया।

यमुनातट कुंज कदंबके पुंज, प्रसूनन हेतु पठावती हौ। श्रम स्वेद विलोकि विना समुझे, मनमें जु कहा दरशावतिहौ ॥ असकंद अबै न कहौ हमसे, हकनाहक मोहिं लजावती हौ। सब बैठ भटू गुरुलोगनमें, किहिकाज कलंक लगावती हौ ॥ १३७ ॥

दोहा।

भीजी रंग गुलालमे, नेक न परचो लखाइ।

करगहि मुख केसर मली, वीर कौनने आइ १२८॥

पुनर्यथा-सवैया ।

आज प्रभात गई यमुनाजल, मोद भरी मनमे मति ठानी ॥ देख चहूँदिशि धाये भट्ट, तजि पुंज मलिंद सुगंध सुहानी । त्यौं असकंद भनै लहि प्रेम, घिरी चहुँ ओर हिये अकुलानी ॥ का कहिये यह कंप अरी,तबते यह देहदशा दरशानी १२९॥

दोहा ।

ललित लता कंटक कलित, कुंजगैल लपटात ।
वसनफटे उत जात सखि,मो मन अति सकुचात ॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

कासों कहो आजकी कथा में यह मेरी भट्ट,
बीती जो बिथाहै काहि काविधि सुनैहो मै ।
सहजसुभाय चित्त चाहिकै विनोद मान,
मंजन अनेक कर कुंज छावि छैहो मै ॥

भनत स्कंद किन कोटि उपहासैं मोहि,
तासे वहु सासकी अनेक सहिलैहों मै।
सैहों ना चकोरनकी चुंग चोट चारों ओर,
आजतें न भूलहू कलिंदीकूल जेहों मै॥१४१॥

दोहा।

सखि गुलाबके फूलकी, डार नवाई आज।
करते छुटि ऑगियाफटी,हिये धरक अति लाज॥

भविष्यगुप्ता लक्षण–दोहा।

करन सुरति चाहै हिये, आगूसे कर गोइ।
गुप्ता ताहि भविष्यकहि,वर्णत कवि सबकोइ १४२

यथा–सवैया।

मौरसिरी जहँ हेरी भली विध, सोनजुहीकी लगी गति प्यारी। नीकी लगी भली माधवीकी छवि,सेवती चारु अनारकी वारी॥ चंपन भौर भनै असकंद सु, केतकी वेलमे पेंच निवारी।

आज मैं देखन जैहौं वहाँ जहाँ, फूली गुलावकी है फुलवारी ॥ १४४ ॥

दोहा ।

विमल विलोकन जाय हौं, नूतन वह वन आज ।
गुंजत मधुप मदंध तहँ, शोभित नित ऋतुराज ॥

पुनर्यथा—सवैया ।

हमै फूल गुलावके टोरने है, शिव पूजवेको मति यौं ठई है । यह गाउँ चवाइनको चरचो, सुनिकै डरपै जियसों दई है ॥ असकंद भनै सवहीके भटू, विधने लिख्यो भाल सोई भई है । हम यासों सुनाइ कहै सब सों, फिर कोउ कहै न कहां गई है ॥ १४६ ॥

दोहा ।

मौरसिरी जहँ है अरी, सौनजुहीकी दौर ।
देखन जैहौ आज मैं, फुलवारी को ठौर ॥१४७॥

वर्तमानगुप्ता लक्षण–दोहा ।

करतजात जाहिर सुरत, गोवत तुरतहि जात ।
वर्तमान गुप्ता कहत, ताहिसुजन अवदात॥१४८॥

उदाहरण–कवित्त ।

और वनवाइवेकी चरचा चली है कहूँ,
तिनहि दिखायवेकी आन परी इनको ।
येतौ व्रजठाकुर न देयँ तौ करोगी कहा,
माँगत है आरसी अँगूठी चारदिनको ॥
भनत अरकंद यामे कछु वरजोरी नाहिं,
सुनियो सखीरी यो सुनाइ कहौ किनको ।
सौह कुलकानकी नदानवन देहौ नाहिं,
निशिको दिवसको घरीको एक छिनको१४९

दोहा ।

प्रिय रिसाइ कुंजन गई, मोसों कहत मिलाइ ।
बार बार यह कहनको, कान्ह कान लग जाइ ॥

यथा–सवैया ।

काज अनेकन है गृहके सब एक करै नहि है मतवारो । हौ हरभाँति सिखाय चुकी सखि, तू कहि जो कह्यो मानै तिहारो ॥ त्यों असकंद भनै यह कौतुक, देखिकै को न करै निरधारो । बैठ इकंतमें रूप धरै सखि यो वहुरूपिया कंत हमारो॥

दोहा ।

सखी सुनौ यह पथिक इक, बातै रचत अनूप ।
कहत एक दिन में यहाँ, नयो खुदाऊं कूप१६२॥

द्विविधविदग्धालक्षण–दोहा ।

करि चतुराई वचन सों, मिलै क्रिया कर जोइ ।
वचनविदग्धा क्रिया इक, कहत विदग्धा सोइ ॥

यथा–कवित्त ।

कारे कारे दिशन दबाइ चहुँ ओरनसों,
आये घन गरज मचावत तरगमें ।
कूक उठे कोकिला सकूकदै कुहूक उठे,

धुनि सुनि मधुर मयूरहू उमंगमें ॥
भनत अस्कंद होनलागी हिय मंजु मार,
मैनकी विरह लागी बढ़न सु अंगमें ।
डरत अकेली निजभौन मे अँधेरी रैन,
प्रीतम न आये रहे सौतन कुसंग मे॥ १५४॥

दोहा ।

रैन अँधेरी मै डरौ, ननदी गई रिसाइ।
सखी नकोऊ संगमें, पियको सौत सुहाइ॥१५५॥

पुनःसवैया ।

न आये पिया घर सौतन संग, रहे सुखसों अतिही मनमान। सुनै इमि वैन कछू रिसके, ननदी गई रूठ कियेही गुमान॥ भनै असकंद कहा कहिये, न सखी कोउ संग उये किमि भान। धरापर धूम करी धुरवान घने घन कोरे लगे घहरान॥१५६॥

दोहा ।

पिय सौतनके संगमें, फँसे लगाय सनेह ।

घन घमंड आये सु मै, डरत अकेली गेह॥१५७॥

क्रियाविदग्धा यथा–सवैया।

लागिगई सँग हेलिनके, वट पूजवेको सो विचार महूरत। आयगये वे अचानकहूँ घन-श्याम तहां घनश्यामकी सूरत॥ त्यों असकंद भनै अतिही हिय, चाह बढ़ी यह बात विसूरत। वेंदी सम्हारनके मिस बाल सु, आरसीमें लखी लालकी मूरत॥ १५८॥

दोहा।

पटहि दाबि ठोढ़ी दुविच, लखत छाँह मिस ओर।
झुक झुक कसकमिरोर लै,कसतकंचुकी छोर१५९

पुनर्यथा–बरवै।

अटक्यो आइ भमरवा रसके हेत।
न सकै भरी गगरिया कसकै लेत॥ १६०॥

पुनर्यथा–सवैया।

चली व्रजकी वनितानके संग, अली पहिरे

मुकतानकी माल । मनो छवि छीनलई रतिकी अतिही बनी रूपकी राशि विशाल ॥ भनै असकंद सुकुंजनमे लगी, खेलनआय गये नँदलाल । विलोकतही पटओट भई, कस कंचुकी लागी उघारन बाल ॥ १६१ ॥

दोहा ।

चलत सखिनके संगमें, चितवत चारहुँ ओर ।
कहुँ घन कहुँ वन कहुँसुमन,छवि हितनंदकिशोर॥

बरवै ।

मनमोहनको मग में लख्यो सुजान ।
वेंदी लगी सँवारन अधिक सयान ॥ १६३ ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

अति अनुरागी बाल ठाढ़ी यों सरोवरमे,
बार बार कंचुकी के छोर छुर छुर जात ।
झुकत झपाकसो छिपायतनु ओढ़ै पट,

मोतिनकी माल हिये बीच लुर लुर जात ॥
भत अस्कंद त्यों अनंग अंग अंग ओप,
सॉवरे सलोने कान्ह ओर मुर मुर जात ॥
लगत समीर जुरै मानौ वश लाज कंज,
मुकुलित लोचन विलोकि दुर दुर जात १६४॥

दोहा ।

घिरी सखिनके जालमें, बैठी बाल रसाल ।
कर उठाइ घंघट करत,लखि निहाल नँदलाल ॥
लगी सम्हारन भालकी, वेंदी बाल विचार ।
इकटक रही सु आरसी,छवि तनु लाल निहार ॥

लक्षिता–लक्षण ।

सखी लखावै प्रीति जो, परपति चिह्न दिखाइ ।
कहत लक्षिता ताहिसों, जे प्रवीन कविराइ १६७॥

सवैया ।

कहै मानिये चाहै न मानिये जू, तुमतौ नँदनं

दके अंक लसी । अतिप्यारी मनोहर मौज भरी, बतियाँ सुनिकै कहो वंकजसी ॥ असकंद भनै अबही ते भटू, चितमें हितसों निरशंक फसी । अबै लागती नीकी सुहाँईतनी, छतियाँ ये भली कली पकजसी ॥ १६८ ॥

दोहा ।

श्रमकन अलि अलकन मनहु,झरत प्रेम अनुराग।
मनमोहन तू मोहनी, दुहूँआज बड़भाग ॥१६९॥

पुनर्यथा–सवैया ।

का कहिवेमें निकास अरी, किहि हेतु सों मोतिन माँग सँवारी ॥ छाई सु प्रीतिघनी उरमें लखि चातुरी तेरी भई हम वारी ॥ वारी रही तू भनै असकंद सु कौनके नेह सों नेह लगारी ॥ चोपसे देखत चारहु ओर, सु कौन है तू नई झूलनवारी ॥ १७० ॥

दोहा ।

भली बनी बानिक विशद, मृदुल माळती माल ।
अजौ अगुण गुणळौ प्रगट, भई सरस रस जाल ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

रूपरस राते ये नवेळी तेरे रम्य युग,
सौतिनको ताते मनमोहन सुहाते ये ।
भनत अस्कंद इतराते लखि प्रीतमको,
काते खरसानके सुधाको बरसाते ये ॥
देखकै लजाते मृग मीन अरु खंजनहूं,
उपमा न पाते रसरीत न जताते ये ।
सुख सरसाते पर प्रीति न लखाते वेश,
तेरे दृगप्यारी रहै छविमदमाते ये ॥ १७२ ॥

दोहा ।

मनमोहन मन मिळ अरी, सो उरमें छवि देत ॥
अब किहि कारण गोइबो, प्रगट दिखाईदेत १७३॥

पुनः-सवैया।

मुख देखके चंद्ररहै रमता समता को करै लखि रूपनता। भ्रम होत चकोरनको जबता अब ताकि कितेक करै ममता॥ उरमें लसै हार गसे मुकता असकंद भनै दियो कौने सता। विनदेखे भटू वह कुंजलता व्रजमें बसिबो हँसी खेलनता॥ १७४॥

दोहा।

अधर रदनकी छाप यह, उर पै विन गुणमाल।
सौहै करि तोसे कहौ, गोहे नवनै बाल॥ १७५॥

कुलटालक्षण-दोहा।

लाज रहित बहु चाह पति, रतिते तृप्ति न ताइ।
कुलटा तासो कहतहै, कविवर बुद्ध बनाइ॥१७६॥

यथा उदाहरण-कवित्त।

रूप गुणसागर प्रकाश नवयौवनपै,

धरत न धीर परचो मैन मन फंद है ।
होत न प्रभात कर मंजन सँवारै गात,
केशछुटकाय चलै गजगति मंद है ॥
भनत स्कंद चहै पथिक सनेह गहै,
नेक हू न लाज रहै निपट सुछंद है ।
दिवस व्यतीत जबै होत अरविंदनैनी,
अधिक अनंद जौलौ उदित न चंद है १७७॥

दोहा ।

निशि अँधियारी रैनिमें, परै हियेमें चैन ।
पथिकदेखि सखियानसों,कहति रसीले बैन१७८॥
छाजत छबिकी छटासी, छज्जा छलिया छैल।
झकत झरोखाही रहै, खिरकी द्वारे गैल ॥१७९॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

चाहभरी चंचल विलोकन चहूँधा चारु,
चोखे पट अंग शुचि सौरभरँगी रहै ।
भूषण अनूप अति उरज उतंग तग,

कंचुकी कुसुंभ रंग सुरत जगी रहै ॥
भनत स्कंद कुंज विपिन विहार वेश,
मोदमय पुरुप प्रवीणन पगी रहै ।
परम पुनीत रति रीति हित हेर प्रेम,
परस प्रदोप मंजु मारग लगी रहै ॥ १८० ॥

दोहा ।

सुनि बिहार ब्रजलोग सजि, चले चतुर चितचाह।
हँस विलोकि नूतन पुरुप, चाहत नेह निवाह ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

रहै पर प्रीति अनेक उमंग, अनग उदै रति चाहत ऐन । चलै पट भूपण ओप दिखाइ, रिझाय सबै कहि माधुर बैन ॥ चलै असकंद निकुंजनमे सुन गोपसमूह करै चितचैन । तकै तिरछौहे कटाक्षनसों, हरषै बिहँसै यों चलावत सैन ॥ १८२ ॥

दोहा।

रमन चाह परपुरुषसों, कर हित प्रगट अनेक।
भानु छिपे लहि पथिकजन, मिलत नकरत विवेक।

पुनर्यथा–सवैया।

सु चले नवकुंज कलान प्रवीन, प्रमोद भरी बहुभाँतिहितै। हँस हेरन चातुरी चोप चढ़ी, दृगफेरन चंचलबाजनितै॥ असकंद भने मृदु-माधुरबैन, सुनाइ कहे छवि छैल जितै॥ हरपै मनमाँह ग्रुवालनके, निरखै चहुँ ओरन चाह तितै॥

दोहा।

खुले केश अंचल विचल, छुटे कंचुकी छोर।
बिहँसि बतात सखीनसो, रसिकनकी चितचोर॥

मुदिता लक्षण–दोहा।

मनभाई सुनि बात लखि, हिये प्रमोदित होइ।
मुदिता तासों कहतहै, कविकोविद रस मोइ॥

यथा उदाहरण–सवैया।

सजे नवअंग अनंग उमंग, बढ़ी मन चोप विचार विशेप। हिये मति ठान सु मीत पुनीत, धरे मन धीरज ताहिनिमेष॥ भनै असकंद छकी छविसों, छतियान छुये लगि प्रीति अलेष। प्रमोद भरी सखिसों विहँसै, गुणआगर बाल निशाकर देष॥ १८७॥

दोहा।

पथिक सार पियखत दियो, वैसिक भयो सुनाद।
गुरुजन दुखजाहिर करत,हीतल उमँग उछाह१८८

पुनर्यथा–कवित्त।

बैठी सजि सुंदरि अलीन मोद मंदिरमें,
सहज शृंगार दिव्य दीपत लसी परै।
मंद मंद हँसन सनेह मनमोहनको,
काहु पै कहै न लाज गुणन गसी परै॥

भनत स्कंद जोर यौवन झकोर वेश,
गौन सुनि प्रीतम विदेश विहसी परै ।
हेर हेर हरष हुलास अंग भूषणलौ,
कौतुक कलान कुच कंचुकी कसी परै ॥ १८९॥

दोहा ।

सुमुख सखिन सुन शशिमुखी, कुंज गवन नँदलाल।
हिय हुलसी हरषी हिये, सुंदर रूप रसाल ॥ १९०॥

कवित्त ।

पथिक लियायो पियसारमें दिखायो खत,
बूझे मिलि सकल सुनाइयत बात है ।
वैसिक भयो है पति भै शक न रंच कहूं,
दिनप्रति अमित प्रमोद सरसात है ॥
भनै असकंद और गुरुजन विचारकरै,
कहत न वैन सुने मन उमदात है ।
ऊपर सभीते दुख चौगुनो दिखातपर,
हीतल उमंग सुख सौगुनो दिखात है ॥ १९१॥

दोहा ।

रमन वैन सुन सदनमें, वसन परोसिन नाह ।
भो अनरस रस रीझ मन वशरस खीझ उछाह १९२

पुनर्यथा—दोहा ।

सघन कुंज पुहपावली, भ्रमरावली अनंत ।
रढ़त कीर विरदावली, लसत प्रसन्न वसंत॥१९३॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

कुंदन सरस दीप्त दीपन प्रदीप्तवान,
तद्वत मयंकमुखी विमल सुहायो है ।
जगमग जडित जवाहिरके आभरण,
अंग अंग शोभित मनोज सुखजायो है ॥
भनै असकंद सुने विरह अचानकहूं,
नाहकहू जाइ मन करत परायो है ।
ऐसे प्रिय वचन सुकाहू सखि आय कहे,
होत सुत ननद प्रमोद अति छायो है॥१९४।

दोहा ।

सुनत विरह सरसान अति, गवन करनकर वान ।
ननद ललन होतन सुने, आनँद हिय न समान १९५॥

पुनर्यथा–दोहा ।

कानन देख्यो ध्यानमें, पिपा मिले तिय आन ।
श्यामघटा घन देखकै, हरष न हिये समान॥१९६॥

पुनर्यथा–सवैया ।

रही चाह चहूं दिशि प्रीतिभरी, नवनीत मनो-
रथकी अधिकारी । तैसही वीन सुनी हरपी,
निरखी छवि मूरत कुंजविहारी ॥ त्यों असकंद
भनै लखि कुंज, मनोहर केलिकला उर धारी ।
वैसही आइ झुकी मनकी, चहुँओरते घोर घटा
घनकारी ॥ १९७ ॥

दोहा ।

नई लगन नाई लगन, नाउम दई दिखाइ ।
ाविमलागी सब सखी, सावन पहुँचो आइ १९८ ॥

पुनर्यथा–दोहा ।

सुन हरषीं हिय हुलस तनु, गवन रवन कलि कुंज ।
प्रफुलित सुमन सनेह जहँ, श्याम सघन द्रुम पुंज॥

अथ अनसैनालक्षण–दोहा ।

विहरत जहँ दंपति सुरति, सो थल मिट्यो दिखाइ।
प्रथम सु अनसैना कहत, होत बहुत दुखताहि२००

उदाहरण–सवैया ।

कियोंहै सुराज नयो ऋतुराज, खाज समीर करी सो दिखात । कहाँ भटको गहि मौन रहौ, भ्रम भूले फिरौ का तुम्है दरशात ॥ भनै असकंद सुपंकजको, नहीं लेश अबै ये पुरैनके पात । न कुंजमें एकहू फूल सुगुंज वृथा अलि क्यों करै तू उतपात ॥ २०१ ॥

दोहा ।

आगू लै हिमने दियो, राज भयो ऋतुराज ।

फूल नएकौ कुंजमे, तू गुंजत बेकाज ॥ २०२ ॥

पुनर्यथा–सवैया।

बार हजारक लौ बरज्यों सुन वीनिये फूल नयो यह बाग है। तापै कछू यह टेक घरी घरी रीतरहे उठ आवत जाग है। त्यो असकंद भनै अतिही, हियमे यह बाढ्यो भल्यो अनुराग है॥ पापिन तू नहि मानत नेक, सुभौरन लेन न देत पराग है॥ २०३ ॥

दोहा।

हौ तोसो कहिजातहौ, बीनन सुमन सु बाग।
क्यों पापिन तू अलिनको, लेन न देत पराग॥

द्वितीय लक्षण–दोहा।

चाहै जो संकेतको, होनहारकी चाह।
सखी बतावै द्वितिय कहि,अनुसैनादुखवाहि२०६

द्वितीय अनुसैनाको उदाहरण–

कबित्त ।

सुगम सरोवर मनोहर विचित्रतामें,
करत कलोल वामें अधिक सु मीन है।
प्रफुलित कंजनपै गुंजत मधुप पुंज,
रसवश तामे रहे अधिक अधीन है ॥
भनत असकंद होव मुदित मयंक मुखी,
केकी पीक भूर एक बातही नवीन है।
कुंजनसे कुंज अति सरस दिखात जैसे,
मारतंड मंडलकी पृथिवी नवीन है ॥२०६॥

बरवै ।

काननकी सुध कानन सखी सुनाइ ।
अति प्रसन्नभो आनन, हिय समुदाइ ॥ २०७ ॥

दोहा ।

पुंज पुंज अलि कुंजमे, गुंजत फिरत समूह ।
पिक चकोर चातक सरस, तज दुख कर सुखयूह ॥

कवित्त ।

सघन सुहाइ कुंज सुमन अनूप फूले,
लखि मकरंद भौर भॉवर भरतवे ।
तज दुख सुघन दरारे देत दौर दौर,
गरज छटाके हेत मानो लरतवे ॥
भनै असकंद ऐसो कौतुक मयूर पिक,
कोकिला समूह बोलै धीरना धरतवे ।
झुकि झुकि परत धरापै तरु झूम झूम,
शीतल समीर झोंके हीतल करतये ॥ २०९ ॥

दोहा ।

सघन कुंज सह सुमन लखि, चंचरीकके पुंज ।
फिरत एकरस हेत वे, मधुर मचाये गुंज ॥ २१० ॥

पुनर्यथा-दोहा ।

लैआई मालिन सुघर, प्रफुलित सुमन गुलाव ।
खिले माळतीहूँ समझि, चढ़ी चोगुनी आव २११ ॥

पुनर्यथा–बरवै ।

हौसिन गई परोसिन देखन बाग ।
लखि रसाल वन फूल्यो मनसिज लाग ॥ २१२ ॥

पुनर्यथा–कबित्त ।

मंजुल विमल बाल सरस विशाल लता,
पावत न ताहि अमरावतीके बाग है।
दाडिम दरक कीर चातक कपोत आय,
उड़न विसार बसे कर अनुराग है ॥
भनै असकंद तहाँ सुगम तड़ाग एक,
मीन रहै खंजन मृग आवत सु भाग है ।
कमलन फूले अलि गाहक पराग भये,
रागवर गावत बढ़ावत विराग है ॥ २१३ ॥

दोहा ।

हिये चैनकर शशिमुखी, निरख मनोहर बाग ।
गुंजत्त फिरत समूह अलि, वरषावत अनुराग २१४

बरवै।

देखहु चलि नवकुंजै विपिन सुवाग ।
चहुँदिशि झरत मही पै कुसुम पराग ॥ २१५ ॥

तृतीय अनुसैना लक्षण-दोहा।

केलिसदनते आगमन, पिय लखि जिहि दुख होइ ।
हौनगई पछिताइ मन, तृति अनुसैना सोइ२१६॥

कवित्त।

नवब्रजनारि कोऊ निजगृह द्वार ठाढी,
आये घनश्याम लखे घनसे सुधाके है ।
भनत अस्कंद भई अधिक अधीन लखे,
हिय वनमाल भये लाल चख वाके है ॥
लेत न उसॉस कंचुकीके कस टूटपरे,
अति अभिलाष भरे शुभउन ताके है ।
अरुण सुहाये कुच तापै कछु श्याम मनों,
पंकज कलीनपै मलिंद मद छाके है ॥

- - - -

दोहा।

सुभग माल उर श्यामके, गोरज अलक विशाल।
देखतही ह्व विरहवश, कह्यो न कछु व्रजबाल२१८

पुनर्यथा—कवित्त।

सुंदर सुवान सुखदान मोद मंदिरमें,
बैठी वेस सहज शृंगार रति सानीसी।
मुदित मनोरम मनोज मनमोहनके,
चाह रही चोपहिय चारु मनमानीसी॥
भनै असकंद आय औचक अचानक हीं,
बाँसुरी सुनाइ सुने चौंक सकुचानीसी।
फीको पर्‍यो चन्द्रमुख धीरज न हीको रह्यो,
विमुद विलोकि भई बेहद विकानीसी २१९॥

दोहा।

आवत वनवानिकवने, शोभित सुमन शृंगार।
लखि विलखीउर कर कलित, ललित लहलहीडार॥

पुनर्यथा–सवैया ।

भूषन अंग उमंगनसों सजि, मोद मनोरथ प्रीति ठनीमै । चाह भरी चित चंचल वाट विलोकत वेस रही सजनीमै । ताहि समै असकंद भनै घनश्याम विलोकनि कुञ्जघनीमै । ह्वैरही ठाढ़ी ठगीसी थकी थिर ह्वै विरहावश काम अनीमै२२१

दोहा ।

कौन बजाई बाँसुरी, सुधावैन मृदुतान ।
लगी हिये अलि आन यह,जनु मनोजके वान२२२

गणिका लक्षण–दोहा ।

निशिदिन धन मनमे वसै, रमै सु लैकर सोइ ।
सोई गणिका नायिका, रसग्रंथनमें होइ ॥२२३॥

गणिकाका उदाहरण–कवित्त ।

वैठी रसरीतमें मनोहर मनोज भरी,
वोज भरी सोहै अंग अंवर वनक के ।

विशद विलास मृदुहास रसवास छुये,
छरकत छैलके तनूरुह तनक के ॥
भनै असकंद केलि कलन प्रवीन महा,
मोहिलेत मंजु मन केतिक धनक के ॥
करत कुतूहलसे माँगै हँसि हेर हेर,
जटित जड़ाऊ करकंकन कनक के ॥२२४॥

दोहा।

गरज बतावत सहजहीं, अलगरजी मन चाह ।
प्रीति रीति हिय कपट युत,झूठो नेह निवाह२२५॥

पुनः—कबित्त ।

चाहभरी चंचल विलोकन विशाल नैन,
सैनन धनीन कहै वचन हितै हितै ।
सकल शृंगार साज अमल अगार द्वार,
वीणन प्रवीन गावै वासर वितै वितै ॥
भनै असकंद सुख सौरभ सुभाग भरो,
राग भरो नेह धन बाढ़त नितै नितै ।

चातुरीसों लचक लजाइ ललचाइ मंजु,
मृदु मुसक्याय चित चोरत चितै चितै॥२२६॥

दोहा।

मधुर मधुर कहि वचन मृदु, रसिकनको मन लेत।
धनी पुरुपसो चाह कर,विहँसि ठिठौही देत २२७॥

पुनः—सवैया।

रंग तरंग उमंगसों बाल, सु द्वारप ठाढ़ी नयो हित चाइकै। जाइ अचानकही निकरे, लखिकै उरमाल लियो है रिझाइकै ॥ त्यों असकंद भनै अतिही, चित चौगुनी चाह बढ़ी हित पाइकै। कुंदको हार मुकुंद दियो हँसि, लीन्हों मनोज भरी अलस्याइकै ॥ २२८ ॥

दोहा।

श्याम तुम्हारी बाँसुरी, जौने लई चुराइ।
हम कहौ कछु देनतौ,तुरतहि देयँ बताइ॥२२९॥

पुनः—कवित्त ।

छैल व्रजचंद्र चले छलन छबीली काज,
कछुक गवाँयो भयो लखिही कलोलको ।
कंजकर पकर सु अंक भर लीन्यो ताहि,
अति मधुमातो चह्यो चुंबन अमोलको ॥
भनै स्कंद अधर दशन दबाइ बाल,
बोली अरे छोड़ मोहि लीन्योहै न मोलको।
निपट सयाने सो अयाने सुनो होत कहा,
करकर लीन्हो दियो करन कपोलको॥२३०॥

दाहा ।

अधर दशन बिच दाबिकै, बोली हँसि इमि बोल ।
कर करने तेरो लियो, लियो सु करन कपोल२३१॥

पनः—कबित्त ।

नितप्रति सोंधेसे नहाइ तनु मंजनकै,
साजत शृंगार प्रेम हियमे धरे रहै ।

वार वार आवै निज द्वारपै अकेली लखि,
पथिक बोलाय कर लै मन भरे रहै ॥
भनै असकंद ऐसी रीतिकी प्रतीति नाहि,
अधिक सयान मान प्रगट गरे रहै ।
दामिन दशन बिम्ब अधर समान ठान,
भ्रुकुटी कमान वान नैनन करे रहै ॥ २३२॥

दोहा ।

अधिक सयान हिये वसै, लसै अनोखीवान ।
आननको शशि जानिकै,बैठत द्वारे आन ॥२३३॥

बरवै ।

घन न जोर जो बरसै तरसै मोर ।
तुम न लेहु मन करसो करसों जोर ॥ २३४ ॥

कवित्त ।

मेरे प्राणप्यारे तुम जीवन अधार और,
कौनहै अधार जासों वैन भाषि कहिये ।

सौंहै तुम सौंहै जो हजारकलौं ठानी सोतो,
एकहूं दरआनी नहीं कौन भाँति चहिये ।
भनै असकंद येती प्रगट दिखानी प्रीति,
रीति मनमानी सो वियोग कैसे सहिये ॥
बरज न कोऊ सकै अरज हमारी यह,
गरज तुम्हारी जहाँ चाहौ तहां रहिये२३८॥

दोहा ।

कर कंकन दुरदेन कहि, ल्याये ना बनवाइ ।
कौन रीति हित मानिये, अंतर कपट दिखाइ ॥

अन्य सुरति दुःखिता लक्षण—दोहा ।

और नारि तनु चिह्न लखि,निज नायिकके जौन ।
बात पैज कहि तेह गहि, अन्य सुरत दुखितौन॥
बिरी हाथदै सखीके, फिरी बिहँसि मुखगोइ ।
लाल रीझियतु जाहिपे, क्यों न सुहागिल होइ ॥

उदाहरण—कवित्त ।

शुभ नवमाल पिय गृहमें लिआये आज,

सहजसुभायकर बोली हौं न चाहिनै ।
बसत परोसमें हमारे तुम तासों कहो,
वह उरमाल शोभा तुव उरमाहिनै ॥
भनै असकंद हितू हरिकी हमेश प्यारी,
विधिकी सवॉरी प्रीति मुकर निवाहिनै ।
मै तो तुवदोप रोप छाडिकै न काहू कहूं,
तुव करतूतको सराहन सराहिनै ॥ २३९ ॥

दोहा ।

टरजा मेरी नज़र सों, घरपै नेह निवाह ।
नईसौत तैहूं भई, गही अनोखी राह ॥ २४० ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

हौ हितसों नित आदरसों, मन मान करी अपने समताई। सुंदर भूषण अंबर अंगद, ये निज प्रेमसो प्रीति बढ़ाई ॥ त्यों असकंद भनै सखियों, परतीतकी आछी प्रतीत लखाई ।

आइ न क्यों चल वेग भटू, किन सौतिन एती अबार लगाई ॥ २४१ ॥

दोहा ।

तनु विलोकि अलि मद भरी, प्यारी चकितचितौन।
बलिहारी तुव छबि लखे, अवरसवाली कौन २४२
तनु विलोकि अलि मद भरी, बोलत वचन सम्हार।
करी सुरति पिय संगमिल, तोसी तुही गँवार ॥

पुनर्यथा—सवैया ।

मैं लखिकै तुव चाह बढ़ी, न मिलै तो हमै का निहारती हौ। नई रीति कहूँ यह सीखी भली, बिन दोष लगे मन डारती हौ ॥ असकंद भनै जो न जाती तऊ, उठ आय शृंगार सँवारती हौ। गुणएक न मानती येरी भटू तुम येतो विचार विचारती हौ ॥ २४४ ॥

दोहा ।

सुघर सौत शालतनती, तू अब भई नवीन ।

गई कौन हित का कियो,चपल चतुर मतिहीन॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

करत शृंगार चारु मनमें विचार कियो,
तुरत बुलाई निज मतकी सलाहिनै ।
आइकह्योएकतें सयानी तुव कौनिउविधि,
बांसुरी लिआव वीर नेक हमै चाहिनै ॥
भनै असकंद आइ मिलकै लिआइ देखि,
मदन सताइदेत मदसों डराहिनै ।
काहेको गईती कौन काम करि आई सौति,
तूही नईएकभई और कोऊ नाहिनै ॥ २४६ ॥

दोहा ।

पियकी नीति अनीति यह, कौन लगावत खोर ।
मदन विवश आंधू परे, येरी जोवन जोर २४७ ॥

पुनः कवित्त ।

आवत नित यातेकहि आवत नरोंकी जात,
यातें विनगुणकी हियमाल लसिवो करे ।

तातें पट चारों ओर ओढ़त सँभारवेश,
कंचुकी उरोजनपै अति कसिबो करै ॥
भनै असकंद मौज काम मदमाती मोहिं,
सौतिन सुहाती तुहिकौन हँसिबो करै।
रहि बरसाने क्षपाकरके छिपानें आइ,
गजब गुजारनको ब्रज बसिबो करै ॥२४८॥

दोहा।

को तोको या नगरमे, जानत नही गवाँर।
पिय मन मोह्यो सौत तुव, छिपै न हियको हार ॥

पुनःकवित्त।

चतुर सयानी भली चोप उर आनी हानि,
कराति विरानी रीति कुमति सहीरी मै ।
सजत शृंगार चली आवत अकेली द्वार,
निलज निहार लाज अधिक गहीरी मै ॥
भनै असकंद अब नेकहू न आवै बनि,
मदन छकीले नैन देखत कहीरी मै ।

हठ कीर नेह कियो छैल छलियासों तुव,
बरज न मानी नेक बरज रहीरी मैं ॥ २८० ॥

दोहा।

इत आवत उत जात नित, बरज रही सौवार ।
निलज लाज आवे नही , परपति रमत गँवार ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

आवै भोर साँझ हू न साँझ आवै कौनो विधि,
भावै मत जौन तो नरोकिये कहाँ लौरी ।
खोर खोर धावै मन गाहक बनावै रूप,
चाहक अनेक देखि देखिये जहांलौरी ॥
प्रत प्रत सरस समान तव येरी वीर,
भनै असकंद वेग पावत तहां लौरी ।
निशिभर चाँदनीमें दिनभर भामिनीमें,
रतिकर कामिनीमें पावत वहाँलौरी ॥२८२॥

दोहा ।

कौन सिखाई सीख यह, परपतिसों रत हेत ।

पास परोसिनको अरी,काहे तू दुख देत ॥२५३॥

प्रेमगर्विताका लक्षण–दोहा ।

अपने पति अनुरागको, गर्व करै कहि बाल ।
प्रेमगर्विता कहत है,तासों सुकवि रसाल ॥२५४॥

उदाहरण–कवित्त ।

परम अनूप रूप गुणको कलानिधान,
लखत न जौलौं तौलौं रहत सरोदमैं ।
प्रफुलित कमल परागहित भौंर जैसे,
फिरत मदंध खोज करत सु मोदमैं ॥
भनै असकंद कोक कलन प्रवीण प्यारो,
सहज सयान कहै वचन विनोदमैं ।
प्रगट प्रमोद सुख मिलत सुचोप चहि,
लेत मुख चूम चूम छिन छिन गोदमैं ॥२५५

दोहा ।

ल्याई सुमन परागयुत, जे हित मान अनेक ।
ते मन भाये एक नहि,सरस नेहकी टेक॥२५६॥

पुनर्यथा–सवैया।

निशाकर देखि चकोरलौं चाह, करै नित नेम सों आनँद ऐन। मनोहर हेलिनमें मिलिकै, कहै प्रीति जनाइ सुहावनेबैन॥ भनै असकंद सुमेरी भटू, रहौ लाजभरी कहिबेमे लजैन। बिलोकत बारहिबार शृंगार,लगाइ हियेमें करै चित चैन २८७

दोहा।

पियेरहत नित प्रेमरस, किये रहत अतिनेह।
लिये रहत कर मन मुदित, वह घनश्यामअछेह॥

पुनर्यथा–दोहा।

भावै ठौर सहेट जो, परै न तौ मन चैन।
अधिक रसीले मद भरे, कहे सौतके बैन॥२८९॥
पिय मेरेको वश करै, सोई चतुर सयान।
तोसी कहे गँवारके, क्यों उर आनहुमान २९०॥

पुनर्यथा–दोहा।

सौतै सजे शृंगार वर, नेक न देखत राह।

पियको चाहति मोहने, चाह सु करती आह ॥

रूपगर्विता लक्षण-दोहा।

होइ गुमान सु जासुको, अपनो रूप निहार।
रूपगर्विता कहतहै, ताको सुकवि विचार२६२॥

रूपगर्विताउदाहरण-सवैया।

नइ देखी तुम्हारी अली यह रीति, भली जो कहै तो बिगारतीहौ । तुम मानियो चाहै बुरो जियमे, यह टेक कुटेक न टारती हौ ॥ असकंद भनै यह रूप गुमान मे, कौन सयान विचारती हौ ॥ कहै चंदमुखीके सुयेरी भटू, मनमोहनै क्यों न निहारती हौ ॥ २६३ ॥

दोहा।

श्याम न झूठ कहै कछू, विमल इंदुमुख ऐन।
सुनत वचन इमि बालतुव, करत तरेरे नैन २६४॥

पुनर्यथा-कवित्त।

सघन सहाइ कुंज विटप घनेरे जहाँ,

दिवस न देख परै लेश आफताबको ।
होत निशि रहस मचावत अलीन संग,
सुभग स्वरूप बनो रतिके जवाबको ॥
भनै असकंद तहां घेरत चकोर पुंज,
झझकि छिपावै मुख करकै सिताबको ।
प्रेम सरसात बात रसकी बतात प्यारी,
हँसि हँसि जात देखि शशि महताबको २६५॥

दोहा ।

कुंज समै खेलत अली, घेरत आन चकोर ।
हँसत छिपावत बदनको, देखचंदकी ओर २६६॥

पुनः—दोहा ।

प्रफुलित कमल विलोकिकै, भौंर चहै रस लीन ।
कौन शोच जो कान्हने, मोहि कियो लवलीन ॥

कवित्त ।

बालतनु मृदुल मनोहर विशाल सोहै,
उदित प्रभासी छटा छूट छवि छाजी है ।

मणिन जटित शुभ मंदिर अनूप तामे,
अधिक अनंदभरी सुखसो बिराजी है ॥
भनै असकंद छके नयन चकोरनके,
कोटि मैनकाकी गति द्युतिमतिलाजी है ।
मुकुर बिलोकत मुखारविंद जाको मन,
इंदुसम होत देखि सिंधु सम राजीहै ॥२६८॥

दोहा ।

तूरत कली गुलाब सखि, आवदार कर देख ।
मुरकि जात दल लाजवश, सरस आपते लेख ॥

कवित्त ।

मंजन तड़ागपै सहेली लै नवेली चली,
बोली हँसि येरी देख कौतुक सु एक आन ।
घूँघटके खोलत प्रकाश बढ्यो तनु मुख,
शिखर सुमेर तापै चंद्रसो प्रकाश मान ॥
भनै असकंद भई चकही सु त्रासमान,
फूली कुमोदिनी निशापति सुपास ठान ॥

कंज कुम्हिलान भौर भीर भहरान आइ,
प्यारी करकंज पास निपट सुआसमान॥२७०॥

दोहा ।

मानि चंद मुख दंद सों, पंकज रहे लजाइ।
देख सखी ममकरन ढिग, भौंर लुभाने आइ॥

पुनः—दोहा।

क्यों अनखैबो सीखिये, क्यो मन देबो वीर।
हिये चकोरन चंदविन, कौन धरावत धीर॥

मानिनी लक्षण—दोहा।

जो पतिते मिस कौनहूं, त्रिया रहै अनखाइ।
सुकवि वखानत ग्रंथमें, मानवती कहि ताइ॥

कवित्त ।

सौंहेंहो कहत नैन सौंहें कर सौंहें सुनौ,
रूठ आज बैठी तुम कैसी सुखसारमै।
मिल नँदनंदसों अनंदकर आठौ याम,

सीख ठान मेरी छोड़ कुमति विचारमैं ॥
भनै असकंद देखि पावस प्रबल ऐसी,
दादुर टकोरनसों मोरन प्रकारमैं ।
मान छुटिजैहै काम अधिक सतैहै मन,
चैनहूं न पैहै वीर धनकी धुकारमैं ॥ २७४ ॥

दोहा।

पावसऋतु यह है भली, अली न सीख सयान ।
घन घमंड आवै जबै, रहै न हियको मान॥२७५॥

पुनः दोहा ।

तजद निरासयान यह, पिय सों मिलकर चाह ।
देखि चांदनी चंदकी, नीके नेह निवाह ॥२७६॥

दश नायिकाके नाम-दोहा ।

प्रोपितपतिका खंडिता कलहंतरिता नाम ।
विप्रलब्ध उत्का कही, वासकशय्या वाम ॥
फिर स्वाधिनपतिका कहे, अभिसारिका सुहोइ ।

कही प्रव्सतकप्रेयसी, आगत पतिका सोइ ॥
ये दश विधसों नायिका, वरणी नाम प्रमान ।
तिनके कहत उदाहरण,लक्षण सहित बखान२७९

प्रोपितपतिका लक्षण--दोहा ।

विरह विवश व्याकुल रहै, जाको पति परदेश ।
प्रोषित पतिका नायिका, ताहि कहत कवियेश ॥

मुग्धाप्रोपिता यथा उदाहरण–सवैया ।

न खेलै सखीनके संगहूं नेक,सुखानहूं पान न एक सुहात।कहा भयो तोहि सु येरी भटू, हियकी हम सो न कहै कछु बात ॥ भनै असकंद लजात कछू, घनश्याम गये परदेश बतात । भरे दृग वारि सु यों दरशात, मनौ जल में परे है जलजात॥

दोहा ।

खेलत खेल नएकहू, परत अकेली आइ ।
भयो कहा भाभी तुहे, तृण तोरत शिरनाइ २८२ ॥

पुनः बरवै ।

निशिदिन बाल सखिन सग करत विनोद ।
जब सुधि आवति पिय छिन रहत अमोद २८३॥

मध्याप्रोपितपतिका लक्षण ।

उदाहरण—कवित्त ।

कहत न बूझै सखी सांसनपै सॉसभरै,
नीर बढ़ि बरुनीलौं गिरन नपावैहै ।
त्रिविध समीर सीरी झोंकन लगत आइ,
परत न चैन ताहि विरह सतावै है ॥
भनै असकंद अंग अंगन अनंग बढ़ै,
इत उत देखि बाल मन बहटावै है ।
मुख जरदाइ आइ परत दिखाइ मनो,
शीत भानु केसरको लेपन लगावै है २८४॥

दोहा ।

पति विदेश जबते गयो, विरह सतावत आइ ।
व्याकुल होत मनोजवश, बूझत कहत लजाइ ॥

प्रौढ़ाप्रोपितका उदाहरण–कवित्त ।

मदमति मेरे साथ ताही मन मोहनके,
छायो परदेश लई सुधि ना अरीवहै ।
प्रबल प्रचंड घन दिशन दबाये आये,
मदन पठाये आये कोकिला नकीब है
भने असकंद भौर गुंज करै कुंजनमे,
कूक सुन केकिनकी तरसत जीवहै ।
नेकहू न चैन परै सुन सुन याके बैन,
बोलतहै पापि यों पपीहा पीव पीवहै ॥ २८६ ॥

दोहा ।

पिय विदेश हिय मंजु अति,विरह सह्यो नहि जाइ।
काम जगावत टेरकै, चातक सहज सुभाइ २८७॥

पुनः बरवै ।

मन समझावत आवत नेक न धीर ।
जब घन आवत घुमड़त येरी वीर ॥ २८८॥

पुनः सवैया।

तुम आये सँघाती अकेले भले, ललिता उठि बोली उतावरीसी । कबै आवै घरै मनमोहनजू, भरै भौंर सु भाभरे भाँवरीसी ॥ असकंद भनै तुम ऊधो सुनौ, वतियाँये कहौ कछू लावरीसी। प्रिय पीतमतौ कुबजासों पगे, ब्रजकी वनिता भई बावरीसी ॥ २८९ ॥

दोहा।

ऊद्धव तुम कहियो दशा, मनमोहनसों जाइ ।
तुव बँशीकी धुनविना, ब्रजवनसों दरशाइ २९०॥

कवित्त।

आई ऋतु पावसकी घन घहरान लागे,
दिशन दबाइ आये जल बरसाइकै ।
पाई ना खबरहू न मोहन पठाई कछू,
छाई उर प्रीति सौति कुबिजा रिझाइकै ॥
भनै असकंद धौ भुलानी सुधि या ब्रजकी,

दीपक पतंगहूकी लगन विहाइकै ।
कोकिला कलापी शोर करिकै अलापै पापी
कासो कहौ वीर दुख अपनो सुनाइकै २९१।

दोहा।

पावसऋतु आई अली, घन लागे घहरान।
कुबिजावश माधव रहे, रहै सु किमि कुलकान।

बरवै।

अब कासों का कहिये कहिनहि जाइ ।
कुबिजाके रसवशमें रहे लुभाइ ॥ २९३ ॥

पुनःवरवै।

बूंदन सो मग रूंदे ये घन घोर।
विनती पियसों करियो तुमकरजोर ॥ २९४ ॥

परकीया प्रोपितपतिका--सवैया।

गये श्याम विदेश सँदेश न आइ, अधीन भये
कुबिजासो पगे। अब कासों कहो यो व्यथा

अपनी हमतो करि-प्रीति प्रतीत रँगे ॥ अति आइ सुछंद कियो ऋतुराज भनै असकंद सप्रेम पगे। नवकुंजमें गुंजन भौंरलगे औ रसालके झौरन मौर लगे ॥ २९५ ॥

दोहा।

जबते गये विदेशको, पठयो नाहिं सँदेश।
मैं अपने मन को दहौं, कहा देउँ उपदेश ॥२९६॥

बरवै।

घन बरसों दिशि विदिशन लैकर नीर।
आवै पथिक परोसिन होइ सधीर ॥ २९७ ॥

गणिकाप्रोषित—यथा सवैया।

जौन कहौ कर आन दिखावत मेरीही वान सदा निवह्योहै। भूषण अंबर अंगन अंग, शृँगार दये अरु मान सह्योहै ॥ त्यों असकंद भनै सुधि होत, बढ़ै विरहागन याद लह्योहै। मो मन

प्रीतम प्यारो पिया सखि, सोइ विदेशमें छाइ रह्योहै ॥ २९८ ॥

दोहा।

जातपलकपल दिवसनिशि,जनु विधिदिनसमऐन।
मो मन प्यारे श्याम विन, रंचक परत न चैन ॥

खंडिता लक्षण–दोहा।

औरनारिके चिह्नरत, लखै जु निजपति अंग ।
सुकवि बखानत खंडिता, ताहि तेह दुख संग ३००॥

मुग्धाखंडिताको उदाहरण–सवैया।

चंदमुखी सखियानके संग, उमंग सों खेलतती सुखसानिकै। ताहि समै नँदनंद लखे गरे माल विना गुण कीरत आनिकै॥ त्यों असकंद भनै तबते, गयो छूट रहस्यको मोद सयानिकै। और सखीनलौं शोच रही चख भौह कमानन बानसे तानिकै ॥ ३०१ ॥

दोहा ।

कहा देखिकै लालको, बाल रही अनखाइ ।
खेल न खेलै आपनो, वैन कहत सकुचाइ॥ ३०२ ॥
हिय वनमाल विशाल छवि, पर तिय चिह्न निहारि ।
परी सेज प्रीतम सहित, बाल भरे हग वारि ॥३०३॥

मध्या खंडिताका उदाहरण–कबित्त ।

बैठी ब्रजबाल तहां आये नँदलाल भाल,
शोभित अनूपरेख जावक विशालहै ।
टेढ़े पेच पाग पीक लीकहू कपोलनपै,
नैन अलसाने हिये विनगुण मालहै ॥
भनै असकंद ऐसी रचना विचित्र देखि,
दर्पण दिखाय बोली वचन रसालहै ।
हमतौ खुशाल भये निरखि तुम्हारो रूप,
करत निहाल जोपै अधिक निहालहै ॥ ३०४ ॥

दोहा ।

तुमसे प्रीतम पाइके, को न होइ आनंद ।
रूप बनावत नित नयो, करत अनेकन छंद ॥ २०५ ॥

प्रौढाखंडिताका उदाहरण–सवैया ।

तुम प्रीतम प्यारे हमारे सुनौ मन भावती कौन सु ऐसी ठगी । चितदै रतिमें हियसों मिलिकै रसके वशमें भली प्रेम पगी ॥ असकंद भनै अति चौगुनी चाह, हियेमें करै सब रैन जगी । तुम कौनसे ठाम रहे रतियां, बतियां कहिकै छतियांसों लगी २०६ ॥

दोहा ।

पगी प्रेमवश लगी तनु, रही तुम्हारे लाल ।
कौन छबीली छैल तुम, ठगी कौन करि जाल २०७ ॥

परकीयाखंडिताका उदाहरण–सवैया ।

बनी नीकी हिये बिच माल लसी, लखिकै कहा दोप लगाइये जू । यह आपनो भाग है का

कहिये, तुमको तौ नयो रस चाहियेजू ॥ असकंद
भनै अब योंही बनै हमको नहीं नेक सताइयेजू ।
हितसों मन प्रेम किये अतिही, जितरैन जगे
तित जाइयेजू ॥ ३०८ ॥

दोहा ।

भली कपोलनपै लसी, पानपीककी लीक ।
विनगुण माल हिये लसै,गिरै न उरझी ठीक३०९॥

पुनर्यथा--सवैया ।

नेह कियो जबते तबते दिन, औ निशि नेक
हमै न सुहायो।छोड़ दियो सब गेहको काम,सखीन
समाजमें नाम धरायो ॥ त्यो असकंद भनै यह-
रीति, करी हियहार नयो रसपायो । हेत कियो
इतनो तौ कहा, तुमतौ अपनो मन कीन्हों
परायो ॥ ३१० ॥

पुनर्यथा–दोहा ।

हमसों नेह घनो रहै, इतहीको नॅदलाल ।

सरसप्रेम हियमें सुप्रत, राहविलोकत वाल॥३११॥

सवैया ।

कहिये कहा चूक नदान भये, जे नदान सयान गुमान ठये । घर घेर करै सुन मौन रहौ, रजनी जग लाल करैं हगये ॥ असकंद भनै छवि छाजै भली, तुम आये अबै उरमाललये । मनदै हम जॉचे न सॉचे भये, तुम सॉचे भये रॅगरॉचे नये ॥ ३०२ ॥

दोहा ।

हम मनदै जॉच्यो तुम्हे, तुम रॅगराँचे और ।
पी पर होत न आपने, झूठी मनकी दौर ॥ ३१३ ॥

गणिका खंडिताकाउदाहरण–कवित्त ।

धोखेजिन काहूके न रहियो विहारी तुम,
भारी भ्रम जाल यो कहांते लैसॅवारोहै ।
प्यारी यह सबते नियारो यह वातनसों,
कौन नीको प्रेम जोन तुम उर धारोहै ॥

भनै असकंद रूप सरस सम्हारो वेश,
अति चटकारो तोहि लगत न भारोहै।
मानो यह रीत कह्यो देखिये प्रतीत सुनो,
नित उठि कल्पवृक्ष मंदिर हमारोहै ॥ २१४ ॥

दोहा ।

भलो सम्हारो नेहको, वातनसों कर काम।
कहा तुम्हारो नामहै, कल्पवृक्ष मम धाम ॥२१५॥

पुनर्यथा–सवैया ।

का कहिये छवि नीकी बनी, छुट छूटी छटा मुख चंदप्रभातें। सौगुनो रंग चुयोइपरै, प्रिय मालती फूलनके गजरातें ॥ त्यों असकंद भनै हित सों कुछ देन कह्यो, न दियो इतरातें। भूलनकीजो कहूं कबहूं, अब होचुकी श्याम सनेहकी वातें ॥ २१६ ॥

दोहा ।

आये कित मनुहार करि, दै निज तुम मनहार।

छाये छवि रवि उदित लौ, नागर श्याम मुरार ॥

कलहंतरितालक्षण–दोहा ।

कलह करै मानै नही, हिये गुमान बढ़ाइ ।
फिर पाछे पछिताइ मन, कलहंतरिता गाइ ॥

मुग्धा कलहंतरिताकाउदा०–सवैया।

तबतौ लखिनाइ गुमान कियो औ सयान कियो कि बतायो नही। गुण एक न जेतकरे सबरे, मन कौन लईके मनायो नही ॥ असकंद भनै यह कीन्ह्यो कहा, क्षणएकहु ताहि लुभायो नही। अब शोचती काहौ सु येरी भटू, हमसों हँसिबोलती काहे नहीं ॥ ३१९ ॥

दोहा ।

कहा देखिकै श्यामको, मिली न तू भरि अंक।
अब शोचे पाछे कहा, येरी वदन मयंक ३२० ॥

मध्याकलहंतरिता–सवैया ।

कहौ का करिये अब येरी भटू, अपनी कर-

तूतसे ऐसी घिरी।न भई कछु बात न स्वारथकी, न रही कछु मै मति ऐसी फिरी ॥ असकंद भनै पिय आये घरै, पर पॉइन लौटगये सुघरी ॥ अब कैसे मिलै वह प्रेमभरी, रहै तो जसरी औरहै रसरी ॥ ३२१ ॥

दोहा ।

येरी मति बौरी भई, करी कहा अनरीति ।
कलह करायोजौन विधि,वहिविधि अब कर प्रीति॥

प्रौढाकलहंतारिताका उदाहरण—

कवित्त ।

आये नँदनंद प्राणप्यारी ढिग प्रेम किये,
सब विधि मनाइगये बोलीहौ नचाइकै ।
ताही समै आये घन घुमड प्रचंड रही,
केकिनकी कूक सुनै मन पछिताइकै ॥
भनत अस्कंद अंग अंगन अनंग बाढ्यो,
देखत सखी सों कह्यो अति घबराइकै ।

जानतु है रीत बात मेरिये इहालौं अब,
वेगही लिआउ प्राणपतिको मनाइकै॥३२३॥

दोहा।

पॉयन परत न रीझती, पीतम प्रीति सराह।
मान घटावत मान कह, काम बढ़ावत चाह॥
पिया मनायो पॉय परि, मानी न कर सयान।
सखी आपनी चूकलौं, आप परचो पछितान॥

परकीया कलहंतरिता–सवैया।

तजी कुलकान सु रीति सबै, यहप्रीति करी सो हिये इमि ठान। परै न विछोह कहूं कबहूं, सो परचो मति आपनी सो अब आन॥ भनै असकंद फिरै घनश्याम, घरै चलि आये कियो मै अयान। मनायो न नेक लगी पछितान, कहां लै धरौ ये ढिठाई गुमान॥ ३२६॥

दाहा।

धृक उमंग जो प्रीतिकरि, रीति निबाही नाहिं।

करत बनी एको नही, सो अब किमि सियराहिं ॥

दोहा ।

मनमनोजकी मौजमें, खोर लगावत कौन ।
करी कछू बनि ना परी, क्यो रहिये गहिमौन ॥
बरषन नीर लग्यो भटू, घन लागे घहरान ।
काम विकट पहरो लग्यो, हियते छुट्यो सयान ॥

गणिका कलहतरिता—सवैया ।

कहा कहिये बनि नेक परी न, धनी घर आये। कियो मै गुमान । चलेगये एकहू बात करी न, फिरी मति ऐसी लगी पछितान ॥ भने असकंद सुयेरी भटू, तुमहूँनहि रोंकि कियो सनमान । धरापर धूम करी धुरवान, घने घनकारे लगे घहरान ॥ ३३० ॥

दोहा ।

कहा कुमति ठानी हिये, कियो धनीसों मान ।
फीको कर विन आरसी, कासों करौ सयान ३३१॥

विप्रलब्धालक्षण–दोहा ।

केलिसदन पिय विन मिले,विरहविकल त्रिय होइ।
विप्रलब्ध तासों कहै, जे कवि पंडित लोइ ३३२॥

मुग्धाविप्रलब्धाको उदाहरण–सवैया ।

बाल सखीनके संग गई, नव कुंजन खेलन खेल रहस्यको । देखत श्यामबिना वहधाम, रह्यो मन नेक न नेहको चस्यको । त्यों असकंद भनै कहै औ सुनै, दौर इतै उतै बोल अवश्यको ॥ यों कह्यो बैठि निकुंजको वा दिना, काँटो करीलको मोपद कस्यको ॥ ३३३ ॥

दोहा ।

कौन न आयो कुंजमें, सूनी परत लखाइ ।
धोखेसे इमि कहि उठी, रही सुमन सकुचाइ३३४॥

मध्याविप्रलब्धाका उदाहरण–कवित्त ।

कंचन वरण साज भूषण प्रमोद भरी,

मंदगति सुचलि गयंदगति वारी है ।
चंद्रवत आनन सुछंद मनमोजहीते,
संगमें सहेली लिये अधिक पियारी है ॥
भनै असकंद कुंज मंजुल विमल बीच,
चाहकर कहत मनोज मतवारीहै ।
हरी हरी ललित लताननिमे नाह कहूं,
नजर करै तू कैसी नजर तिहारीहै ॥ ३२५ ॥

दोहा ।

नवयौवन बाला लखो, नवयौवनकर चाह ।
कहूं हरी द्रुमलतनमें, अरी देखियतु नाह॥३२६॥
कुंजनमें गुंजन लखे, चञ्चरीकके जाल ।
बिन हरि विरह विवश भई, कियो काम उरशाल ॥

सवैया ।

साजि शृंगार चली नवला, मुकतानकी माल हिये सह गुंजन । देखत आननकी छटा छूट, सुघेरलई है चकोरके पुंजन ॥ त्यो असकंद बढ्यो

हिय काम, सुने मृदु भौर समूहके गुंजन। मंजु-लतासि रही कुम्हलाइ, मिले घनश्याम करीलके कुंजन ॥ ३३८ ॥

दोहा।

निरखि कुंज ब्रजबालवह, गुंजत भ्रमर भुलाइ।
मिले न श्याम विरहविवश, रही सुमन पछिताइ॥

सवैया।

ऐसो भयो न कहूं कबहूं,तुम जा लखो आपनि आँखिन भूलहै। फूल रह्योहै गुलाबके बीच, सु पंकजको मृदु मंजुल फूलहै ॥ त्यों असकंद भनै यह कौतुक, आठहूयाम हिये विचझूलहै। गुंजरहे अलि पुंजके पुंज, सु कुंज अली यह भूल न भूलिहै ॥ ३४० ॥

दोहा।

अरी सुहाई कुंज यह, अब न भूलिहै भूल।
फूलत लख्यो गुलाब विच, पुंडरीकको फूल ॥

विप्रलब्धा प्रौढाका उदाहरण–कवित्त ।

चोप चसकीली भली चाल ठुमकीली भली,
अति छमकीले पगपरत विशालहैं ।
कैसी कटिकिंकिणिकी धुनि अतिप्यारी होत,
तरनतरय्योना कान अधिक रसालहै ॥
भनै असकंद भई भेट ना सहेटहू में,
बालकुम्हिलानी जैसे फूलनकी मालहै ।
आँसू गिरे कुचपै दुईशपै चढ़ाये मनो,
दृगदल पंकजसे मोतिनके जालहै ॥ ३४२ ॥

दोहा ।

थल सूनो लखि छाइ दुख, बहि आँसू कुच आइ ।
जलज जाल दृग कंजजनु,दये गिरीश चढ़ाइ३४३

पुनः–कवित्त ।

लहलही ललित निकुंज द्रुमवेलिनसों,
छाइ छवि मुदित मनोहर महा मजेज ।

तैसी शुभ शीतल समीर धीर सौरभसों,
शोभित समोद शीत भानको उजास तेज॥
भनै असकंद गई विहसत वेग तहां,
कामवश सखिन सहेट तज लाजलेज ।
ह्वैकर रिसौंहे तिरछौंहे कर तीपे नैन,
मंद भइ विवश विलोकि सुख सूनो सेज ३४४

दोहा ।

फूले अनफूले पुहुप, परे अवनि किहि हेत ।
निपट पीव अनरीतियह,विरह काम दुखदेत३४५

परकीया विप्रलब्धा—सवैया ।

रूपवती करके ज्यों शृंगार खड़ीभई गेहके द्वारपै आइके । ताही समै असकंद भनै व्रजनारिन संग लियोहै लिवाइके ॥ प्रीति बसी हियमें घनश्यामकी, आतुरी सों चली प्रेम बढ़ाइके - जाइकै देखत कुंजनमें न मिले, पछिताइ रही ॥ ३४६ ॥

दोहा ।

खेलै खेल सखीन सँग, मन नहि लागत नेक ।
विरह बढ़्यो अतिप्रेमवश,भई न मनकी टेक२४७

गणिका विप्रलब्धा—सवैया ।

प्रेमपगी बतियां कहिकै, रतियां चितमें अति चोप चढ़ायो । सौह दिवाइ हहा करिकै हमै कुंजनकी मग दौरि पढ़ायो ॥ त्यों असकंद भनै मिलिबो ठहराइ भलो यह नाच नचायो । आयो न आप रह्यो कित भूल सु दूसरे हू न मनोरथ पायो ॥ ३४८ ॥

दोहा ।

अपुनमिल्योमीतनमिल्यो,नकरमिल्योकछुआज।
वृथा झूठ बोलत ठगी, करआई सुखसाज॥३४९॥

उत्कालक्षण—दोहा ।

चिंता हिय आयौ नहीं, किहि कारण पिय आज ।

केलिसदन शोचत मनै, उक्ता कहि कविराज२५०

मुग्धाउत्कंठा उदाहरण--कवित्त ।

रजनी व्यतीत युग यामहूं न आये पीव,
प्रकटन लागी यों प्रभात द्युति नीकीहै ।
कैधौ कोऊ बालने लियोहै मन मोहि रहे,
रसवशह्वैके करे ताके मनहीकीहै ॥
भनै असकंद द्वार झाँकत सुछाँह देखि,
कहत सहेली सो न बात मतिहीकी है ।
विरह व्यथाकी कथा गोवत सयानी पर,
कछु कुम्हिलानी देखि चंद्रप्रभा फीकी है२५१

दोहा ।

रजनी चारहु यामलौं, पिया न आये गेह ।
मन पछितात सखीनसो, प्रगट न करै सनेह२५२
झुकत प्रेमवश रुकत नहि, तकत तिरीछे द्वार ।
किहि कारण दृग जलजतव,उझकत पलक निवार २५३

मध्याउक्ताका उदाहरण–कवित्त ।

पथिक निवास कीन श्रमको विनाशकीन,
सुजन शिवास कीन कुंजन गलीनभो ।
पक्षिन सु वृक्षलीन कुलटा सुगच्छकीन,
दीपतन स्वच्छकीन प्रगट अलीनभो ॥
भनै असकंद वेश झिल्ली झनकार कीन,
चीन्हसमै नितको सु चक्रवाक दीनभो ।
अस्ताचलमध्य विवरविको सुलीन देखि,
कमल कलीनभो सु भ्रमर मलीनभो॥३८४॥

दोहा ।

दिवस व्यतीत सु याम युग, भयो विवरविमंद ।
परवशहै हरि हेसखी, रहे और नहि छंद॥३८५॥

पुनःसवैया ।

कबहूं परयंकपै पौढिरहै, कबहूं उठिखोलि किंवारे रहै । कबहूं इतते उत भौन फिरै, कबहूं खड़ी आइ दुवारे रहै ॥ असकंद भनै हियमौज

बढ़ै, तब आपनो गात सम्हारे रहै। मनमोहन
पगी कबहूं, खिरकी लगी बाट निहारे रहै॥ ३८

दोहा ।

इंदु परत फीक्यो लख्यो, बाला मंदिर माँ
घरी घरी इत उत चितै,तकत आपनी छाहिं ३

प्रौढ़ाउक्ता उदाहरण–कवित्त ।

कौन कहो नेकहूँ न आवे बनि कासों कहौं,
तो सिवाइ ऐसी हितू और न निहारिये ॥
भनै असकंद तूतो चतुर सयानी देख,
चंदभयो मंद दुख कौनविधि टारिये ।
काम बढ्यो अधिक न चैन परै एकोक्षण,
नींदहू न आवे जोपै सुरत विसारिये ॥
रजनी व्यतीत होत सौतिन प्रतीत करि,
प्रीतम न आये वीर शकुन विचारिये ॥

दोहा ।

शकुन विचारि कहो सखी, प्रीतमकी रसरीत

बढ़ीअधिक कै छुटी कछु,सौतिनकी परतीत२५९
शरदरैन सुखदैन यह, बिरहजननकी आश।
ज्यों नभसरके कंजमहँ, मधु फँसि रह्यो निराश ॥

परकीयाउक्ति–कवित्त ।

ढूँढ़फिरी कुंजनकी खोर खोर चारों ओर,
नेकहू न पायो खोज सबरस लीन्हेको ।
बैठगई श्रमित सुनैन भरि अंबुजसे,
पायो फल कामकी मवास मन दीन्हेंको ॥
भनै असकंद गईरजनी व्यतीत तापै,
हिये पछितात बही प्रीतिरीति चीन्हेंको ।
मनकी उमंग मैन जानै कित भूलिरह्यो,
दोष कहा दीजिये सुमन वशकीन्हेको॥२६१॥

दोहा ।

हम आनी उर प्रीति अति, श्याम न मानी नेक ।
रैन गई यहि शोचवश,सौतिन करी कुटेक॥२६२॥
सरवर अलिवर मंजुकर, वरतर धर पट वार ।

सुरि अरि हर परखत निडर, भरभर सॉस विहार॥

गणिकाउत्कंठिताका उदाहरण–

सवैया ।

कौनके फंद पऱ्यो प्रियप्रीतम, बीतगई निशि एक घरीसी । मोमन हारगयो निरमोहितें, गोहितें जोरके यों कहैरीसी ॥ त्यों असकंद मनोजकी डोरन नेह जॅजीर बना जकरीसी । कुंजकी खोरनि खोरनमे सुभ्रमै, ब्रजबाल भई चकरीसी ॥ ३६४ ॥

दोहा ।

मो मन हारगयो रह्यो, किह मोहीवश जाइ ।
बार बार सखियानसों, कहै बाल अनखाइ ॥३६५॥

वासकशय्या लक्षण–दोहा ।

निश्चय पिय आवन समुझि, जो त्रिय करत शृंगार ।
सेज रचै हुलसत हिये, वासकशय्या नार ॥ ३६६ ॥

मुग्धावासकशय्याको उदाहरण—कवित्त ।

आवन विलोकि चारु समय मिलाय बाल,
अलि कचकारे लखि मुकुर सुधारे हैं ।
जेहर पगन श्रुति भूषण सम्हार कटि,
किंकिणि विशाल करे नैन कजरारे हैं ॥
पिय मन फाँदिबेको नथको फँदासो रोपि,
भनै असकंद सुख अमित विचारेहैं ।
मोतिनसों माँग ज्यो सम्हारत सहेली निज,
मानों तम फारि उये आवत सितारेहै ॥३६७॥

दोहा ।

जलज अच्छ करकंजसों, गूँधत माँग सँवार ।
मनौं उअत तम फारिकै, तारेबाँधि कतार ॥३६८॥

पुनः—सवैया ।

साजि शृँगार सबै तनुमें, मनमें सुखमानिकै

आनँद दीजो । सागर रूप निहारि गुविंदको, प्रेमप्रवाह सुधारस पीजो ॥ तानि कमानसी भौह-नको भनि, त्यों असकंद यही गुण कीजो । बैनन नैनन सैनन ऐन, सुकाम बढ़ाइ वशी करि लीजो ॥ ३६९ ॥

दोहा ।

सेज साज आनँद करौ, मनसिज हिये बढ़ाइ ।
इमि समुझाइ सखी चतुर, आवन पियहि सुनाइ॥

मध्यावासकशय्याका उदाहरण–

कवित्त ।

सजत शृँगार पिय आवन विलोकि बाल,
डीठ दिये मोहनके पियरे पटानपै ।
तैसे श्रुति भूपण प्रभा कचमें दीप्तवान,
जैसे विज्जुछटा छूट घनन घटानपै ॥
भनै असकंद मंजु अधरन विबवार,
अहिके कुमारवारे लटकी बटानपै ।

भालमध्य बेंदावान पन्नालाल तापै मनौ,
पंचशुक बैठे नवसुंदर अटानपै ॥ ३७१ ॥

वरवै ।

सजे शृँगार नवेली पियहित हेत ।
विहसत सहज सखिनसों सरस निकेत ॥ ३७२ ॥

पुनःकवित्त ।

ठाढ़ी अटापै नँदनंदनके हेत प्यारी,
चंदसों बदन चारु शोभा अति ताकीहै ।
सोहै सुवेश ललित हीरनके हार गरे,
ताके बीच बीच एक लर मुकताकीहै ॥
भनै असकंद मणिजटित तरयोना कान,
भानसे प्रकाशमान उपमा न वाकीहै ।
दृगन चलाकी लाज काम मद छाकी देखि,
चंचलता ताकी मंदगति चपलाकीहै॥३७३॥

दोहा ।

सरस नवेली समुझ मन, पिय आवत ममहेत ।

करि शृंगार साजत भई, नीकी विधि संकेत३७४

प्रौढ़ावासकशय्याका उ०—कवित्त ।

रचि रचि करत शृंगार अलबेली नारि,
मुखकी प्रभाते गयो मंडल प्रभासो भर ।
मोतिनकी माल उर शोभित विशाल जाके,
लालशा हियेमें पिय मिलन कन्हाइ पर ॥
भनै असकंद अति मनमें हुलास करै,
अंबरतरातरसों बैठी परयंकपर ।
भालमध्य बेंदादेत चौंकत चकोर जवै,
चंद भयो मंद औ दिखानलाग्यो प्रभाकर॥

दोहा ।

मिलन मनोहर पीयहित, सजे वसन अँग अँग ।
मुदमदंध झूमन लग्यो,ताको सुमन मतंग३७६॥

पुनःकवित्त ।

कंचनलतासी मै निकासी औ प्रभासी भासी,

मुखछबि खासी दीप्त दीपत मयंकमें ।
बोलत सुधासी अंग भूषण विलासी साज,
मंदिर मवासी लसी सहित निशंकमें ॥
भनै असकंद सुख साइस मनोज भरी,
आनपरी आनँदसो प्यारी परयंकमें ।
एक कर पाटीतर सरक परयो सो मनौ,
अचरजविशेष भयो पंकजन पंकमें ॥३७७॥

दोहा ।

साज परी परयंकपै, प्यारी रूपरसाल ।
हियप्रमोदरतिघनी अति, मिलनचाह नँदलाल ॥

परकीया वातकशय्या–कवित्त ।

तनु सुकुमार मुखछबि अनुहार कियो,
मेरुके शिखरपे सुवास मनइंदुको ।
जमिकर मृदुल सुहाइ अरुणाइ वेश,
केश घुघुरारे वारे वन अरविंदको ॥
भनै असकंद गुँधी वेणीकी नजीर नाहि,

बटन न पाइ ताते गतिका फनिंदको ।
ठाढीयों अटापै घटाहेत लसै दामिन ज्यों,
चाहकर देखै त्यों उछाहसों गुविंदको॥३७९॥

दोहा ।

दामिन घन चाहत जितो, तितो हिये आनंद ।
सजि शृंगार डरपत लखत, सुमग गोकुलानंद ॥

गणिकावासकशय्याका उदा-
हरण–सवैया ।

सजी जेहर जेब नये विधिकी, पग एक मनो-
रथ नेम धरयो । लसती पहुँची करमे मनकी,
शुभ भाँतिन हारहिये पहिरयो ॥ असकंद भनै
डर तेहनिवाह, मनोजके काज शृंगार करयो ।
जब बेंदा लिलाटमें बाल धरयो, रवि ज्यों शशिके
वशआनपरयो ॥ ३८१ ॥

दोहा ।

अँग अँग सजे शृँगार सब, श्रुतिभूपण द्युतिहीन ।

चुंबनलौं लखिआइ पिय, देइ मँगाइ नवीन ३८२

कवित्त ।

आवन विलोकि श्याम साजे तौ शृंगार सबै,
आरसी विहीन कियो करहित लेनके ।
अंबर अतर तर सौरभ प्रबंधनके,
अमित अनूप भूर रतिरस देनके ॥
भनै असकंद किये कंचुकी हरीमे कुच,
उदित प्रकाश मनहरन सुमैनके ।
चंदमुख देखि दबे समिट सुकंज मनौ,
मंजु मंजु जाय तरे पल्लव पुरैनके॥३८३॥

दोहा ।

मिलन मनोरथलेन घन, सजे सुमन रचि सेज ।
बैठी तनु सौरभ सरस, मंदिर मुदित मजेज ३८४

स्वाधीनपतिकालक्षण—दोहा ।

जिहिके नायक वशरहै, तन मन धन कर सोइ ।
कवि कोविद सब कहतहै, स्वाधिनपतिका सोइ॥

मुग्धास्वाधीनपतिका-कवित्त।

पावसऋतु आई यह अधिक सुहाई बीर,
बैनमृदु बोलत पपीहा सुन हॉक हॉक।
पंक भयो मगमें निशंक धुन दादुरकी,
बादर घिरादरसों आये नभ ढॉक ढॉक॥
भनै असकंद निजऔसर विचार छोटे,
बुंदवरवान तान इंद्र धनु बॉक बॉक।
ऐसे में विहारी खड़ो तेरे हेत प्यारी अब,
लखि तू झरोखन ह्वै झुकि झुकि झॉक झॉक॥

दोहा।

भीजत ठाढ़ो नीरमें, बनवारी तुवहेत।
कीन्हों वश रसरूपते, दरश न काहे देत॥३८७॥

पुनर्यथा-सवैया।

अबै मानो कही नहि छेडौ हमै फिर कैसे सुतो जिय धीर धरै। बतियॉ जो कहौ मनमोज भरी, बिनहीके लगे चित कैसे भरै। असकंद भनै

हमसों न करो तुम ऐसी हँसी इतनो न डरै। कहै बाँह की छाँह न पैहौ चहौ, पछितैहौ अबै भजि-जैहौ घरै ॥ ३८८ ॥

दोहा।

पाँइन आइ परै पिया, नेक न करत प्रतीत।
तुम्है कौनने सीख यह, दई अनोखी रीत३८९ ॥

मध्या स्वाधीनपतिका उदाहरण–

सवैया।

वश कीन्हों अनंग भरी सकुचान, दबी मुसक्यानको ताकेरहै। छविसिंधु कपोलन गाढ़परै तिहवार पियासे सुधाके रहै ॥ असकंद भनै हग वारिजहौ हग जोर मलिंदसे वाके रहै। मुखचंद्र-प्रभा लखि थाकेरहै ब्रजचंद चकोरसे छाके रहै ॥

दोहा।

तुव निजगृह प्रविसत भटू, बाहर नंदकिशोर।
हिमकरघनविचछिपत लखि, जिमि पछितात चकोर॥

प्रौढ़ा स्वाधीनपतिकाका उदाहरण—

कवित्त ।

कीन्हीं रति नागर नवेली नटनागरसों,
एकनमें एकरूप अमित सहायोहै ।
बैठे परयंकपै प्रमोद भरे दोऊ आइ,
टूटचो हियहार देखि कौतुक मचायोहै ॥
भनै असकंद लागि वेगही सुधारनसों,
कारण विचार सखी वचन सुनायोहै ।
तुम जो सुधारो प्रिय प्रीतमकी पागटेढ़ी,
नीकी विधि श्याम तौलों सरस बनायोहै२९२

दोहा ।

सजे शृँगार बनाइ सब, अंग अंग तुम चाह
जावक कौन दिवाइहौ, येहो प्रीतम नाह॥२९३॥

पुनः—कवित्त ।

नागर नवेली अलवेलीमें निकासी भासा,

मुखद्युति खासी उपमान मान टारेहै।
चपल कटाक्षनसों मोहनीसी डारि भारी,
मृदु मुसक्यानसौं अधीन कर डारेहै ॥
भनै असकंद व्रजराज आश जक्त करै,
सोई मन आश हिय रहत विचारेहै।
प्रीति चितधारे रहै रूपको निहारे रहै,
वशमें विहारे रहै निशिदिन वारेहै ॥ ३९४॥

दोहा।

जो अलि चाहै दिवस निशि, वोही चाहै लाल।
देखि कंज लाजन दवै, नैनमैनके जाल ॥ ३९५॥

परकीयास्वाधीनपतिका का उदाहरण–सवैया।

जगजाहिर रीति सनेह बुरी, जो लगै हियमें फिर कैसे टरै।निशिवासर चैन परै न कछू,विनदेखे जियो किमि धीर धरै। असकंद भनै व्रजकी

वनिता घरघेर करै मन मेरो डरै। हम नेकहू मानैं न जाव घरै,वृथा कौन तुम्हारी प्रतीत करै॥२९६॥

दोहा ।

श्याम प्रीतिकी रीति यह, कठिन जगत बतरात।
नगर चवाई मन डरै, तुम्है न कछू दिखात २९७

गणिकास्वाधीनपतिकाकाउदाहरण—

सवैया ।

निशि वासर संग बनोही रहै जित चाहिये दौर पठाइये जू । विनमेरे कहे कछु काम करै न, सुक्योंकर दोष लगाइयेजू ॥ असकंद भनै सुख एक बड़ो जो चहै मन वेगही पाइयेजू । हम मान न वासों करै सजनी, हमें सीख न ऐसी सिखाइयेजू ॥

दोहा ।

रहै संग जो चाहिये, वेग देतहै आन ।
कहुसखि ऐसे मीतसों, क्योंकर कीजै मान २९९ ॥

अभिसारिकालक्षण-दोहा।

करि शृंगार विलसन चलै, नायक पहँ चितचाह ।
कै बुलवावै आपढिग, अभिसारिका सराह॥४००॥

मुग्धाभिसारिकाका उदाहरण-कवित्त ।

देखै आज कुंजन में आवो सखी फूले फूल,
या कहि लिवाइ गई आपनेही साखसों ।
घेरीगई कुंजनमे विहँग अनेकनसों,
फिरत मुख भेट भई मोहन कजाखसों ॥
भनै असकंद लखै कौतुक अनूप जबै,
देखो मुख प्यारी तेरो बोली यों मजाखसों ।
इंद्र धनु भ्रुकुटीसों दृगसो मृगी लजाइ,
नव्वेजुगवार जबै ऐंचै पंचशाखसों॥४०१॥

दोहा ।

कुंजन गई लिवाइकै, आइगयो चितचोर ।
खोलत मुख भ्रमवश भये, देख दुचंद चकोर ॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

शोभित अनूप कुंज सागर समेत जहाँ,
लाल गुणआगर नित आवत मंजहै ।
आभा वहांकी छवि वरणी बनाय कैसे,
विरह नशाय नेक रहत नरंजहै ॥
भनै असकद ऐसो उदित प्रवंध तहाँ
कोक पिक चातक मयूरगण खंजहै ।
परश समीर काम सरसत अंग अंग,
गरजत भौर रस वरपत कजहै ॥ ४०३ ॥

दोहा ।

रहे श्यामघन थकित है, नीर अवनि पर डार ।
अलि गरजत कहि साथलै, वरपत कंज अपार ॥

मध्याभिसारिकाकाउदाहरण-
कवित्त ।

अति अनुरागी वाल श्यामके सनेह पागी,
लखि निशि प्यारी देखि हीयके भुलाने दंद।

जाति चली आतुरी सों रूपरत चातुरी सों,
मति करखातिरी सों मनमें हुलासवृंद ॥
भनै असकंद युग तरन तरचोना वेश,
गिरत मही मे एक जान्यो यों गयोहै छंद।
कचकोसराहु ठान अतिभयमान मनौं,
रविमें छिपानो जात पूनोको अरध चंद ॥

दोहा।

जहँ चकोर चौचध मची, खिले फूल शशिरात।
तहँ मग मृगनैनीनके,मनहिय जात लजात४०६॥

प्रौढ़ाअभिसारिकाका उदाहरण–

कवित्त।

अंबर अतर तामें अबर कराये तर,
अति रस मौजभरी यो चली सजीरमें।
विंव लजे कोमल सुधाधर अधर देख,
चौंकत चकोर मुख चदकी नजीरमे ॥
भनैं असकंद करकंजके लखे ते भौर,

दौर दौर आवै कहूँ नेकहूँ न हीरमें ।
कुहै कुहै करत कलापी करि राते नैन,
प्यारी मनमोहनके जुलफ जँजीरमें ४०७॥

दोहा ।

अंवर कर तर अतरसों, चली सुपियहितहेत ।
रोकी विहँग अनेक यहि, पहुँची तदपि निकेत ॥

परकीयाअभिसारिकाका उदाहरण—

कवित्त ।

नवल सनेह सनी रजनी विलोकि घनी,
गैल लई वृन्दावन कुंजलतकानकी ।
भनै असकंद घिरी मोरन चकोरनमें,
नेकहू न वाको रही खवर सयानकी ॥
दौरत मदंध मतवारेसे मलिंद आये,
पंकज समान लखे छवि करपानकी ।
प्यारी मुख चंदचारु देखिवेते मंद भई,
दीप चंदमंडलमें षोडश कलानकी॥ ४०९॥

दोहा।

रवि देखे ज्यों दीप द्युति, दीपहि माहिं दिखाइ।
त्यों मुखदेखे चंद द्युति,छिपी चंद महँ जाइ ४१०

गणिकाअभिसारिकाका उदाहरण—

कवित्त।

कंचन सो वरण मृदुबाला मदनकैसी,
ओढ़िकै दुशाला निज मंदिरते कियोगच्छ।
जात चली मगमें गयंदगति मंद मंद,
देखे मुखचंदकी छिपानी द्युति परतच्छ ॥
भनै असकंद मनहरन मुनीनहूके,
अंबुज अमलदल लोचन सुहाये अच्छ।
मोरपक्ष वारे सँग जाइ मिली रैनि प्यारी,
वातनकी दच्छ औ, सनेहिनकीकलपवृच्छ ॥

दोहा।

जाइ मिली नँदनंदसों, प्यारी हितहि लगाइ।

हिये हज़ारनके हरै, ताहि सुलई रिझाइ ॥ ४१२ ॥

पुनः--सवैया।

रूप अनूप सवाँरि शृँगार, चली मुख पान जमाइ धड़ीनई। जाइकै नेक उरोज छिपाइकै, चोप चढ़ाइ कटाक्ष अड़ीलई ॥ काचहो त्यों असकंद भनै, पियने कह्यो रैन अबै दोघड़ी गई। चौकिकै चारहुँओर विलोकिकै घासकी राशिके पास खड़ीभई ॥ ४१३ ॥

दोहा।

अति सप्रेम पियढिग गई,पिय हित लखिमति ठान।
हीरनको कर हार गहि, खड़ीभईमतिगान॥४१४॥

चंद्राभिसारिकाका उदाहरण–

सवैया।

करके विचार लागी करन शृँगार रूप, रति-अनुहार प्यारी अतिरस मोजमें। हीरन जड़ित

वरभूषण सवाँरि अंग, ओढ़ि श्वेत सारी कसि, कंचुकी उरोजमें ॥ भनै असकंद तैसी कूक कोकिलाकी सुनि, धीरना धिरानी भयो मनवश मनोजमें । ह्वैकै अनंद नँदनंदनसों मिलन चली चंद्रकी विशाल देखि कौमुदी मनोरमें ॥ ४१५ ॥

दोहा ।

इंदुकौमुदी मंदह्वै, रही चंदमुख पेख ।
चकित चकोर भये हिये, मगदुचंद अवरेख४१६॥

कबित्त ।

मंजनके खंजनसे नैननमें अंजनदै,
मुनिमनरंजन मनोज मतवारी है ।
अंग अंग हीरनके भूषण सवाँरिवेश,
अलक सुधारि वेणी वनक सँवारी है ॥
भनै असकंद हिये अधिक प्रमोद भरी,
आली लै निशंक संग भौर भीर भारी है ।

ओढ़ि नीलसारी तैसी रैनि अँधियारी चली,
जाति बनवारीपै सुश्याम घटावारी है ४१७॥

दोहा ।

निशि अँधियारी रैनिमें, प्यारी मदन अधीन ।
जात चली आली सहित, वारिरँगमें लीन ॥ ४१८॥

दिवाभिसारिका–कवित्त ।

हेतनँदनंदनके अधिक अनंदभरी,
जात चली कुंजनमे हंसिन लखे लजात ।
वदन अनूप रही छविकी छटासी छूट,
भूपण प्रकाश लसै शोभित प्रसन्न गात ॥
भनै असकंद होत नूपुर मधुरधुनि,
जेहर जटित मणि कौतुक सु यों दिखात।
अरुण विशाल पग जहँ जहँ धरै प्यारी,
हाथ तीन चारकलौ चूनरसा होतजात ॥

दोहा ।

मणिनजटित जेहर लसै, भलो मिल्यो सतसंग ।

धरत अरुण पग जहाँ जहँ, होत चूनरी रंग ॥

पुनः-कवित्त ।

प्यारी रसरंगमें विनोद भरी आनँद सों,
जात चली मानो मत्त गयंद लजातीहै ।
चकित चकोर भौर अवली सुचारों ओर,
भनै असकंद मुख मोरि रुकिजातीहै ॥
करन तरयोननकी अमल कपोलनपै,
द्युतिवरपालि परे अधिक सिरातीहै ।
वरण छिपाइ मनौ दिनकर किरण आइ,
मंजुल विमलकंज परस विलातीहै ॥ ४२१ ॥

दोहा ।

करन तरयोननकी झलक, परत कपोलन जाहिं ।
मनो तरनकी किरण मृदु, पंकज परस सिराहिं ॥

प्रवस्तक प्रेयसी लक्षण-दोहा ।

सुनै गवन पतिकोकिलखि, परदेशहिको जाइ ।
कहत प्रवस्तक प्रेयसी, होइ विरहदुख ताइ ४२३

॥

मुग्धा प्रवस्तकको उदाहरण–

कवित्त।

जबते सुनीहै तुव चलन विदेश बात,
खानपान हँसन बतानहूं बिसरिगो।
हरिगो प्रमोद सखियान संग खेलै जौन,
भरिगो दृगन वारि बरुणी ठहरिगो॥
भनै असकंद लाज विवश कहै न बैन,
कामवश वाको मन तेरही वगरिको।
कान्ह चलिदेखौ वह फूलकैसी मालवीच,
गवन तिहारो कामशरसों निकरिगो॥४२४॥

दोहा।

भरी परी पीरी कहा, पिय न जात सुन बात।
ोरी सुख साहस भरी, देरी देख लजात॥ ४२५॥

मध्याप्रवस्तक प्रेयसीका उदाहरण–

सवैया।

कान्ह चलो चहै द्वारकाको सुनि राधिकाके

उर पीरसी वाढ़ी। भूलगई सबै अंग शृँगार, तरंग अनंग उठी अतिगाढ़ी ॥ मालिन लाइ गुलाबकी माल भनै असकंद सम्हारके काढ़ी। मेलिदई पियके हियमे चख जोरत मोरत ह्वै रही ठाढ़ी ॥ ४२६ ॥

दोहा।

है जबते देख्यो कह्यो, अधिक बढ़ायो हेत।
नैनन नैन मिलाइकै, झोरमोरको देत ॥ ४२७ ॥

प्रौढ़ाप्रवस्तकप्रेयसी–कवित्त।

बकवर पुंजदेखो उड़त अकाशहूँलौं,
बिटप पहाड़पै मयूर कूक दरसै।
पापीयो पपीहा पिय आगम सुनायो आइ,
बोल कोकिलाहूके सुधासमान सरसै ॥
भनै असकंद ऐसी पावस प्रबल देखि,
निकसै न कोऊ कहूँ आपनेहू घरसै।
अबतौ पयान परदेशको न कीजै कंथ,
मेघमतवारे ये झलापै झला बरसै ॥ ४२८ ॥

दोहा।

बोलत मोर पपीहरा, वैन सुअति मदजोर।
वरसतहै घनघोर ये, चलत समीर झकोर ४२९॥

परकीया प्रवस्तकप्रेयसीका उहाहरण–कवित्त।

अंक भरि पौढ़े परयंकपर दोऊ आइ,
शंक कर बाल हिये अति सकुचातिहै।
वंक कर सैन औ निशंक क्षणएकहूना,
रसवश ह्वैकै कछु कछु अलसातिहै॥
भनै असकंद देख रजनी व्यतीत पीत,
पट पियराइ देखि मन पछितातिहै।
ज्यों ज्यों रविमंडल प्रकाशमान होत त्यों त्यों,
प्यारी मुखचंदपै ललाई होतजातिहै॥

दोहा।

बोलउठी तिय पीवसों, भरिदृग वारिज नीर।
तजि विदेशको गवन अब, परिहरण बेपीर ४३१॥

परकीयाप्रवस्तकप्रेयसी–कवित्त ।

आई ऋतु पावसकी अधिक सुहाई चलै,
पवनझकोरै कूक कोकिला सुनावैहै ।
मधुर मयूरनके वचन सुहाये सुनि,
हिय हुलसात जिय प्रेम सरसावैहै ॥
नेहको लगाइकै विदेशको न कीजै गौन,
भनै असकंद दूंददादुर मचावैहै ।
झूम लागी मुदित धरापै धुरवान धूम,
उमड़ घुमड़ घन घुमड़त आवैहै ॥ ४३२ ॥

दोहा ।

तुव पिय जात विदेशको, क्यों नहिंरोकति बाल ।
पावसऋतु आवत भट्ट, मदन करैगो शाल॥ ४३३

पुनःसवैया ।

प्रोषित एक पियाहित लागिकै धावन वेग विदेश पठायो । फूलकली धरी पत्रिकामें, रसरूप

दोहा।

बोलत मोर पपीहरा, बैन सुअति मदजोर।
बरसतहै घनघोर ये, चलत समीर झकोर ४२९॥

परकीया प्रवस्तकप्रेयसीका उदाहरण–कवित्त।

अंक भरि पौढ़े परयंकपर दोऊ आइ,
शंक कर बाल हिये अति सकुचातिहै।
वंक कर सैन औ निशंक क्षणएकहूना,
रसवश ह्वैके कछु कछु अलसातिहै॥
भनै असकंद देख रजनी व्यतीत पीत,
पट पियराइ देखि मन पछितातिहै।
ज्यो ज्यो रविमंडलप्रकाशमान होत त्यों त्यो,
प्यारी मुखचंदपै ललाई होतजातिहै॥

दोहा।

बोलउठी तिय पीवसों, भरिदग वारिज नीर।
तजि विदेशको गवन अब, पीरहरण वेपीर ४३१॥

परकीयाप्रवस्तकप्रेयसी-कवित्त।

आई ऋतु पावसकी अधिक सुहाई चलै,
पवनझकोरै कूक कोकिला सुनावैहै।
मधुर मयूरनके वचन सुहाये सुनि,
हिय हुलसात जिय प्रेम सरसावैहै॥
नेहको लगाइकै विदेशको न कीजै गौन,
भनै असकंद दूंददादुर मचावैहै।
झूम लागी मुदित धरापै धुरवान धूम,
उमड़ घुमड़ घन घुमड़त आवैहै॥ ४३२॥

दोहा।

तुव पिय जात विदेशको, क्यों नहिंरोकति बाल।
पावसऋतु आवत भटू, मदन करैगो शाल॥ ४३३

पुनःसवैया।

प्रोषित एक पियाहित लागिकै धावन वेग विदेश पठायो। फूलकली धरी पत्रिकामें, रसरूप

षसंतको ताहि जतायो ॥ त्यो असकंद भनै ब्रजमें, षनितानके मोद हिये अति आयो। हँसि परोसिनकी सबलै, सुपरोसिन एक वृथा दुख पायो ॥

टीका-दोहा।

भेजै जाहि विदेशको, तासों नेह नवीन।
ताके विरहविछोहते, भई परोसिन दीन॥ ४३६॥

गणिका प्रवस्तक प्रेयसी उदाहरण-सवैया।

कहा कहिके समुझैये तुम्हे रसरीतिको जानत मानतै हैन। मिलै करमें करतो कहे यों परदेशको गौन करै अरे तैन॥ भनै असकंद सुएक घड़ी कहूँ तोबिन मोहि परै नहि चैन। रही मनकी मनमें सुकहै, न मिलाइ रही त्रिय नैनसों नैन॥

दोहा।

प्रीतम जात विदेशको, कब ऐहौ सुखदैन।
मनकी मनही में रही, कहि कर सौहै नैन ४३७॥

आगत पतिकाका लक्षण–दोहा ।

पति आवै परदेशते, खुशी होइ अँग अंग।
आगतपतिका नायिका, ताहि कहै रसरंग४३८॥

मध्या आगतपतिका का उदाहरण–कवित्त ।

आवन सुनि आली वृषभानुकी दुलारी ढिग,
आइ कह्यो आये सुन प्रीतम तिहारेहै ।
तौलों जुरिआई ब्रजगॉवकी लुगाई और,
वेऊ चल ताही छिन आनिकै विहारेहै ॥
भनै असकंद श्यामा सखिन समाज बीच,
जाके मन अमित मनोरथ सिहारेहै ।
कछु कछु लाजभरी चाह करै देखै मुख,
जैसे निशि होत भौर पंकज निहारेहै॥४३९॥

दोहा ।

नवलवधू पिय आगमन, चरचा सुन सुन कान ।

हिय हरपत परखत नमन,परखत सुमन कमान॥

बरवै ।

सावनमें मनभावन आवनकीन ।
गावन लगी सुहेलिनि लखौ प्रवीन ॥४४१ ॥

मुग्धा आगतपतिकाका उदाहरण–सवैया ।

रहे खेलत संग सखीनके आइ कहूं यह बात सुनाइ दई । चलिआये विदेशते वैन सुने निज-मंदिर वेगही दौरिगई ॥ असकंद भने कछु चातुरीसों, पटकीकरि ओट प्रमोदमई । पियको मुख देखत बाल नई भय लाज भरी सकुचात भई ॥

दोहा ।

पति आयो परदेशते, चली भौनविच आइ ।
पटहि ओट देखत मुखहि, धरकन हिये समाइ ॥

प्रौढ़ा आगतपतिकाका उदाहरण—

कवित्त ।

धावन पठायो पिय आवन सुनायो आइ,
निज कर लेख दियो काहि सुख चाइकै ।
लखिकै मृदुलमंजु कंजते नवीन पान,
ताते गहिलीन्ही अतिप्रेम सरसाइकै ॥
भनै असकंद शुभ शकुन पुनीत मानि,
मंदिर में लायो चौक मोतिन पुराइकै ।
प्रफुलित गात भये उन्नत उरोज दुवो,
पत्रीको पढ़त अलि मृदु मुसक्याइकै ॥ ४४४ ॥

दोहा ।

पिय आवनकी खबर शुभ, बाँची चतुर सयान ।
बाहर मोद सुचौगुनो, हिये सौगुनो आन ॥ ४४५ ॥

परकीयाआगतपतिकाका उदाहरण—

कवित्त ।

आये घनश्याम द्वारकाते ब्रजगोकुलमें,

छायो वृषभानु भौन आनँद महारी है ।
इत उत गोपीगण दौरेफिरै खोर खोर,
मोतिनसों एक एक भरि भरि थारी है ॥
भनै असकंद तहाँ एक व्रजबाल लिये,
कंचनकलश भई सबते अगारी है ।
पगपै बढ़तजात दूनी द्युति आननकी,
राधाते अधिक ताके उर सुख भारी है॥४४६॥

दोहा ।

आयो पीव विदेशते, कोउ आपने गेह ।
कहूँ कौनहूँ बालके, बढ्यो चौगुनो नेह ॥ ४४७ ॥

बरवै ।

मनभावनको आवन सुनि शिरनाइ ।
रही शोचवश सजनी सखिन छिपाइ ॥ ४४८ ॥

गणिका आगतपतिकाका उदाहरण–

सवैया ।

सौह करे कहौ है सुनियोसुधि होत कहूँ कबहूँ

सुख पाये । कंज समान नये नये पान, सुपीत भये किहि नीत सुहाये ॥ त्यों असकंद भने बतियाँ, कहो चीज प्रवीण कहा इत लाये । जौन दिनाते गये परदेश, सुकौनसी ठौर कहाँ ह्वैकै आये ॥ ४४९ ॥

दोहा ।

आयो मित्र विदेशते, आनँद उर न समाय ।
मोतिनमाल उतारिकै, मिली न सुख कहिजाय॥
त्रिविध कहीं ये नायिका, जे कवि चतुर प्रवीन ।
प्रथम उत्तमा, मध्यमा, अरु अधमा गुणहीन४५१॥
नाह करै अनहित तऊ, आप करै हित नार ।
ताहिउत्तमा कहत हैं, जे कबि बुधि आगार॥४५२॥

उत्तमालक्षण उदाहरण-कवित्त ।

रजनी व्यतीत होत आये घनश्याम जहाँ,
परत्रिय संग सोई नवलकिशोरी है ।
आनँदकरि लीन्हों अति प्रेमकी तरंगनसों,

कामकी उमंग बढ़ी देखि छवि भोरी है ॥
भनै असकंद दियो अंबर अतर तर,
बोली पिय पोंछो तो कपोलरेख रोरी है ।
पौढ़ि परयंक श्रम खोवो क्षण एक कल,
नैन अलसाने रही रैन अब थोरी है ॥ ४५३ ॥

दोहा ।

बसेवाम अनुरागवश, खोवनदे श्रम जोर ।
इाहा सखी न जाइयो, श्याम बड़ेही भोर ॥ ४५४ ॥

मध्यमा लक्षण–दोहा ।

पिय हितकर हित जो करै, अनहित करै गुमान ।
ताहि मध्यमा कहत है, जे कबि बुद्धिनिधान ४५५॥

मध्यमाका उदाहरण–कवित्त ।

आये रसरंगमें विनोद करे घनश्याम,
हरष विलोकि बाल तिरछी चितैरही ।
सौह करि बातनसो लीन्हों है मनाइ कान्ह,
कामद्युतिवेशमान मतिको वितैरही ॥

भनै असकंद जोरि सौंहै दृगवारिबुंद,
तेवे प्रमुदित घन वरप रितैरही।
भौंहै चढ़ी उतरानिचौंही भई प्रेमभरी,
लालन वकोंही ज्ञरि हितमें हितैरही ॥४८६॥

दोहा ।

प्राणपियाके मोहके, सुनि सुनि वचन अमोल।
रूप दरश आधीन भे, दृग अलगरजी लोल ॥
नायकके हितहूं करे, करै गुमान जुवाम ।
ताको अधमा कहतहै, जे कवि रस अभिराम ॥

अधमाका उदाहरण–कवित्त ।

तेरी सौंह मोसों यों कहायो जो सुहायो लगै,
दीजो कहि येरी प्रीति करिकै नशाहनै ।
तुव मुखचंदको चकोर मन मेरो रहै,
समुझ इतेक और नेकहूं सलाहनै ॥
भनै असकंद कहै मुदित रिसौ है वैन,
तोको का परीहै मोहि अपनी निवाहनै ।

सौतविन पाँइन परेहू जो मिलैगी आइ,
एक वेर येरी फिर दूजी वेर नाहिनैं ॥ ४८९ ॥

दोहा।

पिय आये हित अति करयो, गरे लगाय लगाय।
तदपि कहे रूखे वचन, नैनन मनसकुचाइ ॥

अथनायकलक्षण–दोहा ।

मोहिजाइ त्रैलोक लखि, जासु रूप आगार ।
कवित गीतरस लीन जो, नायक कह्यो विचार ॥

नायकका उदाहरण–कवित्त ।

सोहै शीशक्रीट वारौ मारतंड मंडलको,
वारौ पट पीत विज्जु मुक्ता रदनपै ।
कुंडल कपोलनपै समरनिशान वारौ,
अधरन बिंब वारौ पल्लव पदनपै ॥
भनै असकंद अंग अंगपै मदन वारौ,
मेचक सुधन वारौ रूपके सदनपै ।

अलक मलिंद वारौ दृग अरविंद वारौ,
इंदु वारौ कोटिन गुविंदके वदनपै ॥ ४६२ ॥

दोहा ।

रूपसिंधु घनश्यामको, वनितनकी मनमीन ।
केलि करत निशिदिन रहे, त्यो असकंद प्रवीन ॥

पतिनायकका लक्षण–दोहा ।

विधिसों व्याह्यो पति समुझि,उपपति परत्रियचाह।
वैसिकहित गणिकानसों, नायक त्रैकविनाह ४६४

पतिनायककोउदाहरण–कवित्त ।

जादिनते व्याह भयो राधिका नवेली सँग,
तादिनते गेहद्वार देहरी लखीनही ।
भीतरही भौनके सनेहवश आठौ याम,
करत प्रमोद देख वदन मयंकही ॥
भनै असकंद धरै मुरली अधर नाहि,
पगजहँ धर्त प्यारी मनसों धरै तहीं ।

जैसे अरविंदको मलिंद मतवारो रहै,
तैसही गुविंद चाह करत निशंकही ॥ ४६६॥

दोहा।

जादिनते गौनो भयो, तादिन ते नँदलाल।
भूलगये लखि रूप तुव, ग्वालबाल वनमाल॥
सोपति कहिये चारविध, अनुकूलहि सुवखान।
दक्षिण धृष्ट सुशठ कह्यो, चारभांति यहिवान॥

अनुकूलपतिलक्षण-दोहा।

सुवश आपनी तीयके, जोपिय रहत हमेश।
ताहि कहतअनुकूलहै,कवि असकंदनरेश॥४६८॥

अनुकूल पतिकाकोउदाहरण-कवित्त।

हँसि अनुकूल शुभ शोभित सुहोदकूल,
ह्वैमन मोहित मृदुवातन सुदूनो दूनो।
कंजकर कलित सनाल पद्मदेखे दुवो,
हार उरमोतिनको प्रसित सुदूनो दूनो॥
भनै असकंद व्रजचंद सुखमोद भरे,

नितप्रति ध्यानधरे रहत सुदूनो दूनो ।
मुखसों कलानिधिसों स्रवत सुधारससों,
सुमिस चकोर नेह करत सुदूनो दूनो॥४६९॥

दोहा ।

दूनो दूनो करत नित, नेह नवीनो नाह ।
वदन सुधाधर लखिरहै, ह्वै चकोर चितचाह॥४७०॥

दक्षिणलक्षण-दोहा ।

बहुत तियन सों होइ जो, एक रीति सम प्रीत ।
तासों दक्षिण कहतहै, जे कवि सुमति पुनीत ॥

दक्षिणकाउदाहरण-कवित्त ।

खेलनको होरी [illegible] [illegible] [illegible] सबे-
भोरी छबिदेख [illegible] अनन्दसुकंदहै ।
देखत कुसुमरंग [illegible] गुलाब [illegible]
करि सरबोर [illegible] आनदके कंदहै ।
भनै [illegible] [illegible] मैन मवहीं [illegible]
झोगिन [illegible] [illegible] करि [illegible]

गोपिनके वृंद वीच सोहै व्रजचंद जैसे,
सुमन कुमोदिनीमें समुदित चंदहै ॥ ४७२ ॥

दोहा ।

चंदमुखी हुलसी हिये, भई प्रेमसरवोर ।
एकनजरह्वै लखि रहे, श्रीव्रजचंद चकोर ॥४७३॥

पुनर्यथा--कवित्त ।

राँची रसरग भगी रासकेलि मडलमें,
प्रतिप्रति आनँदसों होतफिरै वारियाँ ।
वेऊ अति मदन मदंध मतवारेघने,
इत उत देखत चलावत नजारियाँ ।
भनै असकंद वैसी प्रेमकी तरंगनिमें,
टूटे फूलहार देखि तज फुलवारियाँ ।
बीनौं कहि सुमन सुहाये मनभाये सबै,
हरष हलादई कदंमकी डगारियाँ ॥ ४७४ ॥

दोहा ।

उतर सुमन लैकर गुथे, एकडोर नँदलाल ।

पहिरावे ब्रजवधुनको, बनक बनाई माल॥४७५॥

धृष्टलक्षण–दोहा ।

नेक नमानै दोष करि, शंका लाज करैन ।
धृष्ट आपने काममें, धीरजनेक धरैन ॥ ४७६ ॥

सवैया ।

मानै न नेक कहूँ विध सौं मैं, हजारक बेर रहीहौं मनेकर । तापर येती कुटेक न लाज, धरै हियमें तू रहै तिय सोंपर ॥ त्यों असकंद भनै उतजाव, जहाँ तुम नीको सनेह रहे कर, ऐसो निशंक दयो झझकार इते कहू बातपै अंक लियो भर ॥ ४७७ ॥

दोहा ।

रमिआयो परतीयसों, घर आयो किहि राह ।
कौन काम इमि वैन सुन,अंक भरयो करचाह४७८

शठलक्षण–दोहा ।

अपने कारजके लिये, कहै रसीले वैन ।

निपट कपट युत शठ सही, वर्णत कवि बुध ऐन ॥

सवैया।

इंदु लसै मुखकंज कपोल पै, बैनन फूल झरैं मृदुवानसों। मान करै असकंद भनै, तुम कापर तानती भौंह कमानसों ॥ मै कब येतो कियो अपराध सुबूझले तू सखा औ सखियानसों। हाहा हमारी विनै सुनि देखि, सुनेक मनोज भरी अँखियानसो ॥ ४८० ॥

दोहा।

कब कीन्हों अपराध मै, बोलत बोल रिसाइ।
पार हियेके होतहै, मदन बाणसम आइ ॥ ४८१ ॥

उपपतिलक्षण–दोहा।

परनारीको रूप लखि, वश्य होइ अँग अंग।
उपपति तासों कहतहै, कविजन सहित उमंग ४८२

उपपतिका उदाहरण–कवित्त।

मेरे फाँदिवेके मणिफंदाही बनायराखे,

हिय हुलसावै सदा नेहकी निशाकरै ।
प्रेमकी पगीहै रसरंगकी रँगीहै जाइ,
श्रवन लगी है रतिरणकी सलाकरै ॥
भनै असकंद यंत्र मंत्रकी पढ़ी है किधौं,
अधरसुधारसके कारण झुकाकरै ।
ज्यों ज्यों प्राणप्यारी मृदु हँसति बताति त्यों त्यो,
डोलती अमोल ये कपोलनपै साकरै ॥ ४८३ ॥

दोहा ।

ह्वैकपोल पै डोलती, हँसत साँकरे वेश ।
अधर सुधारसको झुकै, काम दियो उपदेश ४८४

वैसिकलक्षण–दोहा ।

जो चाहै अतिप्रेम सों, वारवधून विलास।
ताको वैसिक कहतहै, कविमत सरस हुलास॥

वैसिकका उदाहरण–सवैया ।

भूषण अंग विशाल बने, बहुरंग घने अति–

चातुरी बानसों । रागहिडोल अलाप रही, सुन मोहन मोहिगये वहि तानसों ॥ त्यों असकंद भनै लखि यौवन, तीक्षण नैन लगे ललचानसों । वारदियो मन औधन धाम, धनीवन वारवधूनकी आनसों ॥ ४८६ ॥

दोहा ।

तेरे देखत अंग अँग, मन अनंग बढ़िजात ।
वारविलासिन धन्य तुव, चपल चातुरी बात ॥

दोहा ।

तीन प्रकार विचार कर, नायक और उचार ।
मानी वचन चतुर कहै, क्रिया चतुर निरधार ॥

मानीलक्षण-दोहा ।

तिय सयानि लखि मान जो, नायक करै गुमान ।
मानी नायक कहतहै, कवि जे बुद्धि निधान ॥

मानीउदाहरण-सवैया ।

कहे मानिये मान कहाँलौं रहै, यह छोड़ि

दोहा।

सुख समूह शोभा अमित, नैन मनोभवफंद।
तज चलिये छलछंदको, चंद उदित ब्रजचंद ॥

कवित्त।

चल ब्रजचंद प्यारे प्यारीने बुलाये तोहि,
मोहि मन लीजे पै न कीजे मान हीको है।
जीको सुख अमित विचार अवनीको भलो,
फीको पर्‌यो इंदु भयो याम रजनीको है॥
भनै असकंद चाह चौगुनी विलोके बढ़ै,
अधर सुवास जाके रहत अमीको है।
सौत मदगंजन मुनीन मनरंजन,
सुनैननको अंजन विशाल कामिनीको है४९४

दोहा।

तोहि मनावत हीगई याम यामिनी बीत।
मान तहाँलौ कीजिये, करै न दूजो नीत॥४९५॥

पुनर्यथा--कवित्त।

मंदिर सुधाको प्रेम जीव वसुधाको भूप,
कुंदकलिकाको रूप तमकी प्रभाकोहै ।
हरत व्यथाको भाषि सकत कथाको जाके,
गुणनगथाको शेप कहि कहि थाकोहै ॥
भनै असकंद कोकनदकी समाको स्वच्छ,
सरस कताको ताकी विधि कविताकोहै ।
पूरण कलाको ऋद्धि सिद्धि संपदाको धाम,
कीरतिसुताको चंद्रमासों सुखताकोहै ४९६॥

वचनचतुरलक्षण—दोहा।

वचननकी रचनानसों, जो तियवश करिलेइ ।
वचन चतुर नायक कहै, ताको कवि मत सेइ ॥

वचन चतुर नायकका उदाहरण—कवित्त।

बोलत मयूर मतवारे पुंज पुंज जहाँ,

सघन अँधेरी लखि आनँद सदरमै ।
झूमिझूमि रहीं लता कदम डगारनमें,
घूम घूम रही भूमि चूमकर लरमै ॥
भनै असकंद देखि चौचद लगत तहाँ,
मेरे साथ जात सोतो नेकहू न भरगैं ।
करमें विचित्र काम रेसमकी डोरिनसों,
डारचोहै हिंडोरा कोक चातकवगरमै॥४९८॥

दोहा ।

हौ प्यासो हौ देरको, तूचंचल पनिहार ।
द्वै गागर भरदे हमै, धरदे घरके द्वार ॥ ४९९ ॥

क्रियाचतुरनायकलक्षण—दोहा ।

जहाँ कौनहू क्रिया मिस, देखत वशके नाह ।
चतुराई करि तिय मिलै, क्रिया चतुर कहिताह ॥

क्रियाचतुरउदाहरण—सवैया ।

एक समै वनिता सब आइ चली शिवपूज-
नहेतु लिवाइकै । पाइकै अवसर पूरो भलो तहाँ,

आइगये हरि होरी मचाइकै ॥ धाय गह्यो करसों करजाय,भनै असकंद सुभागी छुड़ाइकै । आनन पै कच आनिपरे मनो इयामघटामे छिप्यो शशि जाइकै ॥ ५०१ ॥

दोहा ।

रोरीकर धाये हरी, गोपीगण बिच बाल ।
मृदुल अमोल कपोलपै, मल्यो गुलाल गुपाल ॥

पुनः–सवैया ।

व्रजबालको सुंदर रूप अमोल, विलोकतही विनमोल बिक्यो । छलसो नँदलाल अबीर लये मुसक्याइ गह्यो नहि नेक रुक्यो ॥ गलबाही लई मुखमीजिबेको असकंद भनै ज्यों प्रबीन झुक्यो । बरजोरी छुड़ाइभगी सो मनौ शशिमदिर भीतर जाय लुक्यो ॥ ५०२ ॥

दोहा ।

लै अबीर नँदनंदनै, कर गहि लीन्ह्यों धाय ।

चह्यो लगावन वदन पर, राधा भगीं छुड़ाइ५०४

प्रोपितपतिकाका का लक्षण ।

पुनर्यथा--कवित्त ।

मंडल रहस रच्यो श्यामा श्याम मोद मान,
गोपीगण बीच मानो मदन सुरतहै ।
बाढ़त सरस रस सबहीके अंगनमें,
प्रेमके तरंगनमें आनँद जुरतहै ॥
भनै असकंद खेलमाहि चन चोर रच्यो,
मूंद दृग एक छिप भागत तुरतहै ।
छूवत परस्पर हेरहेर कुंजनमें,
चोर करै राधिकाको सबमिल दुरतहै ॥५०५॥

दोहा ।

बार बार राधा बनै, चोर करै घनश्याम ।
हमै छुवननहिपाइहौ, तुम अति चंचल वाम ५०६

प्रोषितपतिकाका लक्षण नायक–दोहा ।

जोविदेशमें विरहवश, नायक होय अधीन ।

नायकप्रोषित सोइकह, जे पंडित परवीन॥५०७॥

उदाहरण-कवित्त ।

कारे कारे घन घहरान लागे मंडलमें,
होनलागी, मोरनकी कूकें ये चहूँवा ओर ।
झिल्ली झनकार लागे दादुर पुकार लागे,
धुरवा धुकार लागे करन मचाये शोर ॥
भनै असकंद ऐसे समय लतानमें,
डारिकै हिंडोरा अरु गोपीगण लेतोजोर ।
झूलतो प्रमोद भरो जो पै मानिलेतो कहो,
जातो ना विदेश तौ न विरह बढ़ातो जोर५०८

दोहा

मेरेई मन भावती, इकटक निकट निशंक ।
हगचकोर कब देखिहौं, राधावदन मयंक॥५०९॥

अनभिज्ञनायकलक्षण-दोहा ।

चाहै जो न त्रियानकी, प्रेमकरी ५..

ताहि कहत अनभिज्ञहैं, राखै मनकी जीत५१०॥

अनभिज्ञकाउदाहरण–कवित्त ।

इत उत आय देत बीरिहू खवाय वेश,
मृदु मुसक्याय बातै रसकी करचोकरै।
मन मुसक्याय नैन सैनन चलाय श्याम,
भनै असकंद छाती छुवत गह्योकरै ॥
हाव भाव जेते ब्रजबाल करै देखि देखि,
हिय ललचाय चाय निकट रह्यो करै।
राधिका नवेली कौन जाको पति ऐसो मिल्यो,
रतिको न बूझे और आनँद चह्यो करै॥५११॥

दोहा ।

जतनकियो बहुविधि भटू, सरस मिलनके काज।
तऊ न बूझै बात वह, कैसो है ब्रजराज ॥५१२॥

दरशन निरूप्यते–दोहा ।

श्रवण चित्र अरु स्वप्न कहि,प्रगट प्रत्यक्ष विचार।
आलंबन शृंगारते, दरशन चार प्रकार॥५१३ ॥

श्रवणदरशनलक्षण–दोहा।

कानन सुन मन होतहै, जाको भान समान।
ताहि श्रवण दरशन कहत, आलंवित रसखान ॥

स्वप्नदरशनकाउदाहरण–कवित्त ।

तनु घनश्याम कान कुंडल दिपत भानु,
मुख शशि चारु काम फवनि फवै रह्यो ॥
भायो मनमोर मोर चंदहू चकोर ऐसो,
रतसमहैके उर आनँद मढ़ै रह्यो ।
मन असकंद व्रजराजको सलोनो रूप,
सरस अनूप जाल छवनि वढ़ै रह्यो ।
तेरे मृदुवैन मेरे श्रवण सुधासे परे,
वरवश आप दौरि दृगनि हिते रह्यो ॥५१५॥

दोहा ।

मृदुल मनोहरतनु सुघन, श्रवण परत तव वैन ।
मदन कदन मन कर दियो, दृग छाई छवि ऐन ॥

चित्रदरशनलक्षण–दोहा।

जो चित्रहि लखि सुख करत, विरह करत वा लाज।
चित्रदरश ताको कहत, जे प्रवीण कविराज५१७॥

चित्रदरशनकाउदाहरण–सवैया।

बैठिरही दृगसों दृग जोरि, मनोज भरी हिय आनँद ताके। वैन कहै न सखीनसों एक, परी यह टेक सनेहकी वाके॥ त्यों असकंद भनै लखिये वो भई वश तेरेइ रूप मजाके। चित्रमें आनन इंदु विलोकि, चकोरसी ह्वैरही रूप सुधाके

दोहा।

चित्र विलोकत राधिका, बाढ़ी मैनमरोर।
देखिरही इकटक वही, मुखसम चंदचकोर॥५१८॥

स्वप्नदर्शनलक्षण–दोहा।

सोवत बिच लखि नाहको, होत हिये आनंद।
स्वप्नदरश ताको कहै,कविजे सुखके कंद॥५१९॥

स्वप्नदरशनकाउदाहरण–कवित्त।

आज वह सघनलतान वन कुंजनमें,
निपट अकेली सपनेहूमे गईहौरी।
प्रफुलित सुमन विलोकि अति नीके भले,
मालती जुहीके तिन्हें टोरन नईहौरी॥
भन असकंद तहां आय वनमाली आली,
कर गहि लीन्हों अंक भरनदईहौरी।
झझकत चौंकपरी धरक न हीं समाय,
कहत न बात बनै चकित भईहौरी॥५२०॥

दोहा।

सपनेकी सुन बात यह, गई कुंज बिच आज।
आय गह्यो कर श्यामने, खुली आँख दुख लाज॥

प्रत्यक्षदरशन लक्षण–दोहा।

जो निश्चय मनुहारकै, मोहिजात लखि रूप।
सो प्रत्यक्ष दरशन कहत, जे कवि रसिक अनूप॥

प्रत्यक्षदरशनका उदाहरण–कवित्त ।

मंजनकरि ठाढ़ी अटापर सुखाऊँ केश,
बीणको बजाय इहि खोरहो निकरिगो ।
धुनि सुनि नजर निगोड़ी परी वापै दौरि,
जुलफफँदामें जाय मेरो मन लरिगो ॥
भन असकंद जौलौं रूपको हटाऊँ तौलौं,
रूप वह प्यारो मेरे नैनन सुभरिगो ।
कल बिनदेखे परै नेकहूँ न येरी भटू,
हेरिबो हमारो सो हमारे गरे परिगो ॥ ८२३ ॥

दोहा ।

मंद मंद मुसक्यानि वह, लखि भागे सबदंद ।
बिसरत नाहिन एक क्षण, अरी गोकुला चंद८२४॥

इति श्रीशिवसुत षोडशनाम प्रतापअनुभारतीश श्रीमन्म
हाराजकुमार श्रीमर्कुँवर स्कंदगिरिविरचिते रसमो-
दकाभिधे काव्ये श्रीमहाराज राधाकृष्ण विहारे
कविजन हृदयानददायिने आलंबन विभाव
प्रकरण नाम प्रथमोल्लास ॥ १ ॥

अथ
द्वितीयोल्लासः २.



अथउद्दीपनविभाव लक्षण–दोहा।

चंद चॉदनी वन सघन, उपवन बाग विहार।
चदन अतर समीर अरु, पटऋतु सरस निहार५२५
इनहींते जो होत है, उद्दीपित रसभाव।
ताको कविजन कहत हैं, उद्दीपन सुविभाव५२६॥
सखा सखी जेती सबै, रसके और शृंगार।
वरणत उद्दीपनहिमें, पण्डित सुमति विचार५२७

उद्दीपनका उदाहरण–कवित्त।

वृन्दावन सघन लतान वन कुंजनमे,
मालती जुही सो रही चहुँदिशि फूल है।
तैसी चंद चॉदनी चकोरनकी चुहल वैसी,
देखिश्याम गायतान वंशी सुर मूल है॥
भनै असकद परी श्रवण नवेलिनके,

सुधि बुधि भूलि उठी मनसिज हूल है ।
विरह सताई दौरि दौरि उठि धाई सबै,
नेकहू सम्हारयो नहीं वदन दुकूल है॥८२८॥

दोहा ।

वंशीधुनि सुनि मदनवश, दौरीं सब ब्रजबाल ।
देखि चंदकी चाँदनी, आनँद भरी बहाल ॥८२९॥
प्रथम कहे जे भेद सब, नायकके बहुरीति ।
तिनके चारों सखा अब,वर्णतहौं करि प्रीति८३०॥
सचिव सखा कहि चारविधि,पीठमर्द १पहिचान।
विट२ चेटक ३सुविदूषकहु४, वरणे कवि बुधवान॥

पीठमर्द लक्षण–दोहा ।

मानवतीके मानको, मोचै कहि मृदुवैन ।
कवि गुण ताको कहत है, पीठमर्द सो ऐन ॥८३२॥

पीठमर्दका उदाहरण–कवित्त ।

सघन घुमड़ि घन घोर करिजोर आये,
शोरको मचाये पठवाये दै दै बोलजस्न ।

ताते मैं निकट तिहारे दौरि आयो वीर,
अधिक प्रमोद भर्‍यो मनमें विचारे प्रश्न ॥
भनै असकद चल वृन्दावनकुंजन में,
देखो घनश्याम होइ पूरण हियेकी त्रस्न।
अबतौ इतेक फेर चरित अनेक करौ,
सारेमित्रगॉवदंद लागत सुपक्षकृस्न ॥५२३॥

दोहा।

सुनत वचन मृदु सखाके, हरष न हिये समानि।
छोड़ि मान आली चली, गजगति सहित गुमानि॥

चेटक लक्षण-दोहा।

वचन चतुरई करि सखा, दुहुँन मिलावै आइ।
छंद फंद करके बहुत, चेटक कहिये ताइ॥५२५॥

चेटकका उदाहरण-सवैया।

सॉवरेको सजिकै उतही, इत दौरिकै आयो
गुवालिनही पर। देखतही कह्यो बैठी कहा, यक

कौतुक होत विशालतहींपर। त्यों असकंद भनै वहिकुंजमें,झूलत टूटपरी मुकतालर।हौलखिआयो मयूरन पुंजमें प्रेम भरे घनश्याम महीपर॥५३६॥

दोहा।

सखा चतुर घनश्यामको, सखी स्वरूप बनाइ।
सुमन विनन मिस कुंजमें, राधे दई मिलाइ ५३७॥

विट लक्षण–दोहा।

मिलिबो सकल कलान कर, रचै चातुरी तौन।
ताहि कहत विट सखाहै, जे पंडित बुधभौन॥

विट उदाहरण–सवैया।

माधवकी मति काम विलोकिकै, बालसखा यों विचार कियो मन। दादुर शोर मयूरन बोल, सुचातक टेरसी टेर दई तन। मानवती ढिग जाय कह्यो, असकंद भनै लखि पावसके घन।धूमरे धूमरे ये धुरवा धा।,चूमरहे उमडे झुमड़े घन॥ ५३९॥

दोहा।

सखा कूक कोयल लगी, मदन हूकसी आइ।
मिली राधिका श्यामको, ज्यों चपला घनपाइ॥

विदूषक लक्षण-दोहा।

जोरै प्रथम समाजको, रचै स्वाँग बहुआन।
सकल हँसावै जुगतसों, वहै विदूषक ठान८४१॥

विदूषकका उदाहरण-कवित्त।

त्रिविध समीर सीरी वहत झकोरनसो,
फैली चारु चाँदनी सुचंदके प्रकाशसो।
वृन्दावन कुंजनमे सखिन समेत श्याम,
दीन्ह्योहै मिलाइ राधे सरस हुलास सो॥
भनै असकंद फेरि करिकै उपाय जाय,
स्वाँग बनिआयो करै बात हकलातसो।
भौहन चढ़ाय नैन मुख मटकाय दीन्ह्यों,
सबन हँसाय नाचि कूदत विलाससों॥८४२॥

दोहा।

उठत कहूँ बैठत कहूँ, फिरत हलावत पोंद।
रचत स्वाँग बहुभांतिके, विहसावत कर मोद५४३

अथसखीलक्षण—दोहा।

राखे नायक नायिका, जिनसे कछु न दुराव।
सखी चतुर तासों कहे, चार भांति कविराव ५४४
चारोंके गुण येकहैं, मंडन शिक्षाठान।
उपालंभ परिहास कहि, भाषत बुद्धिनिधान॥

मंडन लक्षण—दोहा।

अंग अंग भूषण सजे, त्रियके सखी बनाइ।
मंडन कहिये ताहिको, विधिसों सरस जताइ॥

मंडनका उदाहरण—सवैया।

मंजुपद जावक लगाइ पहिराइवेश, जेहर सुज्योति जगी किंकिणि सुलंकपै। कंचुकी उरोजनपै हीरनके हार हिये, साजे बहुभांति मंद

नखत दमंकपै॥ भनै असकंद श्रुतिभूषण विशाल तैसे, रतिसी बनाइ बैठाइ परयंकपै। मोतिन बिरूधे केश तारन समेत मनो, रजनी सवाँरि बाँधी पूरण मयंकपै ॥ ५४७ ॥

दोहा ।

अंग अंग भूषण सजे, अरु शृंगार सबलेख।
भूलगई बीरी अली, अधर ललाई देख ॥ ५४८ ॥

शिक्षालक्षण–दोहा ।

देत सीख जो नायकहि, नानाविध समुझाइ ।
शिक्षासखी बखानहीं, कवि पंडित सुख पाइ५४९

शिक्षासखीका उदाहरण–कवित्त ।

रूप गुण आगरी न चीन्हे रसरीति कछू,
चतुर सयानी कहूँ काम मत लीजे ना ।
बार बार आवै वह बगर मँझार बात,
मोहिं कहि आवै सुन सीख हठ कीजे ना ॥
भनै असकंद यह रीति जग जाहिरहै,

लहट लगावै फेरि नेकहूँ पतीजे ना ।
बानि कुलकानिकी बचायो चहै जोपै वीर,
साँवरे सलोने हाथ भूल मन दीजे ना॥८८०॥

दोहा।

तू अलवेली ब्रजबधू, सीखो नहीं सयान ।
नेह न कीजो श्याम सँग, जो चाहौ कुलकान ॥

पुनः--कवित्त।

रूप रस सागर अनूप लसै तेरो यह,
पावत न मैनिकाकी द्युति छवि छूटीको ।
जोपै लखि नागरनट मन अटकावै कहूँ,
जोरत सुकौन फेर कुलकानि टूटीको ॥
भनै असकंद तैसे ब्रजके चवाई लोग,
साच बरजोरी करै निपट सुझूटीको ।
यमुना तट विकट सुनीर भरिवेको कहि,
वार वार रोकै चंद्रकेशी या वधूटीको॥८८२॥

दोहा।

तू न जाइये भूलिकहुँ, कालिन्दीके तीर ।
अटकावै मनको कहूँ, नागरनट बलबीर॥५५३॥

कवित्त।

करि बरजोरी नित जातहै कलिंदी तीर,
आवै उत कान्ह बजा वशी बसबो करै ।
राग तान गायकर निपट रिझायकर,
नेरे आय बातै करि करि हँसिबो करै ॥
भनै असकद करै कौनहूँ कलारी ऐसी,
मुकुट विशाल छबि हिय लसिबो करै ।
हाथहू नरहै मन देखे वह रूप जाल,
साँवरो सलोनो लाल ब्रज बसिबोकरै॥५५४॥

दोहा।

तू यमुनातट जाति नित, हटक न मानति
कान्ह सुतित बसबोकरै, अरी छोंड़ यह

उपालंभ सखीलक्षण–दोहा ।

यापियपै त्रियके ढिगै, यापियपै त्रिय कोइ ।
देइ उरहनो आनके, उपालंभ कहि सोइ॥८८६॥

उपालंभका उदाहरण–कवित्त ।

खायो नही पान दूध दधिकी कहै को वान,
वृन्दावनहूँ न कहूँ बाँसुरी बजाई है ।
मकराकृत कुंडल उतार धरे कानन सों,
मुकुट सवाँरो नही लकुट सुहाई है ॥
भनै असकंद श्याम बैठे ठीक वाही ठौर,
आइ जहाँ देखि करैं अति निठुराई है ।
चाहिये न तोहि ऐसी कठिन कठोरताई,
विधिकी बनाई नेह लगन लगाई है ॥८८७॥

दोहा ।

नैन मिलाइ फँसाइ मन, केते नाच नचाइ ।
निठुराई कोउ करतहै,तुमसी लगन लगाइ ८८८

परिहास लक्षण–दोहा।

करै नायिकासों हँसी, रतिकी देश लजाइ।
ताहि कहत परिहासहै, रसग्रंथनमे गाइ॥५५९॥

परिहासका उदाहरण–सवैया।

यह रातकी बात जतावो कछू, किहिभाँतिसों कैसे प्रमोद ठये। उन गोल कपोलनके मृदुचुम्बन कैसे लये अरु कैसे दये॥ असकंद भनै रसके वशमें कुचके मसके हग ज्यों उतये। बलि साँची कहो इतनी हमसो, विपरीतरतीसों वे जीतलये॥५६०॥

दोहा।

सुनत वचन परिहासके, अली रही शिरनाइ।
सखी कह्यो मुसक्याइके, करिहै कहा लजाइ॥

दूतीनिरूपणं–दोहा।

प्रथम कही उत्तम द्वितिय,मध्यम अधम तृतीय॥

निपुण दूतपनमें सु ये, दूती कहै कवीय॥८६२॥

उत्तम दूती लक्षण–दोहा।

वचन निकारत अमी सम, मोहिलेत मन जौन।
कवि जन वर्णत प्रीति सों, उत्तम दूतीतौन॥८६३॥

उत्तमदूतीका उदाहरण–कवित्त।

खोल मुख चंद ताके द्युतिको प्रबध वधै,
माती मन मदसों तुव शोभा करनहै।
सुभग सुहाये बने तरन तरयोना वेश,
केश घुघुरारे रूप रतिकी हरनहै॥
भनै असकंद आन कान कहा येरी वीर,
मानि मतियेरी तू ननदी सुघरनहै।
देखि नँदनंद ऐसो औसर कितैरी वीर,
चतुर चितैरी चारु चंपक वरनहै॥ ८६४॥

दोहा।

सीरा सुनौ व्रजचंद लखि, त्रिविध सुगंध समीर।
५ मोहिनी रूपकी, तू अति गुणन गँभीर॥

पुनः कवित्त।

कंचन वरण वलि नूतनी विशालसोहै,
वैठी निज मंदिरमें आनँदकी कंदहै।
सोरह शृँगार सजे वारहू अभूपणको,
लखि मनमोहि परै अतनु सुफंदहै॥
भनै असकंद कोटि द्युति रति वारे होत,
दशन विलोकि चंचलाकी गम मंदहै।
चलि व्रजचंद प्यारे कर तू अनंदजैसो,
लसत मुखारविंद उदित न चंदहै॥५६६॥

दोहा।

कोटिन रति दुति वारिये, लखहु सुचलि व्रजचंद।
मुदित वालि मुख देखिये, ऐसो उदित न चंद॥

पुनर्यथा–कवित्त।

मंदिर सुधाको प्रेम जीव वसुधाको भूप,
कुदकलिकाको रूप तमकी प्रभाको है।

हरत व्यथाको भाषि सकत कथाको कौन,
गुणन गथाको शेष कहि कहि थाको है ॥
भनै असकंद कोकनदकी समाको स्वच्छ,
अमल अनूपताको विथ कविताकोहै।
पूरण कलाको ऋद्धि सिद्धि संपदाको मूल,
कीरति सुताको चंद्रमासों मुखताको है ५६८॥

मध्यम दूती लक्षण—दोहा।

कहै वचन मीठे कछू, सीठे देश मिलाय।
मध्यम दूती जानिये, आपै जुगुति बनाय ॥५६९॥

मध्यम दूतीका उदाहरण—कवित्त।

पंकजके वरनसोंहै मीन मृग खंजनसे,
अंजन कलित अति छविके छटासे ये।
भरत अनंग मन हरत मुनीनहूँके,
करन कलोल लोल नटके बटासे ये ॥
भनै असकंद चारु हेरत मयूषे परै,
फेरत सुचारो ओर चौमुखपटासे ये।

हैतौ कजरारे दृग कज्जल न देहु प्यारी,
लरत बटोहिनसों करत कटासे ये ॥ ५७० ॥

दोहा ।

तूतो करत शृंगार इत, उत न सौति मिलजाय ।
तेरी भौंह कमानकी,फिर कमनैती जाय॥५७१॥

पुनः—कवित्त ।

कान्ह चलि सुतट कलिंदी केलि कुंजनमे,
सुखको विचार साजि बैठी परयंकपे ।
मणिके जटित अग भूपण विशाल सोहै,
हीरनके हार मंद नखत दमंकपे ॥
भने असकंद एक कौतुक अनूप बनै,
भापत न देखौ मिलि मुदित सुअंकपै ।
वदन पियारीके अमोल तिल सोहै वेश,
बैठ्योहै निशंक मानौ मधुप मयंकपै ॥५७२॥

दोहा ।

सोहै वदन मयंकपै, बिंदु श्याम रँग वेश ।

अमी हेतु मानौ भवँर, बेव्यो लै उपदेश ॥८७३॥

अधमा दूती लक्षण–दोहा ।

कहै वचन अनखाइकै, चाहै वात वनैन ।
लक्षण दूती अधमके, वरणत कवि बुध ऐन ॥

अधमादूती उदाहरण–कवित्त ।

जौन मनमोहनसो सुख चाहौ आठोयाम,
तौन मनमोहनसों कैसी अनखाती हौ ।
जानती न भूल कछू ऐसी रिस ठानतीहो,
मानती न मेरी सीख फेर पछितातीहो ।
भनै असकंद यह मनमे विचारि देखो,
तरफ निहारो सुनौ सौतिन सिराती हौ ।
चल उठ देख प्यारी शीतलसुपोन चलै,
मौन गहि बैठी तुम कौन रँगरातीहो ॥८७५॥

दोहा ।

मिल मोहनसों वेग चलि, बैठी कहा रिसाय ।
उत सुनकै सौतें सजै, फिर न बनै पछिताय८७६॥

विरहनिवेदनलक्षण–दोहा।

दुविधभाँति दूतीनके, कहे काज कविराज।
विरह निवेदन एक फिर,संघट्टन सुखसाज॥८७७॥

विरहनिवेदनका उदाहरण–सवैया।

कानपरी जबते धुनि आन, भरे रहें वारिज नैनन आंसुरी। चित्रलिखीसी भई वह मूरति, अंगदह्यो विरहानल तासुरी॥ ताहिभनै असकंद सप्रेमसों, जाय निकार सनेहकी फाँसुरी। साँसपै सांस भरै व्रजबाल, सुनी जबते बिसवासिन बाँसुरी॥ ८७८॥

दोहा।

खानपान भूषण वसन, नेक न भावै वाहि।
तलफै सेज परी विकल,जौलौं मिलै न ताहि ८७९॥

संघटन लक्षण–दोहा।

देय मिलाइ दुहूँनको, करि चतुराई जौन।

संघट्टन दूती कहैं, ताको कवि मतिभौन॥५८०॥

संघटनकाउदाहरण–कवित्त।

फैलिरहीं फूलिरही झूलिरहीं झूमिरही,
लूमि रही चूमि लता ललित लुनाई पर ।
भनै असकंद वारै बाग अमरावतीके,
वारै महताब सिलि सरस जुन्हाई पर ॥
ऐसो कहि नवलकिशोरीको लियाइ तहां,
वारिये का वाकीसो अनूप चतुराई पर ।
इत उत सुमन दिखाइ पहिराइ जाइ,
दीन्हों है मिलाइ जाय कुँवरकन्हाई पर ॥

दोहा ।

पिक चकोर चातक घने, वोलिरहे सुख पाय ।
तहाँ लेगई राधिकै, दीन्हों श्याम मिलाय ५८२॥
अपने कारजको करै, दूतपनो जो आप ।
स्वयं दूतिका जानिये, चतुराई कर थाप॥५८३॥

स्वयंदूतिकाका उदाहरण–
कवित्त ।

खबरि उड़ानी दिनद्वैकते नगरबीच,
बाँधे फिरै डगर ठगौरिनके सोहिया ।
रैनि अँधियारी दिन जात सांझहोनिवारी,
कुमति विचारी कौन सूझति न तोहिया ॥
भनै असकंद थोरी थोरी गोरी गोरी भोरी,
तेरी लखि प्यारी छवि तरसत मोहिया ।
भ्रमत कहां धौ फिरै याते आज मेरे ठाम,
ह्वाँही वसमानबात सरसवटोहिया॥५८४॥

दोहा ।

जौलौ तू उत जायगो, तौलौं की सुन बात ।
रैनपरे मगमें कहूं, दिनकर अब छिपजात॥५८५॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

सरस निवास करि अतिही विलास कारि,

क्षीण होतजाती प्रभा रविके किरनकी ।
मारग विकट भूलि पथिक लुक्योहैं एक,
खबरि उड़ानी कहौं सोहे विरनकी ॥
भनै असकंद काहि अहित न मानै यह,
भस्म तन कौन भई तृष्णा हिरनकी ।
उँचीहै उँचाई ताते परत लखाई सुनौ,
दूर दूरताई सुपताई मंदिरनकी ॥ ५८६ ॥

दोहा ।

घन घुमंड वरपन चहत, अधिक अँधेरी रैन ॥
रहौ हमारे गेहमें, पथिक पाइहौ चैन ॥ ५८७ ॥

अथ षट्ऋतु निरूप्यते।



हेमन्तऋतु वर्णन—कवित्त।

याम युग ग्रीषमलौ दिवस व्यतीत होत,
चार हिम दिन रैन दीह दरसतहै ।

सहज बयारि सीरी चलति झकोरन सों,
अंग अंग छुइ तनु कंप सरसतहै ॥
भनै असकद ऐसी सरस हिमंतऋतु,
भुज भरि प्यारी पिय अंक परसतहै ।
बाट घाट औघट दिशान दिशि चारो ओर,
सम घनसारके तुषार बरसतहै ॥ ५८८ ॥

दोहा ।

सरस दिगंत हिमंतऋतु, बरसत बरफ फुहार ।
दंपति जे जन रसिक ते, प्रमुदित करत विहार ॥

पुनःकवित्त ।

मोद मदमाती लखि प्रबल हिमत शीत,
सजि रतिमंदिर अमोल रुचि प्यारीसों ।
चौगिर्द चिराग झाड़ हीरनके जगमगात,
दीपमालिकासी करी ओप चित्रसारी सों॥
भनै असकद डारिझरफ दुवारनपै,
गिलम गलीचे बिछे ओप अनियारीसों ।

अंवर अतर तर सुघर तमोल खाय,
पौढ़ी परयंक जाय सरस विहारीसों ॥ ५९०॥

दोहा ।

नवव्रजवधू हिमंतऋतु, शीत पाय सुखचैन ।
अंक भरे परयक पर, पियते क्षणक छुटेन ॥

शिशिरऋतु वर्णन–कवित्त ।

देख ऋतु शिशिर अवाई यह मेरी वीर,
झरखनहूँते शीत भीतर भरचो परै ।
ओढे ऊन अंवर तरातर सुगंधनसों,
फरश गलीचनपै प्रगट अरचो परै ॥
भनै असकंद पिये अमल अनेक जेवे,
नजर वचाय आप पॉइन खसोपरै ।
सरस समंद सीरी चलत वयार ज्योंही,
चहुँदिशिवरफ फुहारन झरचो परै ॥ ५९२ ॥

दोहा ।

शिशिरशीत आये भट्ट, वरफ परै चहुँओर ।

दंपति जे वे रस छके, तिनते चलत न जोर ५९३

पुनर्यथा–सवैया।

मंदिर सुंदर सेज मजेजमें बैठे, दुहूं रसलों रस भीने। चारहूंओर चिके कर द्वारपै, दीप घने तम लेस-कहीने। सौरभ पुंज भनै असकंद सुशीतको भीत निरादर कीने। प्याले प्रमोदके लीन्हें दुहूँ कर, पागे महामद नेह नवीने ॥ ५९४ ॥

दोहा।

शिशिरशीत व्यापक जगत, भावै अंबर तूल।
दंपति सुखको देतहै, रसिकनकी मनमूल ५९५॥

वसंतऋतुवर्णन–कबित्त।

कुंजनव बागनमें विपिन विभागन में,
सजल तड़ागनमें नदी नद झरमें।
खोर खोर ग्रामनमें मौर मौर आमनमें,
मंद मृदु गावनमे तंतकार करमें ॥

भनै असकंद जुही दावदी चमेलिनमें,
अवली मदंध दौर भौर भर भरमें ।
कंत सुखभामिन प्रमोद वनवानिकलौ,
आज दरशंतयों वसंत घर घरमे ॥ ८९६ ॥

दोहा ।

फूलिरही फुलवारियाँ, मधुकर अवली गुंज ।
पुंज पुंज वनितानके, खेल वसंत निकुंज ॥८९७॥

पुनः—कवित्त ।

रूपगुण आगरी अनूपरस सागरी हैं,
गुणन उजागरी प्रमोद झलक्योपरै ।
मदन उछाह श्याम नेह चितचाह भरी,
वैन मृदुहास प्रेम नेम ललक्योपरै ॥
भनै असकंद देत उपमा लजात मन,
कीरतिकिशोरी संग रंग हलक्योपरै ।
पुंज ब्रजबालनिके खेलत इकंत नव,
चोलिनते चपल वसंत छलक्योपरै ॥ ८९८ ॥

दोहा।

आई प्रगट वसंतऋतु, मधुकर भये मदंध।
झौरन मौर रसालभे, मधुर माधवी गंध॥५९९॥

ग्रीष्मऋतुवर्णन–कवित्त।

खासे खसवोइन खजाने खसखाने खूब,
खोले दर द्वार दीह त्हरफ दरीचे ये।
चोखे चारुचंद्र कलियाय चौक चंदन सों,
शीतल पटीन शीत सौरभन सीचे ये॥
भनै असकंद बुंद परत फुहारनसों,
सलिल गुलाव अली सुखसो उलीचे ये।
ताहूपै प्रचंड ऋतु ग्रीषम अखंड भूमि,
तापित करत मारतंडकी मरीचें ये॥६००॥

दोहा।

प्रगट तेज रविविच अधिक, पवन चलै झकझोर।
ग्रीषमऋतु नीकी अली, खसखाने चहुँओर६०१॥

भनै असकंद जुही दावदी चमेलिनमें,
अवली मदंध दौर भौर भर भरमें ।
कंत सुखभामिन प्रमोद वनवानिकलौ,
आज दरशंतयों वसंत घर घरमे ॥ ५९६ ॥

दोहा ।

फूलिरही फुलवारियाँ, मधुकर अवली गुंज ।
पुंज पुंज वनितानके, खेल वसंत निकुंज ॥५९७॥

पुनः—कवित्त ।

रूपगुण आगरी अनूपरस सागरी है,
गुणन उजागरी प्रमोद झलक्योपरै ।
मदन उछाह श्याम नेह चितचाह भरी,
वैन मृदुहास प्रेम नेम ठलक्योपरै ॥
भनै असकंद देत उपमा लजात मन,
कीरतिकिशोरी संग रंग इलक्योपरै ।
पुंज व्रजबालनिके खेलत इकंत नव,
चोलिनते चपल वसंत छलक्योपरै ॥ ५९८ ॥

दोहा ।

आई प्रगट वसंतऋतु, मधुकर भये मदंध ।
झौरन मौर रसालभे, मधुर माधवी गंध ॥५९९॥

ग्रीष्मऋतुवर्णन–कवित्त ।

खासे खसबोइन खजाने खसखाने खूब,
खोले दर द्वार दीह ह्रस्फ दरीचे ये ।
चोखे चारुचंद्र कलियाय चौक चंदन सों,
शीतल पटीन शीत सौरभन सींचे ये ॥
भनै असकंद बुंद परत फुहारनसों,
सलिल गुलाब अली सुखसो उलींचे ये ।
ताहूपै प्रचंड ऋतु ग्रीषम अखंड भूमि,
तापित करत मारतंडकी मरीचें ये ॥ ६०० ॥

दोहा ।

प्रगट तेज रविविच अधिक, पवन चलै झकझोर ।
ग्रीषमऋतु नीकी अली, खसखाने चहुँओर ६०१॥

पुनःकवित्त ।

शीतल समूह खसबीजनी बयारि बेश,
शीतल प्रसून सेज शीतल महल है ।
शीतल सरोजदल अमल गुलाब आब,
शीतल चहूँहा चौक शीतल चहल है ॥
भनै असकंद तहाँ सरस फुहारनकी,
फरस फबी है शीत शीतल सहल है ।
शीतल सुगंध शुभ शीतल महीतलपै,
तीखन तिहूँपै ऋतु ग्रीषम कहल है ॥ ६०२ ॥

दोहा ।

अली भूमि तापित यदपि, ग्रीषमऋतु करदीन ।
तदपि कुंजगलियानकी, शोभा शिशिर प्रवीन ॥

वर्षाऋतुवर्णन–कवित्त ।

चाह भरे चंचल चहूँहा झपि झमि झमि,
झंझा झोक छ्वैक्षिति अनेक छबि छायेरी ।
तैसी दीह दामिन दमंकति दिशान देश,

झपकि झलान धूम धुरवा मचायेरी ॥
भनै असकंद तैसी लहर लजाननपै,
छहर छटान बुंद बुंदन सुहायेरी ।
पालक पुनीत प्रजा पावस सँयोग पाय,
पुंज पुंज वारिध विलंद उठधायेरी ॥ ६०४ ॥

दोहा ।

घन घमंड चहुँ ओरते, फिरत मचाये दोर ।
पावसऋतु लखिकर उठे, पिक मयूरहू शोर ॥

पुनःसवैया ।

आठहू याम न देखिपरैरवि, यों घन घेर रहे नभ मूलै । पौन चलै झकझोरनसों, सुधि कामकी एकहू काम न भूलै ॥ त्यो असकंद भनै मुरवानके, वैन सुने सुख होत अतूलैं । सावनमें मनभावन संग मे प्यारी हिंडोलना मौजसे झूलै ॥ ६०६ ॥

बरवै ।

सावन सरित सुहावन आवन कीन ।
वन उपवन हरियाने अधिक नवीन ॥ ६०७ ॥

पुनः सवैया ।

भादो घने घने घूमिरहे, चपला चमकै चहुँ-
ओर सुहाई । फूले प्रसून सबै वनके, अवनी पै हरी
हरी सेज बिछाई ॥ त्यो असकंद भनै व्रजगोपिन,
साँवरेसों रसरीति बढ़ाई । झूलै सबै मिलि कुंज
कदंबपै, डारि हिंडोलना धूम मचाई ॥ ६०८ ॥

बरवै ।

जितदेखौ तित बरषत घन घहराय ।
पावसऋतुको आवन लेत लुभाइ ॥ ६०९ ॥

शरदऋतुवर्णन–कवित्त ।

अमल अकाश ओप अंबर अनूपवृन्द,
उजल अमंद चारु चाँदनी प्रकासहै ।
सौरभ समीर त्योंही मंजुल प्रसून पाय,

गुंजत मलिंद पुंज बेसर सरासहै ॥
भनै असकंद उर प्रमुद विलोकै ऋतु,
सरस सुहायो शीतभानको उजासहै ।
दंपति अनेक सुख संपाति समूह लिये,
गोपिन समेत कुंज कुंजन विलासहै ॥६१०॥

दोहा ।

अमल अकाश शरदनिशा, हिमकर विमलविकास।
वृन्दावन वंशी बजत, हेतु सरस रसरास ॥६११॥

कवित्त ।

फैली चारु चाँदनी ये शरदसुधाकरकी,
चारों ओर कीन्ह्यो निज चंदछबि जालको ।
फूली मंजु मालती सरोजवन तोर तोर,
गूँध गूँध गेरै गरे श्यामहिय मालको ॥
भनै असकंद मोद मंदिर मनोज भरी,
मिलि गलबांही करै सरस खियालको ।

राखै रसरहस रिझाय ब्रजगोपिकान,
गुण गरबीली गुण आगर गुपालको ॥६१२॥

दोहा ।

प्रफुलित पुहुप प्रकाश शशि डोलत त्रिविध समीर।
मिलि बिहरत रमणी रमण, तरन तनूजा तीर ॥

इति श्रीशिवसुत षोडश नाम मतापअनुभारतीज्ञ
श्रीमन्महाराजकुमार श्रीमत्कुँवर स्कंदगिरि विरचिते
रसमोदकाभिधकाव्ये श्रीमहाराजाधिराज राधाकृ-
ष्णाविहारे कविजन हृदयप्रमोददायिने
उद्दीपन विभाव प्रकरण नाम
द्वितीयोल्लास ॥ २ ॥

तृतीयोल्लासः ३.

अनुभाव-दोहा ।

अनुभवजिनते होतहै, चितमें रतिको भाव ।
कहे तेइ अनुभावहै, रस शृङ्गार बनाव ॥६१४॥
नैन बैन मृदुहास अरु, अंग विकाश विनोद ।

साकभाव सुहाव धृत, इनहींते रतमोद ॥ ६१५ ॥

अनुभावका उदाहरण—कवित्त ।

जाति चली आली निजमारगमें मंदिरको,
देखतही श्याम अरी कौन कहि टोक्योहै।
समुद उमंग भरे आइकर पास लागे,
करन ठिठोली दियो कर गहि झोंक्यो है ॥
भनै असकंद छै छुड़ाइ सकुचानी वेश,
सरस लजाय दृग जोर अवलोक्यो है ।
बोलीविहसौंहैं चितचोरयोंहै निशाकरिकै,
हॉकरिकै ना करिकै वरवस रोंक्योहै ॥ ६१६ ॥

दोहा ।

नेह नशानैननि करै, वैननि करै सुटेक ।
हरपत चलत सुलेत मन, ठहर जाति क्षण एक ॥

अथ भाव नाम—छप्पय ।

प्रथम कहत अस्तम्भ द्वितिय शुभ स्वेद कहावत ।

तृतिय कहत रोमाँच चौथ सुरभंगन गावत ॥ पंचम कहियतु कम्प षष्ट वैवर्ण बखानत । सप्तम आँसू कहिय प्रलय अष्टम कहि गानत ॥ इमि भनत नृपति असकंदगिरि, जृम्भा नवम बखानिकर ॥ लखि अंतर्गत अनुभावके, आठहु सातुक भाव पर ॥ ६१८ ॥

स्तंभ लक्षण–दोहा ।

थकै अंग जब लाजते, भय अरु हर्ष समेत ।
ताहि कहै अस्तंभ है, पंडित बुद्ध निकेत ॥ ६१९ ॥

स्तंभका उदाहरण–सवैया ।

चल फागके औसरलौ घनश्याम, गये वृषभानकि भौन गली । पकरे गये यूथ सहेलिनमें, वहँ राधिका मूठ गुलाल घली ॥ असकंद भनै फिरतौ भई धूम, घला घलीमें गई थाकि थली । वलि वैसही ठाढ़ी कहै सिगरी, अबतौ भये श्याम ललाते लली ॥ ६२० ॥

दोहा।

रंग रंगपै चढ़िगयो, प्रेमतरंगी रंग।
नैननैनसों मिलि थके, श्याम राधिका सग॥६२१॥

पुनः—सवैया।

साज शृँगार नई ब्रजनार, खड़ी निजमंदिर द्वार सयानसो। आय अचानकही निकरे, हियमें वनमाल परी अति आनसों॥ ताहि घड़ी सों भने असकंद, मिली न अली सँगकी सखियान सों॥ श्यामको रूप विशाल थकी लखि, प्यारि मनोज भरी अँखियानसो॥ ६२२॥

दाहा।

लखे रूप रँग साँवरो, परत न मग पग एक।
धरै न धीरज हरष कछु, लाज तजै नहि टेक॥

स्वेद लक्षण—दोहा।

मोद सुश्रम दुर लाजते, कोप आदिते ०।

अंग अंग प्रगटै सलिल, स्वेद कहावत सोय ६२४

स्वेदका उदाहरण–कवित्त।

मोद मदमाती अनुराग भरी मोहनपै,
हँसत हँसत गई खेलनको होरीहै।
धूम मची तहाँ रंग केसर अबीरहूकी,
उड़िगो गुलाल भूर झोरिनकी झोरीहै।
भनै असकंद देख ग्वालनकी भीर भार,
लौटत अडृत वृपभानुकी किशोरीहै।
कढन न पाई श्रमबुंद परे आननपै,
लाजभरी तैसी कछुरोष भरी थोरीहै।

दोहा।

इंदुवदन पर परत जे, श्रमके बुंद विशाल।
रफ गुलालते होत ते, गजमुकताहल लाल॥

रोमांच लक्षण–दोहा।

हिय हुलासके डर कछू, जाड़ेहूके त्रास।
उठै रोम अँगअंगमें, सो रोमांच विलास॥६२७॥

रोमांचका उदाहरण–सवैया ।

बैठी सखीनके सङ्गमें बाल, प्रमोद भरी विहँसै सुलजातन । होनलगी चरचा पियके जब, आवनकी रसरीतिके बातन ॥ त्यो असकंद भनै सुनिकै तनके तन रोम उठे सकुचातन । त्यों हरी कंचकीमें छतियाँ मनो, काटे उठे जल जातके पातन ॥ ६२८ ॥

दोहा ।

श्रावण सुन छतियाँ तनी, कछू कंचुकी तान ।
उठे रोम तनुके घने,हिये न सकुच समान॥६२९॥

सुरभंग लक्षण–दोहा ।

सुखमद उर विसियाटते, बैन औरही रूप ।
कहत ताहि सुरभंगहै,जे कवि सुमति अनूप ६३०

सुरभंग भावका उदाहरण--सवैया ।

आवतती निज मंदिरको, मग रोकिकै

चोप चढ़ाई । आइ घरै कह्यो सास कहाँ रही, कौनसि ठाम विलंब लगाई ॥ त्यों असकंद भनै सुनके, करी रोप छिपावनकी चतुराई ॥ नैन सों नैन मिलाइरही, सुगरो भरि एकहू बात न आई ॥ ६३१ ॥

दोहा ।

ननद कह्यो जानत अरी, लखत कहा तुव बान ।
ताते बैन कहे दबे, आधेई अखरान ॥ ६३२ ॥

कंप लक्षण–दोहा ।

कोप प्रमोद सु भ्रमहुते, भयते प्रगट दिखाइ ।
गात अंग थर थर कँपै, कंप सरस कहि गाइ ॥

कंपका उदाहरण–कवित्त ।

आये नँदनंदन सहेलरी अलीकी बन,
देखतही बाल सखी अति सुख पायोहै ।
जाय ताके पास बातै रसकी बतानलागे,
छुवत उरोजनके रोप चढ़ि आयोहै ॥

भनै असकंद वेग बातन तिरीछी ताक,
करि पहिचान कछू भ्रम हिय छायोहै।
कान्ह दिव चाहके निशंक भरि अंकलीन्हो,
झुझुकि मयंकमुखी वदन कॅपायोहै ॥६३४॥

दोहा।

झझक कछू ठाढ़ी भई, प्यारी कंपित गात।
ज्यों समीरके परशते, डोलत पीपरपात॥६३५॥

वैवर्ण लक्षण–दोहा।

मोहभीत अनिष्टाटते, वरन वैवरनहोय।
सोई है वैवर्ण वह, भाषत है कविलोय ॥ ६३६ ॥

वैवर्णका उदाहरण–कवित्त।

गौनहाई आई एक सरस नवेली वाल,
देख मुख जाकी प्रभा चंदहूकी हटजात।
संगकी सहेली लैके गृहमें प्रवेश कियो,
सौतिनको मान औ गुमान सबै घटजात ॥

भनै असकंद तहाँ आये नँदनंद प्यारे,
देखि अतिप्रेम बढ्यौ रोक्योंपै न हठजात।
हियमें लगावतही बाल सकुचानी इमि,
जैसे निशिआवतही पंकज समिट जात६३७

दोहा।

हियो लगायो श्याम ज्यों, बाम रही सकुचाय।
इंदुवदन नव तासु को, पीरो परो सकाय॥६३८॥

आँसू लक्षण–दोहा।

मोद क्रोध डर दुखहुते, जल भरि आवै नैन।
अश्रु कहतहै तासुको, पंडित कवि बुध ऐन॥

आँसूका उदाहरण–कवित्त।

हौतौ चलिआई आज वृन्दावन कुंजनमे,
चातक चकोरनको माच्यो जहाँ शोर है।
वश करिबेको रसबाँसुरी बजाई आइ,
भूली सुधि मोहि उठी प्रेमकी झकोर है॥
भनै असकंद लाज डरते न बोली कछु,

अवश चुराइ ल्यो चित्त चित्तचोर है ।
नैननमें लागी झरझरन झलान कैसी,
पैठ्यो घनश्याम हिये नंदको किशोरहै६४०॥

दोहा ।

श्याम अग्रकुचपै गिरत, आँसू दृगते टूट ।
मनहुँ कंज अलिजानिकै, बरसत रसहि अटूट ॥

प्रलय लक्षण–दोहा ।

अंग अंग व्याकुल सबै, तन मन कीन सम्हार ।
प्रलय कहतहै ताहिको, जे कवि बुद्धि उदार ॥

प्रलयका उदाहरण–कवित्त ।

जा छिनते देखी मनमोहनी छबीली छवि,
ताछिनते कीराति किशोरिका तरंगमें ।
डूबिगई प्रेमके पयोनिधिमें वाकी मति,
हूलत विरहरह्यो मनहू न संगमें ॥
भनत अस्कद अंग अंग दुति छाई वही,

कौन चतुराई करै नेहके प्रसंगमें ।
डोलत न नेक बैन बोलत न खोलै दृग,
व्याकुल परीहै खरी मदन उमंगमें ॥ ६४३ ॥

दोहा ।

मिलत दोउ व्याकुल भये, परे नेहवश आन ।
नैनवाण इनके लगे,उनके मृदु मुसक्यान॥६४४॥

जृम्भा लक्षण–दोहा ।

जो मिलाप विछुरन विषे, आलसकै जमुहाइ ।
जृम्भा ताहि बखानही, रसिक कविनके राइ६४५

जृम्भाका उदाहरण–सवैया

प्यारी जगी रतिमें रतियाँ अँखियाँ बड़े भोर रही अलस्याइके । आइके बैठी सखीन समाजमें, लाजभरी न हिये सकुचाइके ॥ त्यों अस्कद भनै बतियाँ, रसकी जबै बूझे सबै मुसक्याइके । क्यों न कहौ अपनी अपनी, यों कहे अकराइ कछू जमुहाइकै ॥ ६४६ ॥

दोहा।

जब जब प्यारी नींदवश, आलस सों जमुहात ।
तब मानहु छबि सिंधुमें, कंज विकश मुदजात ॥

सात्विकभाववर्णन लक्षण ।

अथहाव-दोहा ।

लीलादिक जे हावहे, ते अनुभावहि जान ।
कहि संयोगशृंगार में, आपत बुद्धि निधान६४८॥
जे सुभाव नारीनके, रस शृंगारके हेत ।
प्रगट हावमें चोपकर, वरणत बुद्धिनिकेत ६४९॥

छप्पय।

लीला प्रथमविलास द्वितिय भाषत कवि बुधवर।
तृतिय कहत विक्षिप्त चौथ विभ्रमहवरनकर ॥
किलकिंचित कहि वान ललित गावतहे पष्टम।
सप्तम मोटाजान कहत विध यों कहि अष्टम ॥
इमि भनत कुवॅर अस्कंद गिरि, नवम विहत मन आनिये। पुनि रस शृंगारके भाव विच दशम कुट्टमित जानिये ॥ ६५० ॥

लीला लक्षण–दोहा।

प्रीतमके भूषन वसन, आकृत रचै जु वाल।
तियके पिय अपने सजे, लीला हाव रसाल॥

लीला उदाहरण–कवित्त।

अति मदमाते रस रंगमें विनोद भरे,
दोहुँनपै दोहुँनकी प्रीति अति भारी है।
वोढ़ी पटपीत प्यारी उनहूँ विचारो मन,
सारी जरतारीकी किनारी दार धारी है॥
भनत असकंद ऐसो चरित विचित्र करै,
मोहि मन होत एक एकनपै वारी है।
कीरति कुमारी सम राजत विहारीसम,
कीरति कुमारी इमि राजत विहारी है॥६९२॥

दोहा।

चितचकोर छाके रहै, दोहुँनके मुख चंद।
माते राचे प्रेममे, श्यामा श्याम अनंद॥ ६९३॥
सजत पाग विहसत वदन, मुरलीधर अधरान।

राधा श्याम सुनावहीं, मधुर माधुरी तान ॥६५४॥

विलास लक्षण–दोहा ।

नानाहाव सुभाव करि, लेइ रजायसु नाह ।
सोई हावविलास यह, वरणत सुकविसराह॥६५५॥

विलासका उदाहरण–सवैया ।

वोढ़ि दुकूल कसी कुचकंचुकी वेनी गुही शुभ मालती फूलन । त्यों असकंद जवाहिरके सजि भूषण अंग बने मखतूलन ॥ हंस गयंद लजावतही चली, श्यामके संग हिंडोलना झूलन । टोहि लियो हियरा हँसिके मन मोहिलियो हग सैनकी हूलन ॥ ६५६ ॥

दोहा ।

देखतही हगजोरि त्रिय, कीन्ह्यो वचन विलास ।
हौ झूलन आई इतै, श्याम तिहारे पास ॥ ६५७ ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

विमल प्रकाश रूप रदन विशाल सोहैं,

लसत कलानिधि निज आभाकमतसे ।
अमल कपोल सोहै दुति महतावकैसी,
नैन मनों खंजन छके है मदमतसे ॥
भनत अरकंद यो अनंद नंद नंदनके,
रदन अनूप बीज दाडिम समतसे ।
वारी रही कौन गुण भापत सु आज तेरे,
देख करकंज भौर भूलत रमतसे ॥ ६५८ ॥

दोहा ।

तुव अलि मृदु मुसक्यानमें, छवि दरशतहै ऐन ।
श्याम सनेही मद भरे, अधिक रसीले नैन॥६५९॥

विक्षिप्त लक्षण-दोहा ।

थोरेही शृंगारमें, जो अनूप दरशाइ ।
ताहि विक्षिप्त सुहाव कहि, वरणत कवि सुख पाइ ॥

विक्षिप्तका उदाहरण-कवित्त ।

चंद्रवत आनन यों कौतुक अनूप कियो,
तारागण गोलविंब रंगसों वधायो है ।

कैधौं मन भरिवेको मित्रन चकोरनको,
यंत्रवत प्रेम हिय हुलसि बढ़ायो है ॥
भनै अस्कंद किधौ गुरुजन बनायो याहि,
हां अरु नहींको गुणसागर पढ़ायो है ।
मदन महीप आज अधर बसो है किधौं,
लटकनछत्र वीर अटक चढ़ायो है॥६६१॥

दोहा ।

मदन नृपति अधरन बस्यो, रति सलाह करि ऐन।
नथ डॉडी लटकन मनो, छत्र चढ़ायो नैन ॥

विभ्रमलक्षण-दोहा ।

उलटे भूषण वसन जहँ, और कामको और ।
हरबराइ विभ्रम कहे, जे कविता शिरमौर॥६६०२॥

विभ्रमका उदाहरण-कवित्त ।

काहू सखी आइ कह्यो आये श्याम याहीमग
सुनत तरंग उठी नेहकी लहरिकै ।
तुरत मनोज बढ़िआयो अंग अंगनमें,

हियेमें रहीना मति नेक ढूंढ़ हरिकै ॥
भनत अस्कंद साजि वेदाको करण मध्य,
आपने तौ जान भली भाँति सों सिहरिकै।
दौरि चली देखनको कंचुकी कँधापै डारि,
पग अँगुरीन वीच आरसी पहिरिकै ॥६६४॥

दोहा।

कर पहुँची पगमें सजी, पग जेहर कर साज।
आतुर है इहिविधि गई देखनको व्रजराज ॥

किलकिंचित् लक्षण—दोहा।

क्रोध हास श्रम त्रास रस, हरष गर्भ अभिलास।
एकवारही होतहै,किलकिंचित इमि भाष॥६६६॥

किलकिंचित्का उदाहरण—कवित्त।

हर्षित हँसत गई देखन सुमन वाटी,
रूप मदमाती सुनि वतियाँ सहेलीकी।
ह्याँही लखि मदन उमग वढ़ी अंगनमें,

श्रम सों कलीहीं लागी तोड़न चमेलीकी॥
भनत अस्कंद चोप चढ़ नंदनंद आइ,
कर गहि चाही रीति सरस अकेलीकी।
रोप करि झझक छुड़ाइ डर मान हियो,
धरकन लाग्यो तनी छतियाँ नवेलीकी॥६६७॥

दोहा।

छुवत रोपकर हरप हिय, डरवश श्रम तनु छाइ।
देख आपनी ओर कहि, सरस दृगन मुसक्याइ॥

ललित लक्षण–दोहा।

चलन आभरण अंग छवि, सरस चितौन वखान।
ललित हाव तासों कहत, कवि पंडित बुधवान॥

ललितका उदाहरण–कवित्त।

जटित जवाहिर मणि किरण सुदीप्तवान,
विधनै बनाइ रचे सुंदर सुढारकै।
राजत कपोलनमें छाजत छवीली छवि,
लाजत तिमिर गति भाजत निहारकै॥

भनत अस्कंद ज्यों गयंद मतवारो चलै,
त्योंही पग धर्त बाल मगमें सिहारकै।
कारण विशाल तामें शोभित करणफूल,
नैन अरविंद रहे तरन विचारकै॥ ६७०॥

पुनर्यथा–कवित्त।

जात चली वृंदावन मगमें नवेली बाल,
चकित चकोर भये अधिक करे हितै।
छार मलै तनुमें सुभौंर दौर दौर पग,
पंकज उठाइदेत महिको जितै रितै॥
भनत अस्कंद तैसे नासिका विलोकै कीर,
कुंजकी लतान में न जानिये दुरे कितै।
स्वच्छ सह अच्छताके मुखकी प्रभाके लखे,
चंद्रमें छिपानी जात चाँदनी चितै चितै॥

दोहा।

मिलन चली नँदनंदको, ह्वैकै अधिक अनंद।
लखि आनन दुति चौगुनी, भई चाँदनी मंद६७२

मोटाइत लक्षण–दोहा ।

प्रथम बात बिगरत कछू, पुनि मिलापकी चाह ।
होत भावती कथा सुनि, मोटाइत कहि ताह ॥

मोटाइतका उदाहरण–सवैया ।

एक समै रसहास रहँसमें, कोउ सखी सुनहै-
रही त्यारी । सो सुनि बोल मयूरनके, पिकके
घनघोर घटा लखि कारी ॥ धीरज नेक धर्यो
न हिये, असकंद भनै रसरीति विचारी ।भॉवरीसी
भरै देखनको छवि, श्यामकी सॉवरी कुंजन प्यारी॥

पुनर्यथा–सवैया ।

जबते सुनो छैल छबीलो वहै, तबते या दशा
सुनो ताकी रहै । रहै ध्यान धरे निशिवासर
श्याम, सनेहकी चाह सदाकी रहै ॥ अस्कंद
भनै वही बैननमें, अरु नैननमें वही झाकी रहै ।
चितमें जियमें तनमें मनमें मृदुमूरति मोहनी
छाकी रहै ॥ ६७८ ॥

दोहा ।

परयो आन ऊपर सुने, श्याम काम छबिजाल।
हिय हरपत पुलकित वदन, मिलन चाह करिबाल।

विब्बोक लक्षण दोहा ।

करे निरादर पीवको, त्रियकर हृदय गुमान ।
ताहि कहत विब्बोकहै, नृप अस्कंद वखान ॥

विब्बोकका उदाहरण--सवैया ।

आये इतै अधरान धरे यह, बॉसकी बॉसुरीमें कछू गावत । मोहिं सुनाय रिझाइवेको चित, चोप चढ़े यह प्रेम बढ़ावत । त्यों अस्कंद भनै रसके वश मे कछू तो हिये लाज न आवत । मैं वृषभानुकी हो तनया, तू अहीरको पूत जो गाय चरावत ॥ ६७८॥

दोहा ।

तमक वजावत बॉसुरी, रस वरसावत आन ।
जानत जात न आपनी, हमसों करत सयान ॥

विहतलक्षण-दोहा ।

लाज विवश त्रिय पीवसों, जो कछु बैन कहैन ।
पूरण अभिलाषान सो, विहत हाव कहि ऐन ॥

विहतका उदाहरण-कवित्त ।

बैठी मणिमंदिरमें नव व्रज बाल जहां,
आये नँदलाल देखि हियमें सुहरपात ।
लाजवश येकहू न आये काहि बैन भई,
छुवत छराको छोर अतिही प्रसन्न गात ॥
भनत अस्कद बढ़ी मैनकी तरंगनमें,
परशत अंग पट घूँघट उघरजात ।
ऊपर परत डीठि तनु घनश्यामजूके,
अचरज विशेष चंचलासी चमक जात ६८१॥

दोहा ।

पिय परशत तनु मनाहि मन, हरषत कहत न बैन ।
वदन विलोकत चतुरई, करकर बाँके नैन॥६८२॥

कुट्टमित लक्षण—दोहा ।

सुखमें दुख झुठ रोपको, दरशावत जो भाव ।
पियके मिल तनुमें अली, सुई कुट्टमित हाव ॥

कुट्टमितका उदाहरण—कवित्त ।

बैठी राजमंदिरमें राजत किशोरी भोरी,
बैसवर थोरी हरि आयो करि हेतहै ।
लेत गलबाही कहै मुखते सुनाही नाही,
पट करि वोट चाह चुंबन न देतहै ॥
भनत अस्कंद दोऊ करसों दुरावै कुच,
आनँद बढ़ावै नेह रसके समेतहै ।
कछु झझकारत सुनैन भरि कंज ऐसे,
छलबल लालबाल वशकरि लेतहै ॥ ६८४ ॥

दोहा ।

मुख फेरत हेरत हरै, गरे लगावत लाल ।
मिलत नेह दूनो करत, नाही करत रसाल ६८५॥

हेला लक्षण—दोहा।

पियसो करै विलास जो, बाल ढिठाई संग।
हेला हाव सुग्यारहौ, नेही मदन तरंग ॥ ६८६ ॥

हेलाका उदाहरण—सवैया।

पीतपटी लकुटी लई छीन, सु रासमें श्यामहि नारि बनावती। अंजन ऑजि उढाइकै चूनरी, नैन नचाइ करै मनभावती ॥ त्यों अस्कंद भनै मुसक्याइ, रिझाइकै गेहकी राह बतावती। भेद न पावत शेष महेश गुवालिन ताहिये नाच नचावती ॥ ६८७ ॥

दोहा।

नवलकिशोरी लालको, केते नाच नचाइ।
दौर दौर छोंडत गहत, हँसत हँसावत जाइ ६८८॥

बोधक लक्षण—दोहा।

पिय त्रिय बोधित भाव कछु, करत क्रिया जहँठान।

सो बोधक लक्षण कहे, द्वादश हाव बखान ६८९॥

बोधकका उदाहरण-सवैया।

दुओगये झूलिबेको नवकुंज हिंडोलनापैचढ़ एकही संग।घटावत पैग बढ़ावत में मिलिजात दुहूँ नके अंगसो अंग ॥ भनै अस्कंद बढ़ै हियमें, रति प्रेमपयोनिध कैसी तरंग । त्रियामुखते वनमाळ गहो, पिय चुंबन लेत झरै रसरंग ॥ ६९० ॥

दोहा।

लगत पवन पटउडतकुच,खुलत गहत लखिलाल।
पकरलेत वनमाल तब, टोरनको ब्रजबाल ६९१॥

इति श्रीशिवसुत पोडशनाम मताप अनुभारतीज्ञ श्रीमन्महाराजकुमार श्रीमत्कुंवर स्कंदगिरि विरचिते रसमोदकाभिधे काव्ये श्रीराधाकृष्णविहारे कविजनरसिक हृदयानंददायने अनुभावप्रकरण तृतीयोल्लास ॥ ३ ॥

चतुर्थोल्लासः ४.

अथ संचारी भाव-दोहा।

थायीभावनमें रहत, रसथिर घूटत आव।
नौऊ रसमें संचरत, सो संचारी भाव ॥ ६९२ ॥

दोहा।

याते प्रथमहि कहतहौ, संचारिनके भेद।
इनके पाछू वरणिहौ, थायी भाव निवेद ६९३ ॥

संचारिनके नाम-छंद।

निरवेद कहत गालनि शंका औ असूया जानिये। मदश्रमहु धृतआलस्यऔर विषाद यों मति मानिये चिंता सु मोह सुस्वप्न और विबोध स्मृतिकोकहै। पुनि कहि अमर्ष सुगर्व उतसुक तासु अविहित्तहि कहै ॥ कहि दीनता अरु हरष वीडा उग्रता निद्रा सुनो। अरु व्याधि मरण न अपसमारहि गाइ

आवे गहि गुनो॥ पुनि त्रास अरु उनमाद जड़ता चपलता वेतर्कहै । ये नामसंचारनिके तेंतीसहू इहिविधि कहै ॥ ६९४ ॥

निर्वेदन लक्षण–दोहा ।

विपति ईरषा ज्ञान हिय, खेद पाइ जो होत ।
निजनिंदा फिर उनहिते, निर्वेदा सु उदोत॥६९५॥
निर्वेदहिते भाव ये, प्रगट होइ निजगात ।
अश्रु ये वरण दीनता, अति उसाँसकी बात ॥

निर्वेदका उदाहरण–सवैया ।

छोड़ि सबै हरिकी चरचा यह नेहकी राह निवाह रही मैं। सो अब एकहू आई न काम वृथा मतिमंद भईरी सही मै ॥ त्यों अस्कंद भनै मनके वश, गेहकी लाज न एक गही मै । पीरी परी नही सीरी परी कोऊ, सीरी परी जो हिये न चही मै ॥ ६९७ ॥

दोहा।

पगी प्रेमवश मे रही, छोड़ सबै गृहकाज।
भजे न गोकुलचंदको, अब आई हिय लाज॥

ग्लानि लक्षण–दोहा।

भूख प्यास रति श्रमहुते, विह्वल अंग सुभाव॥
होत कंप सुरभंगहू, ये गलानिके भाव॥६९९॥

ग्लानिका उदाहरण–कवित्त।

रति विपरीत रची मोहन विहारी संग,
वारी मतवारी रतकारीही ललकहै।
भनत स्कंद केलि कलित कलान ठान,
बैठी रतमान आन कंपत पलकहै॥
टूटे हिय हार बार विथुरे विराजतहैं,
शिथिल सुगात भये आँचल पुलकहै।
दरश रसीले परे नेहमें रँगीले ऐन,
नैनन झलक पंचशरकी छलकहै॥ ७००॥

दोहा ।

थकित भई रतिरंगमें, प्यारी कंपित गात ।
आँगनमें बैठी कढ़े, मुखते लहग्त वात ॥७०१॥

शंकालक्षण–दोहा ।

दुवन क्रूरता मानिकै, अपनीही अनरीत ।
ताहीते शोचत हिये, सोशंकाकी प्रीत ॥ ७०२ ॥

शंकाका उदाहरण–सवैया ।

टोरिगयो ; हियको हरवा, अरु मोरिगयो नथकी ;नथगूंझहै । खोरगयो नवसेज वनी, औ विथोरिगयो यह माँग अवूझहै ॥ त्यों असकंद भनै यों दशा,लखि का कहौगी कोऊ कारण बूझ है। छोर छराके छुटे अँगिया फटी टूटी तनी ननदीको न सूझहै ॥ ७०३ ॥

दोहा।

नींदभरी अँखियाँ लखै, तैसे अरुण कपोल।
कौन बूझिहै ज्वाब यह,कहा देउगी बोल॥७०४॥

असूयालक्षण-दोहा ।

जो सुख लहने औरको, हियमें येही ठान ।
दुःख दुष्टता क्रोध कर,यही असूयाजान॥७०५॥

सवैया ।

परी है धुन कानन बाँसुरीकी, विरहानल झूकनसों भरी है। भरी है विषसे या विसासिनरी अधरान धरी तिहको हरी है॥ हरी है वश याके फिरे वनमें, अस्कंद भने यह का करी है। करी है जिन प्रीति सु वोछिनकी, तिन प्रीतम सों हमें का परीहै ॥ ७०६ ॥

दोहा।

कोरनकी येही दशा, अलिलौ देखे कूर ।
रस चाहै जानै हिये, काठ सजीवन मूर ॥७०७॥

मद लक्षण-दोहा ।

के मिहदी के पानके, धन यौवन के रूप।
भाव लहै मदको तहां, सो मद कहत अनूप ॥

मद उदाहरण–कवित्त।

दंपति सुरति रची विरह अनंद भरे,
नेहकी तरंगनके वढ़त तरोरेहैं ।
झुकि झुकि झूम रहे अधर सुधारसको,
अति मदमाते करैं लाजहू किनारेहै ॥
भनत अस्कंद ध्यान एकनको एक धरै,
श्यामा उर श्याम श्याम श्यामा उर धारेहै ।
पीवत छकेहै छवि यकटक देखि देखि,
रसकी गुलेगुलाव हुइ मतवारेहै ॥ ७०९ ॥

पुनर्यथा–कवित्त।

वनि वनि वैठे मतवारे रसमंदिरमें,
झूमत झुकत करै वातन गहरको ।
छिन छिन चोप चाह चौगुनी चढ़त वाल,
मिहदी रचाये पानवीरी दई हरको ॥
भनत अस्कंद तैसी युगल किशोर वैस,
चतुर चवाइनके ,छोड़छाड़ डरको ।

रूपमद छाके दुवो रतकी उमंग ठान,
प्यारी लखै आनन पियारो लखै करको ॥

दोहा ।

डीठ तार कंचन अगिन, मदन सुहाग सनेह ।
जुरत जुरी छूटै न छबि, मद पीवत कर तेह ७११॥

श्रम लक्षण–दोहा ।

कै रत कै गतते हिये, खेद होइ श्रम जान ।
ताहीमें द्वै भाव ये, स्वेद उसासहिमान ॥ ७१२ ॥

श्रमका उदाहरण–सवैया

खेलिकै आइ थकी थिर ह्वै परयंकपै पौढ़िरही सुखसानसे । प्रीतम आइ जगाइदियो सुख, बैन कढ़े न कछू अलसानसे ॥ त्यों असकंद लई भरि अंक, हँसाइ रिझाइ कछूक सयानसे । लेत उसास मयंकमुखी बढ़ि, स्वेदके बुंद चुवै मुकतानसे ॥ ७१३ ॥

दोहा

स्वेद गिरत बढ़ि वदनते, अलकन ऊपर बूंद ।
मनहुँ कंजते झरत है,मधुकर हित मकरंद॥७१४॥

धृत लक्षण--दोहा ।

साहसते कै ज्ञानते, कै सुसंगते वित्त ।
धरै धीरता धृत कहै, जे कवि रचत कवित्त॥७१५॥

धृतका उदाहरण-सवैया ।

धीरज राख हिये मन तू, विन धीरज काम न एक सरै है । काहु दिना मनमोहनजू फिर, मेरहि द्वार सुवीण बजै है । त्यो असकंद भनै यह रीति, सुनीति बनै पै कुनीति नरैहै॥ जाने दियो सुखमें दुखहै, सु वही दुखमें सुख वेगहि दैहै ॥ ७१६ ॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

बाँधे पट पीत मोरमुकुट सवाँरे शीश,
ढारे वनमाल आनि बाँसुरी बजावेगे ।

झुकि झुकि श्याम यही सघन लतानननमें,
मधुर मनोहर सुतान रस गावेंगे ॥
भनत अस्कंद कोक चातक मयूर शोर,
उपवन बाग नदी नदह सुहावेंगे ।
विधनै रच्यो है जोपै परम सनेह तोपै,
धीरज हिये तू राख वेई दिन आवेंगे॥७१७॥

दोहा ।

नेम निबाहत जगतको, रसिकनको सरदार ।
याही ते जग विदित है, नाम जगत आधार॥७१८॥

आलसलक्षण–दोहा ।

रतिरणते कै जगनते, जो उपजै अलसान ।
आलस ताहीको कहत, जे कवि सुमति सुजान ॥

आलसका उदाहरण–कवित्त ।

वृंदावन वीथिनमें रहस मचायो श्याम,
श्यामा अनुराग भरी छबि दरशत है ।
जागी प्रीतिरीतिमें छकी है छबि

प्रेमकी तरंगन अनंग सरसत है ॥
भनत अस्कंद सुधानिधिसों वदन देखि,
कुवॅर किशोरहो चकोर परशत है ।
देह भरी आलससो नेहभरी डीठि लसै,
नींदभरी ऑखिनसों रस बरसत है ॥ ७२० ॥

दोहा ।

पिय परशत तनु हरषमन, अतिहि प्रफुल्लित गात ।
नींद भरी अॅखियानसों, प्यारी कछु अलसात ॥

विपाद लक्षण-दोहा ।

चलै न एक उपाइ जहँ, शोच बढ़ै हिय आन ।
सो विपाद भाषत रसिक, जे कवि बुद्धि निधान॥

विपादका उदाहरण-सवैया ।

व्रजराजके काज चली सजिकै, मिलिवेको
सहेटमें ज्यों घनहै । नदिया बढ़ी पंक भई मगमें
झलाझोकन सों वरसों घनहै ॥ अस्कंद भनै

तरु नीचे खड़ी, हिये शोचत बात कहावन है। मनमोहनको मिलिबोहु गयो, ननदीके उराहनेको सुनहै ॥ ७२३ ॥

दोहा ।

होत न मन अभिलाष कछु,सुमति कुमति ह्वैजात।
अरे नेह धीरज धरै, विधिसों नहीं वसात ॥७२४॥

पुनर्यथा-सवैया ।

लखौ चारहू ओर दिशा विदिशा, वगरो योव-संत पसारो किये । पिक मोर चकोर न मानै कह्यो, चले आवत भोर दरारे दिये ॥ अस्कंद भनै तुम ऊधौ सुनौ, किहिभाँति सों धीरज धारै हिये। हम तौ व्रजकी वनवासी भई वे अनंद भये इक दासी लिये ॥ ७२५ ॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

नवव्रजवाल नंदलालको लेआई गहि,
यशुदा हमारे चोर माखन चुरायो इन ।

भनत अस्कंद सुनि दौरि आई मंदिरते,
ताही क्षण रूपनाह ग्वालनीको धरो तिन॥
बूझत कहाँहै कौन ठामहै कितैहै गयो,
कौनको गहेहै कहा तू तोरी बतावै किन।
देखतही वैसही ठगीसी रही ठाढ़ी ठौर,
बोली वह चोर मेरी आंखिन समानो इन७२६

दोहा ।

कढत न कौनो यतनसे, देती तुम्हें दिखाइ ।
छिप्यो श्याम पुतरीन में, वही साँवरो आइ ॥

मति लक्षण–दोहा ।

उपजै हिये विचारवर, नीति निगमते आन ।
ताही को मति कहतहैं, नृप अस्कंद बखान ॥

मतिका उदाहरण–सवैया ।

वह दीनदयालु कृपा करिहै, छिन एकको ध्यान सुभारियोना । चितको वशमें करि चोप चढ़ाइ, मनोरथ और सम्हारियोना ॥ स्कंद

भने अपने मनसों, इतनी मति तो तुम टारियो ना। करियो सब काज भले जगके, इक रामको नाम विसारियो ना ॥ ७२९ ॥

दोहा।

रसना रस चाख्यो बहुत, रामनाम रस चाख।
चाख चाख विधने करे, वेद भागवत शाख७३०॥

चिंता लक्षण-दोहा।

चिंता कौनिहु भाँतिकी, अपने चितमें होत।
ताहीको चिंता कहत, रसिक जननके गोत॥

चिंताका उदाहरण-कवित्त।

गोकुलकी गैल में बनायो घर ऊंचो करि,
गुरुजन लोगनको नाम कहा धरिये।
आवे इत बाँसुरी बजावे मृदुताननसों,
कानन सों रैहे बची जौलों हिय डरिये ॥
भनत अस्कंद चोप चौगुनी चढ़ावे अंग,
मदन बढ़ावे क्यों न नेह वश परिये।

प्रीतम न आवै रैनि कितहूँ वितावै श्याम,
सखिन मिलावै सो उपाइ कौन करिये॥७३२॥

दोहा।

टरत न कौनौ भाँतिसो, चलत न अपनी नीत।
मोको जानी जातहै, होत साँवरो मीत ॥७३३॥

मोह लक्षण-दोहा।

जबै आपनी देहको, ज्ञान आपुही जाइ।
चिंता अरु दुख विरहको, मोह कहत कविराइ॥

मोहका उदाहरण-सवैया।

मची फाग लली सँग खेलै सबै, वहाँ आगयो श्याम कहूँ वनसों। तहाँ नैननही की चलाचलीमें नजरै जुरी दोहुँनकी तनसो। स्कंद भनै सुधि नेक रही न खडे रहे दोउ सँकोचनसों। मनमोहन मोहि प्रियासों रहे, प्रिया मोहिरही मनमोहनसों ॥ ७३५ ॥

दोहा ।

लागी लगन सनेहकी, मदन भयो बिचवान ।
मोहिगये मन दुहुँनके, डीठ करी पहिचान ७३६

स्वप्नलक्षण-दोहा ।

जो सोवत सुखनींदमे, स्वप्न विलोकत ऐन ।
सोई स्वप्न विचार कर, कवि भापत मन चैन ॥

स्वप्नउदाहरण-सवैया ।

प्यारी परी परयंकपै सोवति, रूप झलाझलकी झलकैहै । देखरही मनमोहनको, अनुसारतवैन मलै पलकैहै ॥ त्यों अस्कंद भनै पट वोढ़त, वोट करै छतियां ललकैहै । चौंक परी सखी भेंटतहीं, मुखचंदपै छूटपरीं अलकैहै ७३८

दोहा ।

जगत कहत सखियानसों, सुख सपनेकी बात ।
मेरो मन हरिने लियो, हिय खाली अलसात७३९

विवोध लक्षण–दोहा ।

जगत नींद श्रम खोइकै, जो हियमें अलसात ।
सोविवोध वर्णत सुकवि, अतिहीं प्रफुलित गात ॥

विवोधका उदाहरण–कवित्त ।

प्रातसमै प्यारी उठि बैठी परयंकही पै,
नींदभरी ऑखिनसों हिय अलसाइकै ।
पीक भरी पलकै त्यों अमल कपोलनपै,
काजरकी रेख फवी अतिसुख पाइकै ॥
झॉकत झरोखे छूटि अलक छिपायो मुख,
भनत अस्कंद लियो कर सुरझाइकै ।
संधि पाइ मानौ शशि ग्रसित कियोहै राहु,
तजिकै विरोध लीन्ह्यों कमल छुड़ाइकै ॥

दोहा ।

लपटानी पियसों अली, मनमानी जगभोर ।
ज्यो डूबत ऐंचत गहत, पावत चंद चकोर ७४२

स्मृतिलक्षण–दोहा ।

सुमिरण बीती बातको, करत हियेमें जौन ।
ताहीको स्मृति कहत, जे कवि रसके भौन७४३

स्मृतिका उदाहरण–कवित्त ।

बाँसुरी बजाइबो रिझाइबो सुगाइबोई,
नेह सरसाइबो निकुंज सुखसारीके ।
रहस रसमंडलमें नाचिबो नचाइबोरी,
खेलिबो खिलाइबो अनंद अधिकारीके ॥
भनत अस्कंद मढ़ी चित्तमें हमेश रहै,
प्रीतिकी प्रतीतिवारी छवि मतवारीके ।
भूलत न एकोक्षण झूलत सदाहीरहै,
नैननमें मनमें चरित्र गिरिधारीके ॥ ७४४ ॥

दोहा ।

झुकि झुकि कदमलतान तर,वंशी धरि अधरान ।
कान्ह बजावत तान जब, कोनमिलैतजि मान

पुनर्यथा–सवैया ।

लाल गुलाल वलाहकते, वरसे झरी झोंकन केसर रंगकी। त्यों अस्कंद छटा छविकी, चमकै चपलासी मनोहर अंगकी ॥ लै गलबाँही अनद कियो, वरणौं का दशा वह मैन उमंगकी। भूलै नहींहमको कबहूँ,वह फागकी खेलन साँवरे संगकी।

दोहा ।

का फूलतती केतकी, का गुंजतते भौंर।
का झूलतते मिलि सबै, अबका कहिये और ॥

अमर्ष लक्षण–दोहा।

दूजे को अभिमान जब, मेटब चाहत ऐन।
सो अमर्ष वरणत सुकवि, करत हिये महँ चैन ॥

अमर्षकाउदाहरण–सवैया ।

कर कंजन रंजन खंजनके मन, अंजन नैन लगावतिहै। मुख खोलति बोलति बैन सुधासम, कोकिल चंद लजावतिहै ॥ स्कंद भनै अलिकी

अवली, अलकै छुटकाइ दिखावतिहै । मद भंजन सौतिनके हियको, पियको तिय बोलि पठावतिहै॥

दोहा ।

नथ पाहिरत लखि कीर तनु, मेटनको अभिमान ।
पान खाइ फल बिंबपै, फेंकत पीक सुजान॥७८०॥

गर्वलक्षण–दोहा ।

जहँ बल विद्यारूपते, प्रगट गुमान दिखाइ ।
गर्व कहत ताको सुकवि, नेहहिये सरसाइ ॥७८१॥

गर्वका उदाहरण–कवित्त ।

पकरलिआऊंना गुविंदको निकुंजनते,
इन कर कंजन ते छूटिबो छुड़ाऊंना ।
चरित दिखाऊंना अनेक बहुभाँतिनके,
बैननते रसकी उमंग जो बढ़ाऊंना ॥
भनत अरुकंद नैन सैनन वशी करके,
अलकन बीच ईंच मन उरझाऊंना ।

मेघनके मोरनके चंदके चकोरनके,
गुणना कराऊं तौ मैं ग्वालिन कहाऊंना ॥

दोहा।

मेरेही आये इतै, चखन चकोरन कीन।
प्रफुलित भई कमोदनी, पंकज भये कलीन७८३॥

उत्सुकताका लक्षण–दोहा।

जहाँ मित्रके मिलनको, सहि नहिं सकतविलंब।
उत्सुकता तासो कहत, जे कविमति अवलंब ॥

उत्सुकताका उदाहरण–कवित्त।

ज्योंही रविमंडल छिप्योहै मेरुमंडल में,
त्योंही मन अधिक अनंद भयो प्यारीको।
मिलन चलीहै अति आतुर उमंग ठान,
भूलगये भूषण मनोज मतवारीको ॥
भनत अस्क़द मोर सुवश चकोर करे,
वदन प्रभातै मंद चंद उजियारीको।
कुंजनविहारीको मिलीहै अनुराग वारी ॥

कौतुक कलारी चंचलासी घटा कारीको ७५५

दोहा।

मिलन चली आतुर अली, मग पग धरत न धीर।
जैसे कड़ी कमान ते, छूट जातहै तीर ७५६॥

अविहित लक्षण-दोहा।

चतुराई करि आपनी, दशा दुरावति जौन।
भाव बतावति ताप तजि,अविहित कहिये तौन॥

उदाहरण-सवैया।

ज्योंहीं गई चलि कुंजनमें, लखि बोलकुहे कुहे शोर छयेहै। चोंच चलाई कपोलनपै, मुख फेरत वेणी विथोर गयेहै॥त्यो अस्कंद भनै दशा और कहै दृग आवत ये उनयेहैं। भागत भाग बची हौ भटू, वन लागन मोर चकोर भयेहै॥

दोहा।

त्रिय पिय लखत मनोजवश, ठाढ़ी कंपित गात।
बूझे सिसकत दाबि कुच, कहै शीत दरशात॥

पुनर्यथा–सवैया ।

ऐसी घनी घमसान मची, अधाधुंध गुलालकी धूमर छाई । हौंहूं गई धँसि ज्योंहीं वहाँ बिछलो पग रंगमें नीचही आई ॥ त्यों अस्कंद भनै सरा-बोर, भई मनमे अतिही अकुलाई । का कहो आज दबीती तहां, पर मोहन वेगही मोहिं उठाई ७६० ॥

दोहा ।

सुधि आई पियकी तिये, भरिलाई युग नैन ।
कहत सखिन सो देखियो,कहूँ दर्‌यो त्रसरेन७६१॥

दीनता लक्षण–दोहा ।

दीन परै जो विरहते, या दुखहीते कोइ ।
ताहि रसिक मन मथन कर, कहै दीनता सोइ ॥

दीनताका उदाहरण–सवैया ।

आग लगावत है तनुमें, विरहानलकी चित चित घनेरी । चोप चढ़ाइ चकोरनको, मुखफेर करै फिर रैनि अँधेरी ॥ त्यो अस्कंद भनै कछू

एक, उपाय चलै न बनै सुन मेरी। जौलौं विदेशते आवै न कंत, हहा विधि मेटिदे चंदउजेरी॥

दोहा।

हिमकर अमर विशेषहो, सुधारूप सरसाइ।
पै न काहु वे मारिके, फिर तुम दियो जिवाइ॥

पुनर्यथा–सवैया।

प्राणनते हियते मनते सखि, तोसों न राखत नेक जुदाई। तापै इतेक करी विनती मैं, हहालौ कहा पै दया नहि आई॥ येती कठोरता मोसों कहा, अस्कद भनै तुम्है कौन सिखाई। वा मुरली मुरलीधरकी, मिस कौनहूं एकहूबार न लाई॥ ७६८॥

दोहा।

तेरेई करमें रहत, मेरे चितकी बात।
पै न करत मनकी कहूं, बेदरदिन दरशात ७८

गरजी अरजी करत है, वरजी रहत न नेक ।
परघर रैनि विताइबो,श्यामत नौ यह टेक॥७६७॥

हर्षलक्षण–दोहा ।

होइ अधिक आनंद हिय, जहाँ कौनहूं भाँति ।
प्रफुलित गात हरष यही, वरणो कविन जमाति॥

हर्षका उदाहरण–कवित्त ।

सरस रँगीली सरसीली नेह रीतनकी,
वंशी धुनि कान परी चोप चटकोरेकी ।
मुदित भयोहै मुख उदित भयो ज्यो चंद,
अधिक अनंद भरी प्रीति उर धारेकी ॥
भनत अस्कंद हिये हरषित गात भई,
आवन विचार कर प्रीतिपटवारेकी ।
हगन लसीहै अंग अंगन गसी है आइ,
चित्तमें वसीहै मुसक्यान प्राणप्यारेकी ॥

दोहा ।

सजन सजन हित ही लगी, तनु शृँगार व्रजवाल ।

मजन लजन आपुहि लगी, आये तिम नँदलाल ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

बैठी जहाँ हिरकी खिरकी, निरखे अपनो ब्रजबाल हियोहै । पल्लव फूल गुलाबके संग, सुमालिन मौर रसाल दियोहै ॥ देखतही अस्कंद भने, अति आतुरसों करि हर्ष लियोहै । दूनी बढ़ी दुति आननकी, मनौ पूरण चंद प्रकाश कियो है ॥ ७७१ ॥

दोहा ।

रविको छिपत कुमोदनी, ज्यों पावत सुख चैन ।
त्यों हरषित प्यारी भई, लखि अँधियारी रैन ॥

वीड़ा लक्षण–दोहा ।

लाज हिये अतिही बढ़े, कौनहु कारण पाइ ।
वीड़ा ताहि वखानही, जे प्रवीण कविराइ ॥

वीड़ा उदाहरण–कवित्त ।

कुंदनते सरस अंग दरशत भूषण है,

जटित जवाहिरके बेदालाल भालहै ।
अलक बिहूंध मोती जाल सों कपोलनपै,
जरीकी किनारी श्वेतसारी वोढ़ी बालहै ॥
भनत अस्कंद नंदलालको बिलोकतहीं,
लाजवश घूँघट कर बदन रसालहै ।
मानों मारतंड मंड उतर अकाशहीते,
तारन समेत चंद गंगमें विशालहै ॥ ७७४ ॥

दोहा ।

नैन मिलाय रिझायले, कत लजाय करि चाह ।
क्षणक छबीलेको छुवन, देत नाहिनै छाँह ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

तुमसी नही देखी कहूँ अबला, पै अनीति लखे कहि आवतहै । मिलि मोहनसो रतिकी बतियाँ, करि क्यों नहीं चोप चढ़ावतहै॥ अस्कंद भनैं यह योवन रंग, सदा सखि जोर जनावतहै । पर प्रीति प्रतीतिमें लाज कहा, जो घरी फिरि फेर न आवतहै ॥ ७७६ ॥

दोहा।

सुनत सहेलिनसों जबै, पिय मिलिबेकी बात।
रहत बाल शिरनाइकै, दाबि कपोलन पान॥

उग्रता लक्षण–दोहा।

कहत उग्रतातासुको, निरदयपन नहिहोइ।
रसग्रंथनमें वरणिकै, कवि कोविद सब कोइ७७८॥

उग्रताका उदाहरण–सवैया।

वजी है सुनैको सुचेत रहै, यह तीक्षणकामके बाण सजी है। सजी है कहा वश आपनो री, कुलकानि तो याही सनेह तजी है॥ तजी है यहू नेहसे वसके, असकंद भनै रसरंग मजी है। मजी है कठोर रजी विपसों, विसवासिन बाँसुरी फेर वजी है॥ ७७९॥

दोहा।

रे विसवासी भौर तू, इत कत आवत दौर।
क्यों रोवतसों फिरत है, मोहि रुवावत और७८०॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

आवे घनघोर जोर दिशन दबाये दौर,
धुरवा धुकार करै नीर वर झिरकै ।
चातक चकोर मोर दादुर मचाये शोर,
चंचला चमंकिरहै नेकहू ना थिरकै ॥
भनै असकंद करी विधिने कठोरताई,
पावस पठाई रहै कैसे धीर धरकै ।
बोलै अधरात जात कोकिला कसाइनसी,
कूक देत करत करेजिनकी किरकै ॥७८१ ॥

दोहा ।

मनमानी आनी हिये, करि विदेशमें प्रीत ।
निरदेपन हमसों कियो, अरी साँवरेमीत ॥७८२॥

निद्रालक्षण–दोहा ।

कहत सोइबो सुपनको, सोई निद्रा जान ।
जब अपात नाड़ी चलै, सो कवि करत बखान७८३

निद्राका उदाहरण-कवित्त।

सुमन छरीसी है परीसी परी सोवै बाल,
स्वेदकण जाल वार मुक्ताहल वृंद वृंद ।
मुकुर कपोल गोल अधर अमोल विंब,
नैन अरविंद वार अलक फणिंद नंद ॥
भनै असकंद वार डारिये निकाई कोटि,
रतिकी लुनाई औ लुनाई उपमा अमंद ।
गातकी गुराई पै ललाई वार कुंदनकी,
मुख प्रतिबिंबपै सुवार वार डारै चंद॥ ७८४॥

दोहा ।

बाल परी परयंक पर, सोवत अधिक अनंद ।
कुच पकरत चुम्बन करत, हिय हरषित नँदनंद॥

पुनर्यथा-कवित्त ।

कंचनपलँग पाये जडित जवाहिरके,
तापर सुमनसेज साजि मखमलकी ।
सोवति अनंदसों निशंकित मयंकमुखी,

अंग अंग उड़त तरंग परमलकी ॥
भनै असकंद तनु शोभित प्रस्वेद बुंद,
जलज समेत यों प्रभा है कंजदलकी ।
चकित चकोर रहै मोहि चितचोर रहै,
मंद भई चाँदनी सुचंद निरमलकी ॥७८६॥

दोहा।

अमल कपोलनकी प्रभा, कमल अरुणसम जान।
चञ्चरीक गुंजत फिरै, पुंज पुंज सुखमान ॥७८७॥

व्याधि लक्षण–दोहा।

कामविरहते होत जहँ, तनु संतापित आइ।
व्याधि कहत ताको सुकवि, रसग्रंथनमें गाइ७८८॥

व्याधिका उदाहरण–कवित्त।

सदन विसेज परी वदन भयो है मंद,
मदन बढ़ाइ ज्वाल अनिल अकूतरी।
छिनछिन आह रहै तुव चितचाह रहै,
देखतही राह रहै चित्रकैसी पूतरी ॥

भनत अस्कंद वैन चातक सुनैते बाल,
उझक परै है झाक झरफन सूतरी ।
विरह व्यथाकी कथा वरणी न जात मोपै,
लोटिलोटिजात जैसे लोटन कबूतरी ॥७८९॥

दोहा ।

दूनी दूनी बढ़ति है, छिन छिन विरह बलाइ ।
दरश नीर पाये विना, सो अब किमि सियराइ७९०

पुनर्यथा–कवित्त ।

रहत सुप्राण ताके रावरी विलोकै वाट,
सुमन कमान आन हूक सरसत है ।
हिय हहरात लेत विरह उसासहीते,
परत प्रकाश चंद गात झुरसत है ॥
भनत अस्कंद चारु चंदन गुलाबनीर,
अतर गँभीर सीर नाहि परशत है ।
बरसत मेह जोर झलन झलान तऊ,
वाके गेह ग्रीपमकी ज्वाल दरशत है ॥७९१॥

दोहा ।

वाके विरह वियोगकी, दशा कही नहिं जाइ ।
चंद चाँदनीमें परी, खरी त्रिया विललाइ ॥ ७९२ ॥

अपस्मारलक्षण–दोहा ।

श्वास बढ़ै गृहदुःखते, गिरै कंप महिआन ।
फेन कढ़ै मुखते वही, अपस्मारकी बान ॥ ७९३ ॥

अपस्मारका उदाहरण–कवित्त ।

वंशीधर बांसुरी बजावतही जाइ कढ़े,
झाँकत झरोखा रही सूधोही सुभावरी ।
ताहीतन हेर शर ऐसे नैनसैननसों,
भनत अस्कंद भई विकल सुसाँवरी ॥
झूमिगिरी घूमि नैन मुखते सुफेन बढ़े,
कंपित सुगात बात कहत न बावरी ।
ताक्षणते सेजपै परीहै चित्रकीसीलिखी,
जाक्षणते मूठसी लगीहै ढीठरावरी॥७९४॥

दोहा।

लेत उसाँस घरी घरी, परी विकल अकुलाइ।
मदनतीर तीखे लगे, घाव न परतलखाइ॥ ७९५॥

पुनर्यथा–सवैया।

काहू समै वृषभानुकी नंदनी द्वारपै ठाढी हुती सुखपाइकै। श्याम कढ़े तितही जुरे नैन लगी हिय डीठ सुबाणसी आइकै॥ त्यो अस्कंद भनै वशमैनके, चैन परी न रही मुरझाइकै। कंपितगात गिरी महिमें, हियघायलसी मनमे अकुलाइकै॥ ७९६॥

दोहा।

कहा भयो कैसो भयो, खड़ी कहै व्रजनार।
प्रीतिरीति जानै नहीं, कोटिन करै विचार॥ ७९७

आवेग लक्षण–दोहा।

चाहत वेग जु नेहते, या डरहीते मान।
सुकवि कहत आवेगहै, ताको करत बखान॥७९८॥

आवेगका उदाहरण–सवैया ।

देखी शिषा सखियानकी वान, शृंगार बनाइ वेकी मनमानी । बैठि अकेली सँवारत केश लगी हिय चाहकी राह दिखानी ॥ त्यो अस्कंद भनै इतनेमें, सुनी मनभावतेकी मृदुवानी । आरसी वोढ़नी काकई छोड,छुटीननदीके गरे लपटानी ॥

दोहा ।

सुनत श्याम मग सखि वचन, लटपटाइ उठि धाइ ।
अटा चढ़ी झांकतझरफ, चट कपाट खटकाइ ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

आज श्याम निकरो अचानक ई मारगहो,
वाँसुरी बजाय गाय मधुर मलारहै ।
कीरतिकिशोरी भोरी भनत अस्कंद भई,
गोकुल के चंदको चकोर अनुहारहै ॥
इत उत देखि चलै मग पग ठूक रही,
तन मनहीकी सुधिवुधि ना सम्हारहै ।

बोरीहीसी फिरत ठगोरी कर ख्याल लौना,
नंदको ढिठौना पट टोना गयो डारहे ॥ ८०१ ॥

दोहा।

उठिधाई सुनि बाँसुरी, आई कुंजन घौर।
पात पात ढूंढ़त फिरै, सुमनहेतु जिमि भौंर ॥

त्रासलक्षण-दोहा।

अहित कौनहूते जहाँ, भय विशेष हिय होइ।
काहूको कितहूँ कछू, त्रास कहावत सोइ ॥ ८०२ ॥

त्रासका उदाहरण-कवित्त।

बैठी सखियानमें सुमान हिय ठान त्योंहीं,
गरब गुमान भरी मोहन चढ़ाइकै।
त्योंही घन घुमड़त उमड़त आये दौरि,
बरसत जोर नीर झलन झपाइकै ॥
भनत अस्कंद भई चंचला चमंक तैसी,
तड़कि तड़ाक घोर सुनिउठि धाइकै।
तजिकै सयान भई अति भइ मान प्यारी,

पियको मिलीहै अंक हियसों लगाइकै॥८०४॥

दोहा।

चतुर चवाइनके डरन, होत दूबरी देह।
मिलि न सकत नँदनंदको, हिय गुरुजनकी तेह॥

पुनर्यथा–कवित्त।

झूलत हिंडोरे नवलाड़ली सखीन मध्य,
प्रफुलित कुंजनमें अधिक अनंदहै।
मोर करै शोर घनघोर मृदु पौन जोर,
वरसत मेह यों फुहारनके बूंदहै॥
भनत अस्कंद लाल सैनदै बुलायो आइ,
डरवश ज्वाब वाल आवत न छंदहै।
चंद ऐसो वदन विलोकि नँदनंदनको,
ताको भयो तुरत मुखारविंद मंदहै॥८०६॥

दोहा।

मधुर वचन भाष्यो सखी, ये आये घनश्याम।
सडर सुनत ताही हिये, लपटानी वह वाम ८०७

उन्माद लक्षण–दोहा ।

वचन विरथ रोदन हँसन, सुरत भूलिवो जान ।
कहत ताहि उनमादहै, जे कविजन बुधवान ॥

उन्मादका उदाहरण–सवैया ।

पागी हिये पर पूरण प्रीति सुराधिकै लागी रहै धुनि श्यामकी । रोवै हँसै करै आपुही मान सुनैहरमेहू वही रट नामकी ॥ साजत सेज भनै अस्कंद, सुभेटै न चीन्है सखी निज धामकी । मौन रहै क्षण बोलै कछूक कछूको कछू यों व्यथा वढ़ी कामकी ॥ ८०९ ॥

दोहा ।

यो मंदिर वृषभानुको, इत न कुंज घनश्याम ।
लाज न आवत नेकहू, टेरत लै लै नाम ॥८१०॥

जड़ता लक्षण–दोहा ।

ज्ञान आचरण नामकी, रहै सामरथ नाहि ।
सुने लखे हित औ न हित, कहिये जड़ता ताहि॥

जड़ताका उदाहरण–कवित्त ।

देखनके काज ब्रजराजको नवेली वाम,
ठाढ़ी रही मगमें मृगीसी पल मारैना ।
ताही समै वंशीधर बाँसुरी वजाई आय,
मधुर मलार गाइ लाज उर धारैना ॥
भूली गौन ज्ञान सुधि गेहकी न वाहि कछू,
भनै अस्कंद और कारज विचारैना ।
यकटक टारै नाहिं सखिन निहारै नाहिं,
छूटत छराके छोर एकहू सम्हारैना ॥८१२॥

दोहा ।

छवि छाके वाके लगे, दृग अनियारे जोर ।
दोहुनको दोहू लखै, जैसे चंद चकोर ॥ ८१३ ॥

चपलता लक्षण–दोहा ।

थिर ह्वै अनुरागादितें, रहै न मन इकठाम ।
चाहै चित आचरणको, सोइ चपलता नाम ॥

चपलताका उदाहरण-कवित्त ।

लगन लगीहै हिय मगन मनोज वारी,
सरस विहारी संग चाहत अनंदको ।
भनत अस्कंद रूप रतिकी हरणवारी,
मौज मतवारी छोड़ सब दुखद्वंदको ॥
भौरनकी अवली निवारत चकोरनकी,
खोलि मुख ढाँप खोलि करि छलछंदको ।
विकल निकुंजनमें ढूंढ़त फिरत ऐसो,
भरमत भौरि जैसे कंज मकरंदको ॥ ८१५ ॥

दोहा ।

इत उत फिरत मनोजवश, झँकत झरोखन ऐन ।
परी आन पिंजर मनौ, तूती नवल नचैन ८१६॥

वितर्क लक्षण-दोहा ।

कीजै जहाँ विचार मन, उर उपजत संदेह ।
सो वितर्क कविजन कहत, रसग्रंथनके नेह ॥

वितर्कका उदाहरण-कवित्त ।

होतो चलिआई जल यमुना अन्हाइवेको,

सखिन अकेली भली सूधेही सुभाइहै ।
नजर न आवै वन सघन सिवाइ कछू,
इत चली आवै देख अति सुख पाइहै ॥
भनत अस्कंद झूठी मूठी अनूठी रूठी,
यतन अनेक कौन सुमति वचाइहै ।
अरुण कपोल गोल लोल अति मोल बोल,
नैन सैन मदन उमंगको छिपाइहै ॥ ८१८ ॥

दोहा ।

कितहु रम्यो कैसो भयो, कहाँ गयो किहि ठौर ।
काननलौं कानन परी, नमन बाँसुरी दौर ८१९ ॥

इति श्रीशिवसुत षोडशनाम मताप अनुभारतीश श्रीमन्महाराजकुमार श्रीमत्कुँवर स्कदगिरि विरचिते रसमोदकाभिधे काव्ये श्रीराधाकृष्णविहारे कविजनरसिक हृदयानन्ददायने अनुभावप्रकरण चतुर्थोल्लास ॥ ४ ॥

पंचमोल्लासः ५.



अथ स्थायीभाव-दोहा ।

उर उपजत अनुकूल रस, ह्वै परिपूरण आइ ।
है सब भावनते शिरे, ते स्थायी भाइ ॥ ८२० ॥
रति कहिये पहिले द्वितिय, हासी तीजे शोक ।
क्रोध कह्यो उत्साह पुनि, भय गलानि अवलोक॥
फिर अचरज अरु खेद कहि, थायी भाव प्रमान ।
नौऊ रसके नौ इतै, वरणे कवि बुधवान ८२२

रतिलक्षण-दोहा ।

पूरण हियमें होत जहँ, प्रीति आपनी चाह ।
सो प्रवीण रति कहतहैं, जे पंडित कविनाह८२३

रतिका उदाहरण-कवित्त ।

इत उत नजरि बचाइ गुरुलोगनकी,
सजत शृंगार अंग भूषण सिहारिकै ।

वढ़त उमंग मैन सरस तरंग रूप,
दरशत प्रीति रीति रसवश डारि कै ॥
चाह करि मिलन मनोरथ हियेमें ठानि,
भनत अस्कंद सेज साजति सुधारिकै ।
साँवरी सलोनी वह मूरति मनोहरकी,
छवि छकिरहत प्रमोदित निहारिकै ॥ ८२४॥

दोहा ।

करन लगी उर चाह पिय, धरन लगी मन धीर ।
परन लगी तीखी नजर, डरन कामकी पीर ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

सखियानके संग कहूँ कबहूँ, विहँसे रसकी बतियाँसो करै । मनमंदिर वैठी अकेली कहूँ, सजिअंग शृंगार प्रमोद भरै ॥ अस्कंद भनै हियचाह वढ़ी, मिलिवेको करै मन छोड़ि डरै । मनमोहन मूरति मोहनीपै, अँखियानते रंग चुवोई परै ॥ ८२६ ॥

दोहा।

प्रेमलता पूरण हिये, बोई मदन जमाइ।
श्यामरूप तुव अमी विन, कहुँ नजाय कुम्हिलाइ॥

हास लक्षण–दोहा।

बने बनाये रूप अरु, कछु कछु भीत प्रकास।
हँसन होत तासों प्रगट, सो कहि हासविलास॥

हासका उदाहरण–कवित्त।

धरिकै सखीको रूप एक समै नंदलाल,
निकरे करि ख्याल बरसानेकी खोरीहै।
तहाँ ललताने बात राधिकै जनाई जाइ,
उन बुलवायो गई भीतरलै भोरीहै॥
भनत अस्कंद पहिचानकै विशाखहूने,
पदम बतायो लखै चरित बड़ोरीहै।
हँसि इठलाइ रहै गोपिनके वृंद वृंद,
मृदु मुसक्याइ रही कीरति किशोरीहै॥८२९॥

दोहा।

विहसि कहै कीन्ह्यो भलो, ऐसो चरित विचार।
कौन मारिहै कंसको, तुम तो भये सुनार ॥

हास्यपुनर्यथा–कवित्त।

कीरतिकिशोरी छरीदारको बनाये वेप,
श्याम ढिग आइ कह्यो भौहनि चढ़ाइकै।
लूटि लूटि खायो दधि कौनके कहेते यहाँ,
मरम न पायो अब पायो वरियाइकै ॥
कंसने बुलायो तोहिं भनत अस्कंद लियो,
कर गहि जाइ अलि मृदु मुसक्याइकै।
डर हिय मान कछू फिर पहिचान प्यारी,
हँसत लगायो अंक अति सुख पाइकै॥८३१॥

दोहा।

मिलत लख्यो सखियाननें, विहसि कही यह साँच।
चोपदारकी रीति यह, प्रथम लेतहै लाँच॥८३२॥

शोक लक्षण-दोहा ।

दुख प्रगटै हित हानितें, अहित लाभतें आइ ।
सो स्थायीभाव में- शोक कहत कविराइ ॥८३३॥

शोक उदाहरण-कवित्त ।

येतोहैं न सोच कछू ऐसे गढ़ लंकहीको,
मेघनाद आदि जोपै निश्चर भयेहै छार ।
करि पदप्रीति रीति सुमति विचारनते,
पायो जो विभीपणनेराजकाजहीको भार ॥
भनत अस्कंद एक रावण अतंकी विन,
कापर करौगी साजि अंग अंगन शृंगार ।
हित हिय जानि वैन विरह मंदोदरीके,
करुणानिधान करी करुणा कछू विचार ८३४

दोहा ।

पिय आयो परदेशते, गयो परोसी यार ।
व्यभिचारिण व्याकुल भई, पतिसो कियो बिगार॥

क्रोध लक्षण–दोहा।

शत्रुनके अपमानते, चित विकार कछु होइ।
अहित हियेके हर्षको, क्रोधकहावत सोइ ८३६॥

क्रोधका उदाहरण–कवित्त ।

आये भृगुराज कान परत अवाज कह्यो,
नृपगण देखयो जमाव जिन जोरयो है ॥
भनत अस्कंद नैन अरुण कराल करि,
ठोकि भुजदंड कंध परशामरोरयो है ॥
फारिडारा तुरत विदारि डारों अंग अंग,
भूमिपै पछारिडारों शत्रु वह मोरयो है।
खोलि खोलि पृथकबताव नतौ मारौ सब,
बोल जड़ जनक पिनाक जिन टोरयो है ॥

दोहा ।

क्रोध देखि भृगुराजको, भागी सकल समाज।
ज्यों समूह गजराजके, परयो आइ मृगराज ॥

उत्साह लक्षण–दोहा ।

लखत महाभट प्रत सुभट, चोप बढ़ै चितचाह।
सहरष अनहित वीरको, सो कहिये उत्साह ८३८॥

उदाहरण–कवित्त ।

एक समै बाणासुर कैद अनिरुद्धै कियो,
ताही समै कृष्ण द्वारकासे उठिधाये हैं ।
करि करि कोप वीर दौरत दुहूँ दलसे,
प्रबल प्रचंड चोप चोपन चढ़ायेहैं ॥
भनत अस्कंद अनी विचली निशाचरकी,
करुणा कर टेर दीन वचन सुनायेहै ।
लेकर त्रिशूल नन अरुण कराल करे,
हरप हियेमें हर बैल चढ़ि धायेहै ॥ ८३९ ॥

दोहा ।

दोऊ दल बाजे बजे, हर्ष बढ़े हिय वीर ।
उत कोटिन यादव चमू, इत भूतनकी भीर८४०॥

भयलक्षण–दोहा ।

अपनेही करतव्यते, हिय करिडर अकुलाइ ।
ताहीको भय कहत कवि, लक्षण लक्ष बनाइ ॥

भयका उदाहरण–कवित्त ।

विष रस मूल जान हियमें प्रमोद ठान,
आयोहै सुरेशभेष मुनिगण वानोहै ।
तारापति पीछे होके तमचुर बोल बोल्यो,
गौतम न जानो वह कपट विहानोहै ॥
परशत अंग कोप दरशत देख आये,
भनत अस्कंद देन शाप उर ठानोहै ।
इंद्र गयो सूख छंद वंद भूलगयो सबै,
चंद भयो मंद हिये अति अकुलानोहै ८४२ ॥

दोहा ।

इत उत मोहन चक्र चित, डरके वश अकुलाइ ।
ग्वालिनके घरमें घुसे, ऐंचि ऐचि दधि खाइ ॥

ग्लानि-लक्षण ।

सुमिरि परश मन समुझ जहँ, चीज़ घिनाही देख ।
घिन उपजे कवि कहत है, ताहि गलानि विशेख ॥

ग्लानिका उदाहरण-सवैया ।

काहू समै मदपान किये, दशशीश गयो चलि सिधु किनारे । न्हात विलोकि त्रिया सुरकी, अस्कंद भनै इमि बैन उचारे ॥ जाय कहौ अपने अपने, पतिसों चलो वेगहि संग हमारे । तासों उड़ी दुरगंधि महा, मुखफेर रहीं सबरी मनहारे ॥ ८४६ ॥

दोहा ।

नभवाणी सुनि द्विज सबै, मनमें रहो घिनाइ ।
भानु प्रताप अयानको, शाप दई रिसियाइ ॥

आश्चर्य लक्षण-दोहा ।

देखत अजब चरित्र वा, मिलत सुमिर सुनि कान ।
विस्मय होइ हिये कछू, सो आश्चर्य बखान ॥८४७॥

आश्चर्यका उदाहरण-कवित्त ।

द्रुम कदलीके युग्म शोभित तड़ाग तापै,
श्रीफल फरैहै कौन पावत प्रभाकोहै ।
तापर कपोल राजै शुक पिक मोद मान,
चंदरवि संयुत विराजत सभाकोहै ॥
भनत अस्कंद कंजकलित घटाघनकी,
तारेहै समूह तापै सकत छिपाकोहै ।
लाल चलि देखो यह कौतुक अनूप ख्याल,
परम मनोहर विचित्र रचनाकोहै ॥ ८४८ ॥

दोहा ।

कछु गजगतिके आहटन, क्षीणहोत मृगराज ।
सुनत वचन इमि सखीके, चकित भये ब्रजराज॥

पुनर्यथा- कवित्त ।

सजिकै शृंगार औ सवाँर माँग मोतिनसों,
भाल लाल बेंदाचारु भूषण सुधारेहै ।
धरकर आनन विचित्र चित्रसारी बीच,

सोवत विशाल बाल रति छबिवारेहै ॥
भनत असकंद व्रजराज आज देखो चलि,
चकित रहोगे उपमा न मानवारेहै ।
प्रफुलित कंजपै सुचंदहै प्रमोदमान,
चंदपै सुभानु उये घनपै सुतारेहै ॥ ८५० ॥

दोहा ।

नववर कंचनलता पर, चक्रवाक युग आइ ।
बैठे करत प्रमोदको,शोभा सरस दिखाइ॥८५१॥

निर्वेद लक्षण–दोहा ।

वेश्यारतके कामके, श्रमते मन पछिताव ।
उपजै हिय निर्वेद कहि, समरसथायी भाव८५२॥

निर्वेदका उदाहरण–सवैया ।

नहीं ज्ञानहु ध्यान सुजानो कछू, करि हेतु भलो तप कीन्ह्यो नही । नहि छोड़ि विषयरसकी चरचा, पदपंकजमें चित दीन्ह्यो नहीं ॥ नहि

गायो गुविंदके गीतनको, अस्कंद भनै प्रभु चीन्ह्यो नहीं। मन कीन्ह्यो कहा इतना करिकै जुपै रामको नाम सुलीन्ह्यो नही॥ ८५३॥

दोहा।

सरसविनोद निशिदिन करत, चित लगाइ चितहार।
रामनाम मन एक क्षण, क्यों नहि लेत गँवार॥

पुनर्यथा–कवित्त।

छलबल और काज निरस प्रसूननमें,
चित्तको लगाइ फेर इत उत टारै ना।
फिर पछताइ आइ कठिन कठोर हीमें,
गुंजत रहत नेक सुमति विचारै ना॥
भनत अस्कंद तू अनंदकर प्रेम ठान,
बात सब तेरे हाथ क्यों अब सुधारैना।
भ्रमत कहाधौ फिरै छोड़ मकरंदमूल,
भौर मन शंभु कंज पदन बिसारैना॥ ८५५॥

दोहा।

पग्यो रहै निशिदिन सदा, विपरसहीको मान।
करै एकहू क्षण न मन, शंभु उमाको ध्यान ८५६॥

इति श्री शिवसुत षोडशनाम प्रताप अनुभारतीज्ञ
श्रीमन्महाराज कुमार श्रीमत्कुँवर स्कंदगिरिविर-
चिते रसमोदकाऽभिधेकाव्ये श्रीमहाराजा-
धिराज श्रीराधाकृष्णविहारे कविजनर-
सिक हृदयानंददायिने स्थायीभावप्रक-
रण पंचमोल्लास ॥ ५ ॥

षष्ठमोल्लासः ६.

अथारसनिरूपणम्--दोहा।

मिल विभाव अनुभावके, हाव भाव सब आइ।
संचारिनके वृंदमय, रस पूरण थिर भाइ॥
ज्यों विकार हेमंतऋतु, नीर बरफ दरशाइ।
रसस्वरूपथिरभाव तिमि,परनित कहि कविगाइ॥

कहि संयोग वियोगरस, सो शृँगार पुनिहास।
करुण रौद्र पुनि वीरको, चार प्रकार विलास ॥
भय विभत्स अद्भुत कहे, शांत सरस रस रूप ।
नवरसके ये नामहै, लक्षण लक्ष अनूप ॥ ८६० ॥

शृंगारलक्षण–दोहा।

स्थायी रत भावहै, जाको सो शृंगार ।
संचारी अनुभाव मिलि, अनुविभाव सुखसार ॥
प्रीति अपर पर जाइ जो, रति मन लगन सुजान ।
थायि भाव शृंगारको, वरणत कवि बुधवान ॥
सो शृँगाररस भाव थिर, पूरण रत जहँ होइ।
आलंबन अरु दूसरो, उद्दीपन कहि सोइ ॥ ८६३ ॥
आलंबनके नायिका, नायक तहाँविचार।
सखी सखा वन बाग ऋतु,उद्दीपन निरधार॥८६४॥
मृदुमुसक्यान विनोदयुत, हाव भाव तहँ मान।
है शृँगार अनुभावके, वरणत सुकवि सुजान ॥
उन्मादादिक भाव जे, संचारिनके ठाइ ।

श्याम देवता श्याम रँग, सो शृँगाररस गाइ ८६६ ॥
सोद्वै भाँति बखानही, मिलन शृँगार सँयोग ।
अटक मिलनकी होत कछु, सो शृँगार वियोग ॥

संयोग शृंगार—सवैया ।

हरै हँसि जोरत नैननको, रसरंग भरी बतियाँ करि चाहि । सजै इक एकके अंबर अंग, चरी सुघरीकि सराहि सराहि ॥ भनै अरुकद छके मदमे, बढ़ै मैन तरंग उमंग अथाहि । करै नित मोद प्रमोदित होत, दुवो रितिप्रीति निवाहि निवाहि ॥ ८६८ ॥

दोहा ।

प्रेम पयोनिधिके भये, युगल मीनसम मोद ।
सरस रूप गतिकामते, दंपति करत विनोद ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

सकल शृँगार साजि देखि रतिमैन लाज,
वैद बढ़ सीकरत प्रीतिरति रातेहै ।

विहरत मोदमान कोटिन कलान ठानि,
मृदु मुसक्याइ चख चपल चलातेहैं ।
भनत अस्कंद प्रेम उठत तरंग रंग,
बढ़त अनंग रंग अंग दरशाते है ।
लखि लखि होतहे निहाल एक एकनपै,
सरस नवेली लाल युग रसमाते है ॥ ८७० ॥

दोहा ।

अति मदमाते प्रेममय, निशिदिन आठो याम ।
ह्वै चकोर ह्वै चंदलौ, देखत श्यामा श्याम ॥

वियोगशृंगार लक्षण–दोहा ।

जहँ बिछुरन दोहूनकी, दोहुन व्यापत आइ ।
विप्रलभ शृंगारसौं,विरहदशा सम पाइ ॥ ८७२ ॥

वियोगशृंगारका उदाहरण–

कवित्त ।

बैठि निज मंदिर विसूरति पियाकी वाट,
गणित गनावति मुहूरत जवाई सों ॥

ज्योंज्योंहोतरातत्योंत्योंअतिअकुलातहिये,
धीरना धरात काम बढत सवाई सों ॥
भनै असकंद तैसी शरद हिमंत बीते,
शिशिरको अंत औ वसंतकी अवाई सों ॥
भरिभरिरहै प्यारी विरह भभूकन सों,
जरि जरि उठत कलानिधि कसाई सों॥८७३॥

दोहा।

विरहविथा कासों कहौ, पिय छाये परदेश ।
अबलौ घर आये नही, बाधक मदन कलेश ॥

सवैया।

देखो जितै तित फूलिरहे वन बागचहूँदिशि फूल सुहाये । तापर देतहै कोइल कूक सुहूक उठै दिय मैन बढ़ाये ॥ त्यों अस्कंद भनै अलि पुंजके पुंज सु गुंज करै फिरै धाये ॥ मोहि सतावतहै विरहा अबलौं सखी श्याम घरै नही आये ॥

दोहा ।

बिन माधो आधी घरी, कल न परत पलएक ।
बिरह व्यथा छिन छिन बढ़े, अनत कराई टेक ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

येरी वीर धीर तनु नाहि मनमोहनके,
करि निठुराई गये आई ऋतु वेश लूह ।
पापी पपीहा पिय पियकारि पुकारे जोर,
चहुँधा दिखात मालतीके फूल फूले जूह ॥
भनत अस्कंद तरु सफल सलोलिनपै,
कोइल कजाखी करि करत करारी कूह ।
झोरन रसाल वेश मौरन रसाल तापै,
अति विकाराल रूप देखे है अली समूह८७७॥

दोहा ।

बोलै पिक डोलै विटप, त्रिविध सुगंध समीर ।
गुंज करै अलि कुंजमें, मीन हिलोरे नीर ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

नटखट बानि करि झटपट लीन्हों मोहिं
लटपट मचाकै गये दीन्हीं तजि गोकुला ।
कीन्हींहूँ न कीन्ही चीन्हिमनदै सुहानी भई
तनकी दिखान ऐसी नहुकी नयो कला ॥
भनत अनंद देख ताको चंद मंद होत
तारागन वृंद साथ स्रवत समो कला ।
अवलौंनआयो सो रमायो मन भायो कियो
आयोरी वसंत कूक दीन्हीं नाग कोकिला ॥

दोहा ।

ाग जाहिर जानत सबै यह सनेहकी रीति ।
नकीनिये रेदई निरमोहीसों प्रीति ॥ ८८० ॥
ा विवोक शृंगार यह तीन भाँति निरधार ।
तेहि पूरब अनुराग पुनि मान प्रवास प्रकार ॥

पूर्वाअनुराग लक्षण—दोहा ।

याकुलता जो मिलनते, प्रथम होइ कछु

सो पूरव अनुराग कहि, रसग्रंथन में गाइ ॥८८२॥

पूर्वाअनुरागका उदाहरण—कवित्त ।

धीरज सुधार तेरे प्रेम हिय वाके वस्यो,
कसन कसौटी रूप कंचन भलो वनो ।
भनत अस्कंद मंज कंज कर देख तेरे,
अलिमकरंद चाहि वा मन यही ठनो ॥
लगन लगी है तुव लगन लगीहै खरी,
मगन मनोज तैसो विरह विलोकनो ।
सघन मयूरचद चाहत चकोर जैसे,
सदृश दिखात नेम वढ़त घनो घनो॥८८३॥

दोहा ।

सुमन जुराफासे भये, राधा माधो राध ।
प्रेमनेम दोहुन वढ्यो, मिलिवेकी हिय साध८८४॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

प्रथम विलोकतही दृगन लगाई लाग,
श्रवण डराई डीठ वाँसुरी वजैया पै ।

मतगुण गावत न और मत भावतहै,
विरह भभूक हूक उठत जुन्हैयापै ॥
भनत अस्कंद अंग वढ़त तरंग काम,
सरस उमंग हिये धीरज धरैयापै ।
झटकन आवै अलि खटकर ह्वैहै मन,
अटक रही है छवि लटक कन्हैयापै॥८८९॥

दोहा ।

कहा वान मेरी सखी, येरी परी विचार ।
जित देखत तित दृगनहो, मूरति मृदुल मुरार ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

ऐसी बरजोरी कहूँ होरीमें सुनी है वीर,
मेलिकै अबीर मूठी ऊपर उड़ाइगो ।
रोरी मलि मृदुल कपोल गोल गालनमें,
लोने गोल लोचनसों सैनन बताइगो ॥
भनत अस्कंद छैल छलिया छबीलो वह,
मुरली बजाइ कै सनेह सरसाइगो ।

छोड़ि पिचकारी घोरि केसर अबीर मोपै,
नंदको किशोर चोर चितलै चुराइगो॥८८७॥

दोहा।

कछु दैगयो न लैगयो, चित चुराइ चितचोर।
अरे निरदयी निरदयी, कैसो कठिन कठोर ८८८

पुनर्यथा–दोहा।

ज्यों ज्यों त्रिविध समीर चल,तनु परशतहै आइ।
त्यों त्यों लगन सनेहकी,दूनी ही दरशाइ॥८८९॥

मान लक्षण–दोहा।

जो त्रिय पियके दोप ते, हियमें ठानै मान ।
त्रिविध भाँति सो जानिये, लघु मध्यम गुरु भान॥

लघुमान लक्षण–दोहा।

रोष करै त्रिय पीयसो, परत्रिय देखत देप ।
सो लघुमान बखानही, कविजन चतुर विशेप ॥

लघुमान उदाहरण–सवैया।

दधि बेचन आइ गुवालिनसों दृग जोरत देख

विषाद बढ्यो। पलकापर पौढ़ रही रिसके चितमे कछु नेक न मान चढ्यो॥अस्कंद भनै भरि अंक लियो कहियेतो सयान कहाँते पढ्यो। मुखसारी हरीते उधारयो जबै, मनो धानके खेतते चंद कढ्यो॥ ८९२॥

दोहा।

कछुक पियासँग रिस करी, परी पलँग पर जाइ।
अंक भरत खोल्यो वदन, देखत इंदु लजाइ॥

मध्यम मान लक्षण–दोहा।

जो पियके मुखते सुनै, और त्रियाको नाम।
होत मान मध्यम छुटै, सौह करे अभिराम८९४॥

मध्यम मानका उदाहरण–कवित्त।

वूझत बतायो हौंतौ सहज सुभावहीते,
प्रति प्रति नाम लै नक्षत्रन गनायोहै।
तापर इतेक रिस ठानि रसखान प्यारी,
कौन अपराध जानि मान हिय छायोहै॥

भनत अस्कंद सौह करन कहाँलौं कहौं,
तुव उर संभ छोड़ि कौन मन भायोहै ।
कर परशाइ तापै दुविध मिटाइलीजै,
वचन विचित्र सुनो वदन हँसायोहै ॥ ८९५ ॥

दोहा ।

सौ सौ सौहन के करे, ह्याँलग आई वाम ।
भूल न लीजौ श्याम अब, पर तिरियाको नाम ८९६

गुरुमान लक्षण–दोहा ।

पिय रत औरी नारि लखि, उपजत है गुरुमान ।
छूटत पाँइनके परे, वरणत बद्धि निधान ॥८९७॥

गुरुमानका उदाहरण–कवित्त ।

विनय हमारी मानिलीजै तौन लीजै दोप,
वनत न वात करै ऐसी मत टेकहूँ ।
तुव मुख चंदको चकोर व्रजचंद आली,
अधर सुधारस तृपारिन सु दे कहूँ ॥
भनत अस्कंद रहै मेरी वान एरी वीर,

भूषण शरीर साजि येतो यश ले कहूँ ।
मानरी कहाँ लौं कहौ मानरी सुएक याम,
रजनी व्यतीत नीरजनैनी न नेकहूँ ॥८९८॥

दोहा।

चल नाहीं नाहीं न कर, न कर अली यह टेक ।
सौत न वाहीं चल अबै, गलवाहीं लै नेक ॥८९९॥

पुनर्यथा--कवित्त।

तोहि बुलवायो मोहिं हेत सों पठायो कह्यो,
नेहको घटायो सो तो नेकहू न नीको है ।
चल अब नीको है सुकान्ह वश कीको तुव,
शशि मुख नीको वह पियासो अमीको है ॥
भनत अस्कंद सो मजा न कछु फीको यह,
रिसान कह नीको तू मान डर कीको है ।
मान कर नीको अब न मान कर नीकोरी,
सुमान कर नीको व मान कर नीको है ९००

दोहा।

मान न कर अब हे अली, मान सु कर यह बात।
मान सु कर नीको अधिक, बढ़त मान वह गात॥

पुनर्यथा–कवित्त।

सघन लतान कुंज रहस मचायो कान्ह,
तोहिं बुलवायो आई मैं चल समाज तें।
तूतो अतिचतुर सुजान रसरीति जानै,
कर ना विलम्ब अंग भूषण सुसाज तें॥
भनत अस्कंद दियो उत्तर न ताहि कछू,
बोली अनखाइ कहा करत सुआज तें।
कौन मति ऐसी बात कहत अनैसी बाल,
कबहूँ न रूठी नई रूठी ब्रजराज तें॥१०२॥

दोहा।

बनै न बात प्रवीणबल, मनमें आनँद आन।

कहा देउँगी जाइकै, उत्तर उतै सुजान ॥ १०३ ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

चोप चल्यो रसके वशमें, चसक्यो नहिं काहु सनेह लगाये । का दियो चंद चकोरनको, जो सुधा लियो ताहि अँगार चुगाये ॥ त्यों अस्कंद मयूरनको घन, का कियो बार पुकार मचाये । हे अलि बात कहौ किहिभाँति वृथा अलि गुंज गुलाबके पाये ॥ १०४ ॥

दोहा ।

जे सनेह चाहत घनो, तिनहिं न व्यापत पीर ।
उदधि माँझ मुकतान हित, पैठिजात मतिधीर ॥

पुनर्यथा–सवैया ।

आई पठाई लिवाइबेको सब, जानती रीति कहा कहेमें है । देखेविना यो मनोहर रूप, टरै पल साल सुकैसे बितै है ॥ त्यों अस्कंद कहै

सुन वैन, कहा उर सौत प्रतीति न लैहै । सैहै न मान गुमान भटू, इम जाव मनोज व्यथा न बढ़ैहै ॥ ९०६ ॥

दोहा ।

सौतनकी परतीत हिय, बढ़ीलालके ऐन।
कहा भटू तुमसों परी, जाव कहे इमि वैन ९०७॥

दोहा।

जो सौतिन सँग हित कऱ्यो, पिय न कीजिये मान।
जानतहै रसरीतिको, सब विधि चतुर सुजान ॥
सेज सवाँरि शृंगार सजि, हिय मिलाप सुखमान ।
जान आन पति स्यान त्रिय, दुख विछोह पछितान।
सो प्रवास कहिये पिया, जो विदेशमें होइ ।
ताते दुख नारीनको, अतिशय जानो सोइ ९१० ॥
सो प्रवास द्वै भाँतिको, विजन कहत बनाइ ।
इक भविष्य इक भूतहै, रसग्रंथनमें पाइ ॥ ९११ ॥

भविष्यप्रवासकाउदाहरण-सवैया।

अब कौन कहौ तुम्हैं कैसी भई, मति कौन लई कहा बैन कहौ। ऋतु माधवी फैलरही चहुँ ओर, करै अलि गुंज विदेश चहौ॥ यह कोयल कूक सम्हारिहै को, अस्कंद भनै मिलिमोद लहौ। विन कारज काज विचारिबेकी, यह टेक कुटेक तजौ न गहौ॥ ९१२॥

दोहा।

चरचा सुनत विदेशकी, बाल रही दुख पाइ।
ज्यों पंकज रवि अंतमें, सहज जाइ कुम्हिलाइ॥

भूतप्रवासकाउदाहरण-कवित्त।

वनविन परश नवीन वन पत्र शाखा,
मृदुल मनोहर वितान न लतानभो॥
कल कल पिकन मलिंदन मचायो जोर,
शोरकरि राख्यो तहाँ बैठक प्रमानभो।

भनत अस्कंद वैन चातक विदेश छाये,
उनबिन विरह महीपति सुजानभो ॥
सेवकन मानभो सरोज गुणवानभो,
सुगुरुजन भानभो निशापति दिवानभो ॥

दोहा।

जित देखो मधुऋतु फबी, चहूँ ओर दरशात।
पिक पापी तापर करत, बोलि बोलि उतपात ॥

पुनर्यथा-सवैया।

या ऋतुराज समाजको साज, सखी विरहानल आन पठायो। त्यों असकंद भनै अलि गुंजसु, कोइल कोकिल शोर मचायो ॥ औधि गई चलि आवनकी, मनमानै न नेक कछू समझायो ॥ नाथ कहाइकै गोपिनके अब, कूबरी संग सनेह लगायो ॥ ९१६॥

दोहा।

अरेनिरदयी निरदयी, ऐसी लगन लगाइ ।

कुबजाके रस वश भये, फिर न लई सुधि आइ।
विरह अवस्था दश कही, जो विवोग शृंगार
पटसंचारिनमें कही, अब वरणतहौ चार॥९१८॥
कहि अभिलाष सुगुण कथन, अरु उद्वेग प्रलाप।
जेराखे पंडित कविन, रसग्रंथनमे थाप ॥९१९॥

अभिलाष लक्षण–दोहा ।

चाह करै अति मिलनकी, जो त्रिय पिय हिय ऐन।
अभिलाषा तासों कहत, कछु ललचौंहे वैन ॥

अभिलाषका उदाहरण–कवित्त।

क्षण क्षण आवत विचार मन ऐसो सखि,
छोड़ि कुलकान और काज चित दीजै ना।
वेई केलि कलन मनोभव तरंगनमें,
अधर सुधाको छोड़ि और रस पीजै ना॥
भनत अस्कंद देखि हँसन वतान बाँकी,
मृदु मुसक्यान नाम लाजको सुलीजै ना।

मोहनकी मूरति विशाल मनमोहनीको,
हियसों लगाइ जुदो एक पल कीजै ना॥९२१॥

दोहा ।

वदन इंदु घनश्यामको, मो मन भयो चकोर ।
इकटकही देखत रहौ, यों चित चाहत मोर ॥

गुण कथन लक्षण–दोहा ।

गुणै बखान जो विरहमय, करै सुपियकी चाह ।
जतन सहित गुणकथनसो, वरणतहै कविनाह ॥

गुणकथनका उदाहरण–कवित्त ।

खेलन चली ज्यों फाग सखिन समाज लैके,
ताही समै श्याम धूमधाम करि आगयो ।
भनत अस्कंद नैन सैनन घलाघलमें,
रूपकी झलाझलमें मन धौ कहागयो ॥
करि सरवोर रंग केसर झकोरनसों,
अंग अंग मदन उमंगहि बढ़ागयो ।

नजर बचाकर छिपाकर गुलाल लाल,
अंकभरि कुचन कपोलन लगा गयो॥१२४॥

दोहा।

वा बनवारी कुंजमें, गजब गुवालिन आइ।
हँसि हेरन मुसक्यानमें,मो मन लियो चुराइ१२५

उद्वेग लक्षण-दोहा।

चितन लगत कहुँ विरहवश,मन अतिही अकुलाइ।
सो उद्वेग बखानहीं,कविजन ताहि बनाइ॥१२६॥

उद्वेगका उदाहरण-कवित्त।

इत उत जाइ धाइ चढ़त अटाननपै,
मन पछताइ नहीं धीरज धरतहै।
कछु न सुहाइ चित अति अकुलाइ ताको,
सखिन सहेलिनसों बात न करतहै॥
भनत अस्कंद जैसे लगत वसंत हीमें,
बिन मकरंद अलि दौरत फिरतहै।

कल क्षण परत न एक पल एक ठाम,
श्यामविन राधा भौंरि भाँवर भरतहै॥१२७॥

दोहा ।

खान पान भूषण वसन, दिवस न रात सुहाइ ।
जब सनेह लगजातहै,निरमोहीसों जाइ ॥१२८॥

प्रलाप लक्षण–दोहा ।

कहत निअर्थिक वैन जहँ, विरहीजन दुखपाइ ।
तासों कहत प्रलापहै, जे प्रवीन कविराइ १२९ ॥

प्रलापका उदाहरण–कवित्त ।

तारन बतावै इंद्रवधुन समाज फैली,
चंदहि बतावै रवि सुमत तरंगसों ।
रैनहि बतावै दिन दिनहि बतावै रात,
पाननको पात कहै विरह उचगसों ॥
भनत अस्कंद श्याम नाम तुव टेर टेर,
सुतरु तमालनके मोहत कुरंगसों ।
काम कर व्याकुल न धीरज धरत बाल,

देख घन उठत सुभेटन उमंगसों ॥ १३० ॥

दोहा ।

जब जब मदन उमंग उठि, विरहरूप दरशाइ ।
पिय पिय करि त्रिय ननद हिय,लपटजातअकुलाइ

नवरस निरूप्यते ।

अथ हासरस–दोहा ।

अस्थायीको हास जो, सो रस हास बखान ।
कूदब कहब कुरूपता, तहँ विभाव मत जान ॥
हँसिबोई अनुभाव कहि, उच्च मंद मुसक्यान ।
तहँ संचारिनको हरष, और चपलता आन ॥
रंग श्वेतहै हासरस, नारद देव बखान ।
ताको वरणौ विधि सहित,सुनि हरपै बुधवान१३४

हासका उदाहरण–कवित्त ।

चरित विवाहमें गिरीश गिरिजाके भयो,

नेगी नेग माँगत दुहूँदिश चुकाइकै।
देतजात अलख निरंजन कहाँलौ कहौं,
जापै द्विज और कछू माँग्यो हिय चाइकै॥
भनत अस्कंद शंभु नजर बचाइ एक,
फुंकरत साँप दियो करमे गहाइकै।
देखतही उझक झपाक तजि ठाढ़ो भयो,
विहस उठीहै सभा अति सुखपाइकै ९३५॥

दोहा।

बाल बजावत बाँसुरी, लख्यो त्रिभगी रूप।
विहँसि कह्यो यह कूबरी, को सतसंग अनूप॥

पुनर्यथा—सवैया।

एक समै हरि शंभुके पास, चले हियमें अति
मोद बढ़ाइकै। ते चले आवत ते उतते, अस्कंद
भनै उनके गुण गाइकै॥ भेंटतही खगके पति
देख, भजे तजि अंग भुजग डराइकै। कौतुकलौं
सुर औगण भूत,हँसे जितके तितही मुसक्याइकै॥

दोहा ।

हम जानी नँदलालहौ, पै दलालके पूत ।
विहँसि कह्यो ब्रजबालने, फिरत ठगावत सूत ॥

करुणारस लक्षण—दोहा ।

अस्थायीको शोक मिलि, करुणारस पहिचान ।
आलंबनको निरस रस, विरह उदीपन जान ॥
अनुभावहिको महिपतन, अरुरोदन जो भाव ।
संचारी निर्वेद तहँ, वरणे कहि कविराव ॥
रंग कबूतरके लसत, वरुण देवता तास ।
करुणा रस इहिविधि कहै,जे कवि सुमति हुलास॥

करुणारसका उदाहरण—कवित्त ।

मारयो इंद्रजीतको अनंत बलवंत वीर,
भनत अस्कंद जाकी शूरनमें थाप है ।
जाइ भुज निकट गिरी है सो सुलोचनाके,

रोदन सहित परी महिमें सुकॉप है ॥
बंदि सब छूटी दुखद्वंद्वमें भई है भूर,
भॉवर भरत ताके कहिके प्रताप है ।
शिरधुनि कहत सुहाय विधि कीन्ह्यो कहा,
निपट विहाल करै विकल विलाप है॥९३९॥

दोहा।

लखत जटायूको मरण, रघुपति करुणा कीन ॥
दीनबंधु दुखके दरन,परमधाम तिहि दीन९४०॥

रौद्ररस लक्षण–दोहा।

क्रोधभाव थायी लहै, वहै रौद्ररस माहि ।
आलम्बन है अरुजुरन,उद्दीपन कहि ताहि॥९४१॥
कुटिलभौंह दृग अरुणई, अधर दाबि अरुभाव।
गर्व और कहि चपलता, तहँ संचारी भाव ९४२॥
रक्तवरण रस रौद्रहै, रुद्र देवता तास ।

ताको लक्षण लक्षकर, वरणौं सुमतिप्रकाश॥

रौद्ररसका उदाहरण–कवित्त ।

वढ़त विवाद भयो अंगद सुकोपमान,
वचन दशाननसों कहत रिसाइकै ।
येरे मतिमंद मेरे देख भुजदंड तोहिं,
खंड खंड डारौ करि दाँतन चबाइकै ॥
भनत अस्कंद यो त्रिकूटाचल टारिडारौ,
मारिडारौ निश्चर सँहारिडारौ धाइकै ।
फारिडारौ धरणी रसातल पताल मध्य,
तुरत पठावँ दुष्ट लंकहि दबाइकै ॥ १४४ ॥

दोहा ।

कटकटाइ कर पटकि महि, बोल्यो वचन कराल ।
जानतहौ दशशीश तुव, निश्चय चाह्यो काल१४५

वीररस. लक्षण–दोहा ।

थायीको उत्साह जहँ, वहै वीररस जान ॥

सो कहि चार प्रकारसों, युद्ध वीर इक मान१४६॥
दया वीर कहि पुनि कह्यो, दान वीर पहिचान ।
धर्मवीर नीको अमित, भापत बुद्धिनिधान १४७॥
आलंबन रिपु कौतु रण, युद्धवीर महँ जान ।
सैना शोर सुनै बढ़ै, उद्दीपन अनुमान ॥ १४८ ॥
दृग लाली अरु फरक शो, अंग तहाँ अनुभाव ।
संचारी तहँ उग्रता, गर्व असूया भाव ॥ १४९ ॥
इंद्रदेव कुंदन वरण, युद्ध वीरको ऐन ।
ताको कहत उदाहरण,सुनत होइ मति चैन१५०॥

युद्धवीरका उदाहरण—कवित्त ।

आयो कुंभकरण विसैन रणवीर गाढो,
युद्ध करिवेकी क्रुद्धकरि विकरालहै ।
धरि धरि खान लाग्यो कपिन समूह यूह,
कूह करि भागे भालु निपट विहालहै ॥
भनत अस्कंद रामचंद्र कर चाप लीन्ह्यो,

दौरत दबाइदेत दिग्गज सुकालह्वै ।
सपट झपेट ताकी रुकत न नेक तऊ,
गिरत न भूमि शर निकरेकपालह्वै ॥ ९८१ ॥

दोहा ।

इत रिसरातो पवनसुत, उत दशशीश प्रचंड ।
भिरत दुहुँनके हालगो, अतल वितल महिमंड ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

प्रवल प्रचड धायो छायो शोर मंडलमें,
आयो मेघनाद नाद करत झडाकसे ।
हाहाकार माची सब भागे सुर देख वाको,
इंद्र करि कोप शर छाडत सडाकसे ॥
भनत अस्कंद लखि उपमा पुराणनकी,
युद्ध भयो प्रवल सुभटन चड़ाकस ।
भागत लखत दूर लागत गयंद शूर,

फूटैं मूड़खलनके तड़के तड़ाकसे ॥ १९३ ॥

दोहा।

कोटिन भटके बीचमें, अनिरुध एक प्रचंड।
लै कपाट मारत भयो, दुष्ट करे सब खंड ॥

दयावीर लक्षण–दोहा।

दयावीर चित देखि जो, है विभाव दुख दीन।
हावभाव मृदु बोलबो, अरु करिबो दुख छीन ॥
तहँ संचारीभाव धृत, और चपलता जान।
दयावीर वर्णन करैं, इहिविधि बुद्धि निधान ॥

दयावीरका उदाहरण–कवित्त।

मच्छह्वै आयो कहूँ कच्छ ह्वै आयो कहूँ,
धार्योहै वराह रूप सुखद सुहायो है।
बावन भयोहै अरि रावण भयोहै कहूँ,
बोध नरसिंह रूप विकट बनायो है ॥
ह्वैकैअनुराग आय क्षत्रिन जतायो कहूँ,

भनत अस्कंद कृष्णचंद यशगायोहै ।
जब जब दीननपै संकट पर्योहै आइ,
तब तब दीनबंधु तुरत बचायोहै॥९९७॥

दोहा ।

दीन सुदामा देखिकै, दया करी अभिराम ।
कृपासिधु करिकै कृपा, दीन्हे कंचनधाम ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

करुणा निधानके समान कौन दूसरोहै,
गीध गणिकासे धर्मधामको पठायेहै ।
भारत प्रचंड दल दोहुनके बीच परे,
भारहीके अंड घंट तूरिकै बचाये है ॥
भनत अस्कंद करी द्रौपदी पुकार जबै,
चीरको वढ़ाय द्वारका से आप धाये है ।
दीननके कारज सुधारत हमेश आये,
या हितसों दीनबंधु विरद कहायेहै ॥ ९९९ ॥

दोहा ।

अरि विचार कीन्ह्यो नहीं, ऐसे दीनदयाल ।
दीन विभीषण जानिकै, तुरत कियो प्रतिपाल ॥

दानवीर लक्षण–दोहा ।

दानवीरको जानिये, याचक ज्ञान विभाव ।
धनको कछू न लेखिबो, सोईहै अनुभाव॥९६१॥
संचारिनके भाव जहँ, बीडा हरष मिलाइ ।
दानवीर वर्णन करै, इहिविधि कवि सुख पाइ ॥

दानवीरका उदाहरण–कवित्त ।

दीन्ह्यों गढ़लंकऔ निशंक करिदीन्ह्यों वंक,
रावण को नेकही कृपाकरि निहारयोहै ।
दीन्ह्यों जलबुंद गंग भागीरथ संग
चरित सुनेते यमराज मन हार
भनत अस्कंद दीन्ह्यो
भस्मासुर

येरे मन ध्यान आन करुणानिधान जान,
शंकर समान कौन दानदेनवारयोहै ॥९६३॥

दोहा ।

दीन्ह्यो शुंभनिशुंभको, आप दान वरदान ।
चक्रवती महिमें कियो, कोहै शंभु समान॥९६४॥

धर्मवीर लक्षण-दोहा ।

धर्मवीरके जानिये, वेद पुराण विभाव ।
अरु ताहीकी विधि चलब, स्मृति लौ अनुभाव ॥
संचारीके भाव जो, तिनमें को धृतभाव ।
रसग्रंथनमें कहतहै, जे प्रवीण कविराव॥ ९६५ ॥

धर्मवीरका उदाहरण-कवित्त ।

आये हरिद्वारपै स्वरूप धरि बावनको,
मोको यह जानिजात छलयो विशेषई ।
दान मत दीजै यह मानिमत्त लीजै मोर,

और इत हेरौ तुम्है कुमति कहा ठई ॥
शुक्रने सिखायो तौन मनमे न लायो कछू,
भनत अस्कंद झारी करसो उठालई ।
पैज प्रण पाल्यो नेक उरसे न हाल्यो बलि,
धरम निबाह्यो पीठ पगन नपादई ॥ १६६ ॥

दोहा ।

रामचंद्र सँग वन गये, लक्ष्मण धर्मनिबाहि ।
को ऐसो प्रण पालिहै, भरतरूप अवगाहि१६७॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

राम वन फिरत विलोकत प्रणाम कीन्ह्यों,
देखन गईती तहाँ करि भ्रम भारी है ।
भनत अस्कंद कहा कौतुक विलोकि आई,
बोली करजोरि वही सुमति तुम्हारी है ॥
ध्यान धर देख जानि कीन्ह्योहै सियाको रूप,

दीन्ह्यो तजि तुरत सतीको त्रिपुरारी है।
धरम धुरंधर सो धरम निबाहिबेको,
शंकर समान ऐसो कौन प्रणधारी है॥९६८॥

दोहा ।

यदपि प्रथम प्रण पालिकै, ऐसो धरम निवाह।
कीन्ह्यो है त्रिपुरारिने,गिरिजा संग बिवाह ९६९॥

भयानक रस लक्षण–दोहा ।

थायीको भय जासुमें, सुरस भयानक जान।
कछू भयंकर देखिबो, सो विभाव तहँ मान॥
तहँ जो तनुको काँपबो, सोई है अनुभाव।
मोहादिक तहँ कहतहैं, कवि संचारीभाव॥९७०॥
ताको कहिये देवता, कालसुक्यैला रंग।
रसग्रंथनमे देखिकै, वरणत सुमति उमंग॥९७१॥

भयानकका उदाहरण–छप्पय ।

फटत शेषशिर चटक पीठ कच्छप अति

गाढ़िय । डग डग दिग्गज डुलत शंक त्रैलोकहि बाढ़िय ॥ समर मध्य करि कोप कालमूरति वह धारिय।एक डाढ़ कर भूमि एक नभ बिच्च पसारिय॥इमि भनत नृपति अस्कंद गिरि, मेरु हलत नहिं को डरिव । तहँ शुंभ निशुंभहि आदिदै, शत्रु भक्ष कालिय करिव ॥ ९७२ ॥

दोहा।

पुच्छ शीशधर क्रुद्ध करि, गरज्यो सिंह अपार ।
सुनत भयानक शब्द वह, निश्चर भये सँहार ॥

पुनर्यथा--कवित्त ।

इतउत असुर गिरेहै घूमि घाइलसे,
विकल सुत्रासमान सुनत अरारचोहै ।
उठत सुएकनको वूझत न एक एक,
थर थर कंपत ससात मन हारचोहै ॥
भनत अस्कंद और कौतुक कहाली कहौ,

हरिणाकुश महीको उदर विदार्योहै ।
धरणि हलीहै खम्भ चटकफट्योहै जब,
विकट भयंकर नृसिंहरूप धार्योहै ॥९७४॥

दोहा ।

मेघनादको शिर हत्यो, अट्टहाटकरिहास ।
भालु कपिनके उरविषे, व्यापिगई तहँ त्रास ॥

वीभत्सरस लक्षण–दोहा ।

सो विभत्सरस जानिये, थायी जासु गिलान ।
पीव रुधिर दुरगंध अति, तेविभाव तहँ जान ॥
कंपादिक रोमांच तहँ, नाक मूँदि अनुभाव ।
तहँ संचारी मूरछा, मोह असूया भाव ॥ ९७७ ॥
वाको सुर सब कहतहै, महाकाल रँग नील ।
ताको वरणन करतहौ,समझौ सुजन सुशील९७८

वीभत्सरसकाउदाहरण–कवित्त ।

आयो छल करन अघासुर पठायो कंस,

बैठ्यो मग वदन पसारि अति भारीहै ।
भनत अस्कंद तहाँ ग्वालनकी भीर मग,
पैठेसब किलकत हाँक दैदै तारीहै ॥
मूत्र मल थूक ताकी अतिदुरगंध महा,
पित्त कफ लार की न नेकहू विचारीहै ।
सखनसुकष्ट जानि उरमें सुकोप ठानि ॥
फारिडारयोतुरत चड़ाक गिरिधारीहै ९७९॥

दोहा ।

दुरगंधादिकको कछू, कीन्ह्यो नहीं विचार ।
सुरसाके मुखमें धस्यो, तुरतहि पवनकुमार ॥

अद्भुतरस लक्षण–दोहा ।

अचरज थायीभावको, सो अद्भुतरस जान ।
असंभवतको देखिवो, सो विभाव तहँ मान ॥
कँपनो वचन विचित्र अरु, रोम उठव अनुभाव ।
शंका मोह वितर्कते, कहि संचारीभाव ॥ ९८२ ॥

पीत वरणहै जासुको, देव विरंचि वखान।
ताको कहत उदाहरण,सो अद्भुतरस जान ९८३॥

अद्भुतरसका उदाहरण—कवित्त।

देख्यो दधिखात ग्वालवालनके संग जबै,
करि भ्रमभारी ताहि हितसों हितैरह्यो।
बछरा चुराइ जाइ बंदकरे कंदरमें,
भनत अस्कंद कृष्ण गुणको गितै रह्यो॥
आयो इत देखिवेको करि अनुराग भयो,
अद्भुत चरित्र ताको मनधौं कितै रह्यो।
रचिकै त्रिभंडली सुकुंडली लिये करमे,
देखि ब्रह्ममंडली कमंडली चितै रह्यो॥९८४॥

दोहा।

अद्भुत भयो चरित्र जब, कियो शम्भुने गान।
भये विष्णु तहँ नीर सुन, सो गंगाजल जान९८५

पुनर्यथा-कवित्त।

कोप करि अमित प्रचंड कर बुंद एक,
तुरत अगस्त्य शोपलीन्ह्यों सिंधुपानी है।
शंकर पिनाक जबै खंडन कियोहै राम,
नृपति समाजनकी सुमति भुलानी है ॥
भनत अस्कंद कृष्णचंदने फणिंद नाथ्यो,
वामन बल्योहै ताहि सब जग जानी है ।
शम्भुके जटान बीच गंगाजी भुलानी रही,
रावणको फेंकदीन्ह्यो जठरि पुरानी है॥९८६॥

दोहा।

लाल भाल लीलो उचटि, चटि समीरके लाल ।
रामचंद्रको लैगयो, अहिरावण पाताल ॥ ९८७ ॥

शांतरस लक्षण-दोहा।

थायीको निर्वेद कहि, सोइ शांतरस जान ।

तहँ विभाव गुरु तपोवन, साध संग उर आन ॥
रोम उठव अश्रूपरत, तहँ अनुभाव विचार।
संचारिनके धृत हरप, वरणत बुद्धि अगार ॥
नारायण है देवता, तासु रंगहै श्वेत ।
सोइ शांतरस जानिये, वरणत प्रेम समेत॥९९०॥

शांतरसका उदाहरण सवैया ।

वही भाष्यो विरंचि चतुर्मुखहै, अरु वेद पुराणन बाच्यो वही । वही पालत पोपत जीवनको जग झूठो सबै अरु साँचो वही । वही संतशिरोमणि एक लख्यो,अस्कंद निरूपकै जाच्यो वही। वही पूरण ब्रह्म निरंजनको, जित देखो उतै रँगराँच्यो वही ॥ ९९१ ॥

दोहा ।

वही भक्तरस जानिये, वही जगत कर्तार ।
वही शक्त चर अचरपै, वही शक्त आधार ९९२

पुनर्यथा–सवैया ।

शत्रुनके मुख भंजिवेको, जन आपनेके दुख-द्वंद्व दरैया । संतति संपति भूरि करै, गुणगान करै भवसिंधु तरैया ॥ त्यों अस्कंद भनै प्रणपालक, या कलिको मल पाप हरैया । या जगमें हम जाँचलियो, रघुनंदन एक अनंद करैया९९३

दोहा ।

एक नजरही के लखे, जो करिदेत निहाल ।
सो प्रभु मन तेरो अरे, शंकर दीनदयाल॥९९४॥

पुनर्यथा–सवैया ।

चार पदारथके फलदायक, है सब लायक दुःख दरैया । पातक छार अनेक करै, भ्रमजाल हरै यमजाल टरैया ॥ आतुर शत्रुको अत्र हनै, अस्कंद भनै भुवभार धरैया । या जगमें जन आपनेको, रघुनंदन येक अनंद करैया ९९५ ॥

दोहा ।

तनु पुलकित, हरषित सुमन, हिये प्रेम सरसाइ ।
धन्य धन्य नर धन्य वे, राम कहत सुख पाइ ॥

कवित्त ।

जो मैने किये है छल पातक अनेक तो मैं,
तेरही भरोसे एक नाम अवगाहेके ।
ज्ञानहू न जानौं कछू ध्यानहू न जानौं नेक
कीन्ह्यों जौन काज तौन सुमति सराहेके ॥
भनत अस्कंद गुण गावत सुरेश तेरे,
सुनियो महेश हो दिवैया हित चाहेके ।
आपने करे जो कर्म आपही भुगतौ गा तो,
हो हूँ करतार करतार तुम काहेके ॥ ९९७॥

दोहा ।

याचेंते तुम देत हो, बिनयाचें नहिं देत ।

हो वरजोरी शंभु नित, नाम तुम्हारो लेत९९८॥

पुनर्यथा-कवित्त।

रंजन मुनिन्द्र और खंडन सुरारि वृंद,
भरै सुख भूरि दुख दारिद दरनहै।
तेजधर सूर अघ तिमिर सुनाश करै,
पूरण प्रकाश करै शोभाके धरनहै॥
भनत अस्कंद ध्यान धरत महेश शेप,
पावत न वेद भेद पंकज वरनहै।
छोड़ि छल छंद मोद मान कर वंद ऐसे,
आनँदके कंद नँदनंदन चरनहै॥ ९९९॥

दोहा।

सुख संपतिको देतहैं, बड़े गरीबनिवाज।
गोकुल चंद गुविंद मन, नंदलालब्रजराज १०००

पुनर्यथा-सवैया।

पूरो करै, अरुदेत करै करिदेत

निहाल । हरै कलिकष्ट अरिष्ट सबै, औ बढ़ावत कीरति बुद्धि विशाल ॥ भनै अस्कंद अनंद करै गुण औगुणहै जे करै नहि ख्याल । सदा जनको प्रतिपाल करै सो कृपा करै दीनपै दीनदयाल ॥

दोहा ।

जासु तेज दिनकर लसत, विदित अवनि आकाश
प्रगट चराचरमें लख्यो, पानी पवन प्रकाश ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

निशिदिन आठो याम हरष हियेमें करि,
पागो रहे कुमति कुसंगत सुभाव रे ।
मानत न नेक तेरी कौन यह टेक तू तो,
बूझत अबूझ नहीं तनक बचाव रे ॥
कुटिल कुपाट कर्म कुटिल करैहै जौन,
भनत अस्कंद तिन्है अबतौ भुलाव रे ।
येरे मन जगत प्रभाकर कृपानिधान,
गौरीपति सुखद गुणानुवाद गाव रे ॥१००३॥

दोहा।

विधि साँचो राँचो वही, बाँचो वेद पुरान।
तिह याँचौ अस्कंदगिरि, शंकर कृपानिधान॥

पुनर्यथा–कवित्त।

मंगल प्रदायिनी अमंगल नशायिनीहै,
शम्भु ठकुरायिनी हमेशहू सुरक्ष है।
शेप गुणगावत सुरेश मुनि ध्यावत सु,
दास प्रणपाल करै कारज ततक्ष है॥
भनत अस्कंद दुख द्वंद्व सबै दूर करै,
भरत अनंद सो अपक्षनकी पक्ष है।
गच्छ करि आतुर सुभक्ष करि शत्रुनको,
जक्तमें शिवाकी शक्ति राजत प्रत्यक्षहै१००५

दोहा।

ऋद्धि सिद्धि पावै घनी, होइ सुपूरण काम।
सिंह वाहिनी दाहिनी, जोकोइ आठो याम१००६

पुनर्यथा–कवित्त ।

आश करि याचत सुराचत हमेश भक्त,
सकल सुपास कर अमित विलास कर ।
ऋद्धि सिद्धि सहित सु अष्ट नवनिद्धि और,
वचन प्रसिद्ध स्वच्छ बुद्धिको प्रकाश कर ॥
भनत अस्कंद जक्त अंब तू कृपा करकै,
अष्टभुज मूरति सु उरमे निवास कर ।
पातक निराश कर शत्रुनको नाशकर,
दुष्ट उपहास कर विघन विनाशकर ॥१००७॥

दोहा ।

जगदंबे अंबे सुनौ, विनै करै कर जोर ।
देहु सुक्ख सुत संपदा, तेज ज्ञान गुण जोर१००८॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

हरिजात शोक दुखदारिद विदरिजात,
टरिजात गज व ग्रुनाह डरि डरि जात ।

दोहा ।

विधि सॉचो रॉचो वही, बॉचो वेद पुरान ।
तिह यॉचौ अस्कंदगिरि, शंकर कृपानिधान ॥

पुनर्यथा–कवित्त ।

मंगल प्रदायिनी अमंगल नशायिनीहै,
शम्भु ठकुरायिनी हमेशहू सुरक्ष है ।
शेप गुणगावत सुरेश मुनि ध्यावत सु,
दास प्रणपाल करै कारज ततक्ष है ॥
भनत अस्कंद दुख द्वंद्व सबै दूर करै,
भरत अनंद सो अपक्षनकी पक्ष है ।
गच्छ करि आतुर सुभक्ष करि शत्रुनको,
जक्तमे शिवाकी शक्ति राजत प्रत्यक्षहै१००५

दोहा ।

ऋद्धि सिद्धि पावै घनी, होइ सुपूरण काम ।
सिंह वाहिनी दाहिनी, जोकोइ आठो याम१००६

गोरी ह्वै गिरीशक ह्वै सेवक सुयेज मस्तु।
तेजवान अमित सुरूप सुत बुद्धहोहि,
कुल बलवान धन धान्य समृद्धि रस्तु १०११

दोहा।

जो याचै ताको मिलै, ऐसो यह उपदेश।
भनत कुवॅर अस्कंद गिरि,ऐसे उमा महेश१०१२॥

कवित्त।

हिम्मतबहादुर अतिप्रबल प्रचंडकरे,
शिष्य सहजादगिरि सुयश अपारा है।
कंचनगिरि कुॅवर सुकामतागिरीश करे,
तेज बल बुद्धिवान धरम सुधाराहै॥
तिनकेभयेहै सुत शंकरकृपाते चारु,
गुणन गॅभीर नाम देवी गिरिधाराहै।
तासुत महेशकी कृपाते अस्कंदगिरि,
विरच्यो अनूप रसमोदक हजाराहै॥१०१३॥

दोहा।

दशनौसै अरु पॉचको, संवत भादौमास।
शुक्लपक्ष द्वादश रवौ, पूरण ग्रंथप्रकाश॥१०१४॥
राधा माधवको कियो, यामें रूप शृंगार।
भूल चूक जो होइकछु, लीजौ सुजन सुधार१०१५

इति श्रीशिवसुत षोडश नाम मतापअनुभारतीज्ञ
श्रीमन्महाराजकुमार श्रीमत्कुवर स्कदगिरि विरचिते
रसमोदकाऽभिधेकाव्ये श्रीमहाराजाधिराज राधाकृ-
ष्णविहारे कविजन रसिक हृदयप्रमोददायिने
नवरसभाव मकरण नाम
षष्ठोल्लास ॥ ६ ॥

इति रसमोदक हजारा सम्पूर्ण।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी-बंबई।

विक्रय्यपुस्तकें ।

नाम	कि०रु०आ०
रसिकप्रिया सटीक .	१—४
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध [भिखारीदासकृत] मनहरण छन्दोंमें कठिन (अलंकार) वर्णन	१—४
जगद्विनोद [पद्माकरकृत नायकाभेद]	०—८
रसराज [मतिरामकृत नायकाभेद] .	०—६
दपतिवाक्यविलास—जिसमें सब देशांतर की यात्रा और धधेके सुखको पुरुषने मडन और स्त्रीने खडन कियाहै दोहा कवित्तोंमें (सुभाषित) . .	०—१२
नैषधकाव्य मनहरण छन्दोंमें राजा नल दमयन्तीका सम्पूर्ण उदाहरणों समेत चरित्र	१—०
सुन्दरीतिलक (शृंगाररसके चुहचुहाते हुए कवित्त भारतेन्दु बाबूहरिश्चन्द्र सगृहीत)	०—६
काव्यसंग्रह (प्राचीन रोचक कवित्त सवैया)	०—८